।।   नमः शिवाय।।

सप्तम अध्याय

शिव शक्ति कथा ;शान्ति खण्डद्ध

माता च पार्वती देवी पिता देवो महेश्वरः।
बान्धवाः शिवभक्ताश्च स्वदेशो भुवनत्रयम्।।
मायां तु प्रड्डतिं विद्यान्मायिनं तु महेश्वरम्।
तस्यावयवभूतैस्तु व्याप्तं सर्वमिदं जगत्।।

ज्योतिर्लिंग दर्शन

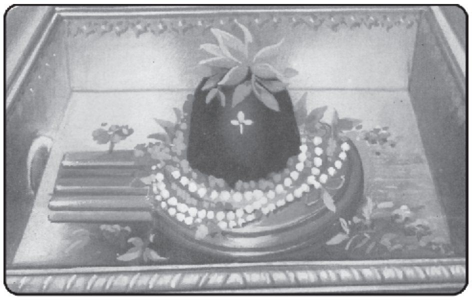

श्रीविश्वेश्वर

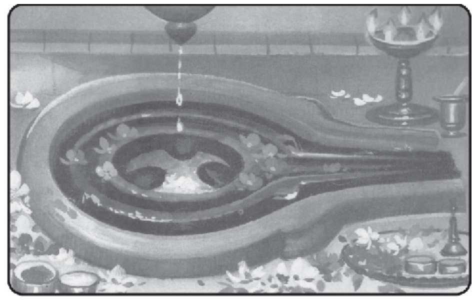

श्रीत्र्यम्बकेश्वर

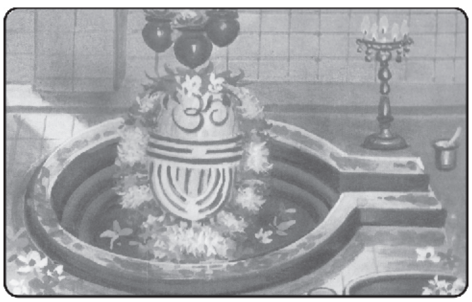

श्रीवैद्यनाथ

श्रीनागेश्वर

श्रीसेतुबन्ध रामेश्वर

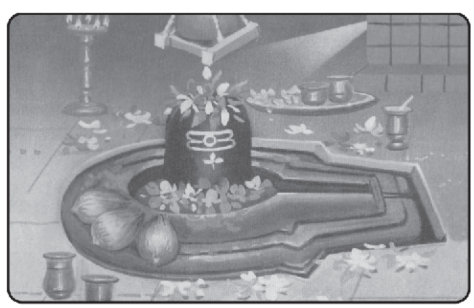

श्रीघुश्मेश्वर

"श्री गणेशाय नमः"

नमः शिवाय नमः शिवायै

शिव शक्ति कथा

सप्तम अध्याय ;शान्ति खण्डद्ध

पूजिअ राम कृष्ण जेहि चरना। महिमा तासु जाइ नहि बरना।।
लिंग थापि विधिवत करि पूजा। कह शिव सम प्रिय मोहि न दूजा।।
शिव द्रोही मम भगत कहाये। भाखिय राम सो न मोहि पाये।।

ध्यान

हिमचन्दनकुन्देन्दुकुमुदाम्भोजसंनिभम्।
ब्रह्म ज्योतिः स्वरूपं च भक्तानुग्रहविग्रहम्।।1।।
विषयाणां विभेदेन बिभ्रन्तं बहुरूपकम्।
जलरूपमग्निरूपमाकाशरूपमीश्वरम्।।2।।
वायुरूपं चन्द्ररूपं सूर्यरूपं महत्प्रभुम्।
आत्मनः स्वपदं दातुं समर्थमवलीलया।।3।।
भक्तजीवनमीशं च भक्तानुग्रहकातरम्।
वेदा न शक्ता यं स्तोतुं किमहं स्तौमि तं प्रभुम्।।4।।
अपरिच्छिन्नमीशानमहो वाङ्मनसोः परम्।
व्याघ्रचर्माम्बरधरं वृषभस्थं दिगम्बरम्।
त्रिशूलपदिृशधरं सस्मितं चन्द्रशेखरम्।।5।।

ब्रह्म ज्योति रूपेण गौरीपतीश्वर,
भव भिन्न रूपेण भगतन सुरक्षक।
कुन्देन्दु शशि तेज आभा वदन धर,
ऐसे शिवा संग महेश्वर का वन्दन।।
विषये विहीने सब रूप स्वामी,
जल अग्नि आकाश भू वायु रूपा।
भानू शशी तेज प्रकाश दाता
ऐसे शिवा संग महेश्वर का वन्दन।।
जो ईश जग का जीवन नियन्ता,
सक्षम सकल लोक संहार रक्षण।
श्रद्धा समर्पण श्रद्धालु सब के,
ऐसे शिवा संग महेश्वर का वन्दन।।
सबसे परे जो सबसे सरल सो,
श्रुति शास्त्र जिनके नही भेद पाते।
जो जग महाकाल सो दीनबन्धु,
ऐसे उमापति महेश्वर का वन्दन।।
शोभित बघम्बर वाहन वृषेश्वर,
गुणगान दर्शन देता सुधारस।
त्रिशूल धारी त्रय ताप हारी,
ऐसे महेश्वर गिरिजा को वन्दन।।

" श्री गणेशाय नमः "

नमः शिवाय नमः शिवायै

शिव शक्ति कथा

सप्तम अध्याय ;शान्ति खण्डद्ध

ऊँ नमः शिवाय

मंगल वन्दना

सहस्रनेत्राय विद्महे, वज्रहस्ताय धीमहि।
तन्नो इन्द्रः प्रचोदयात्।
सरस्वत्यै विद्महे, ब्रह्मपुत्र्यै धीमहि।
तन्नो देवी प्रचोदयात्।
भूर्भुवः स्वः। तत्सवितुवरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि।
धियो यो नः प्रचोदयात्।

विश्वेश्वराय नरकार्णवतारणाय,
कर्णामृताय शशिशेखरधारणाय।
कर्पूरकान्ति धवलाय जटाधराय,
दारिद्रय्दुःखदहनाय नमः शिवाय।।1।।
गौरीप्रियाय रजनीशकलाधराय,
कालान्तकाय भुजगाधिपकंकणाय।
गंगाधराय गजराजविमर्दनाय,
दारिद्र्यदुःखदहनाय नमः शिवाय।।2।।
भक्तिप्रियाय भवरोगभयापहाय,
उग्राय दुर्गभवसागरतारणाय।
ज्योतिर्मयाय गुणनामसुनृत्यकाय,
दारिद्र्यदुःखदहनाय नमः शिवाय।।3।।
चर्माम्बराय शवभस्मविलेपनाय,
भालेक्षणाय मणिकुण्डलमण्डिताय।
मंजीरपादयुगलाय जटाधराय,
दारिद्र्यदुःखदहनाय नमः शिवाय।।4।।

पंचाननाय फणिराजविभूषणाय,
हेमांशुकाय भुवनत्रयमण्डिताय।
आनन्दभूमिवरदाय तमोमयाय,
दारिद्र्यदुःखदहनाय नमः शिवाय।।5।।
भानुप्रियाय भवसागरतारणाय,
कालान्तकाय कमलासनपूजिताय।
नेत्रत्रयाय शुभलक्षणलक्षिताय,
दारिद्र्यदुःखदहनाय नमः शिवाय।।6।।
रामप्रियाय रघुनाथवरप्रदाय,
नागप्रियाय नरकार्णवतारणाय।
पुण्येषु पुण्यभरिताय सुरार्चिताय,
दारिद्र्यदुःखदहनाय नमः शिवाय।।7।।
मुक्तेश्वराय फलदाय गणेश्वराय,
गीत प्रियाय वृषभेश्वरवाहनाय।
मातंगचर्मवसनाय महेश्वराय,
दारिद्र्यदुःखदहनाय नमः शिवाय।।8।।
हे वेदवेद्य शशिशेखर हे दयालो,
हे सर्वभूतप्रतिपालक शूलपाणे।
हे चन्द्रसूर्यशिखिनेत्र चिदेकरूप,
संसारदुःखगहनाज्जगदीश रक्षः।।9।।
यत्र यत्र स्थितो देवः सर्वव्यापी महेश्वरः।
यो गुरुः सर्व देवानां यकाराय नमो नमः।।10।।

सदाशिव चरण कमल मन लाग।
मोह निशा के सोवनि हारे, भोर भयो उठि जाग।।
पंक्षीगण सब बोलन लागे, मनहुं भैरवी राग।
मलय अनिल की मीठी थपकनि, निद्रा तन्द्रा भाग।।
कोकिल पंचम तान सुनावनि, डाल रसालन बाग।
अरुण किरण भरि विश्व विमोहनि, पूरब दिशा सुहाग।।
गेह देह सब नेह निहोरो, झूंठ विषय भ्रम त्याग।
चिदानन्द सन्दोह सरोवर, अवगाहन अनुराग।।
क्षण क्षण नित्य मनोहर सुन्दर, रस समुद्र में पाग।
शीतल मधुर महेश्वर मंजुल, विश्वेश्वर करु याग।।
सदाशिव चरण कमल मन लाग।।

नित्य सच्चिदानन्द सदाशिव, भाल चन्द्र शुचि रूप।
भस्म अंग गौरांग तन, पिगंल जटा अनूप।।1।।
रूप ज्योति त्रय ज्ञान मय, शीश गंग नित संग।
भुषन भुजंग भव दोष हर, सह गिरिजा अर्धंग।।2।।
आदि अन्त कारण सकल, अविनाशी अखिलेश।
बल विद्या उपदेश प्रद, नाशहु दास क्लेश।।3।।
शिव स्वरूप सुर भूमि भव, परु ता भारत नाम।
शैल सिन्धु ह्रदय धरनि, पावन रूप प्रनाम।।4।।
लिंग अर्थ प्रतीक तन, शिवलिंग पुरुष प्रकार।
शक्ति रूप प्रकृति भव, युगल रूप संसार।।5।।

पुरुष प्रकृति उपासक जोई। मांनु शिवा शिव साधक सोई।।
शक्ति शिवत्व उपजु तन ताके। परमारथ प्रभुता बढ़ु वाके।।
पुरुष प्रकृति साधना साधे। भागहिं आपु लोक अपराधे।।
नमः शिवाय जौन मुख जापे। तेहि दरसे मिलु तीर्थ प्रतापे।।
जौ तन भसम सोह रुद्राक्षे। भावइ चलन सुपथ कसि काछे।।
भय कौतूहल लोभ प्रसंगे। जपे नाम शिव हर हर गंगे।।
पावइ मुकुति दुराहीं दोषा। पूर भिलासा रहइ भरोसा।।
किहे शिवा शिव नाम उच्चारन। दण्ड देन नहि यम अधिकारन।।
अन्तर प्रेम भावना जैसे। ईश शकति उपजइ तन वैसे।।
बसै न तीरथ मन्दिर मांही। रूप शिला मूरति कोउ ठांही।।
अन्तर नेह शिवा शिव चरने। जासु प्रकाश मिलत अवतरने।।
देवि रूप सब देवी रूपा। सोई आद्य शकति भव कूपा।।
लोक उबारी कलि भय हारी। तासु विचार महेश पियारी।।
गुण गायत्री गौरी गिरिजा। नाम अनेक शकति इक सिरजा।।
ऊँ नमो गायत्री माता। ज्योति रूप जग ज्योति प्रदाता।।
भूर्भुवः स्वः सदचित रूपा। रूप भानु शशि अवनि अनूपा।।
तत्सवितुर्वरेण्यम् ईश्वर। बल बुधि विद्या ब्रह्म शकति घर।।
भर्गो देवस्य धीमहि बानी। हरइ दोष भव वरद भवानी।।
धियो योनः प्रचोदयातन। परसइ भाव सतोगुण साथन।।
ताते परम प्रीति त्रिपुरारी। जापे हरखहिं जग महतारी।।
जौन शिवा शिव मनेउ सुहावा। भजे सो हरि मिलु भरम दुरावा।।
परि शिव सन्मुख गौरि भवानी। हाथ जोरि मांगहुं इहि खानी।।
महामंत्र प्रभु जौन हितारथ। जोरु ताहि ते अन्तर स्वारथ।।
तनय रूप विलखत कर जोरे। आश तुम्हारि दूज नहि मोरे।।

सुन अनसुन सब रूप तुम्हारा। बल संग हमरे भाव हमारा।।

लिंग मूर्ति पूजे दोउ, मिल फल शक्ति समान।
पर लिंग पूजन साधना, लोक मांनु आसान।।6।।
लोभ मोह दुःख दोष जित, पूजिय लिंग भगाउ।
नारदादि ऋषि देव मुनि, पूजि प्रमाण दिखाउ।।7।।

परमातमा जांनु पर अरथा। मांनु आतमा आपन अरथा।।
परमातमा आतमा अन्दर। ज्ञान अज्ञान दोउ मा अन्तर।।
आप शिवा शिव तनय समेता। मानव महिमा करिय प्रचेता।।
नारद मोह महा दुःख दरपन। दूर दुरान किहे शिव सुमिरन।।
तानुसार मानव मति भाऊ। रहन सहन सब भांति सुहाऊ।।
अपरम अदभुत अति अनमेला। अवर्णनीय जन जीवन खेला।।
मेल अमेल साज अलबेला। एक नाहि सब काज झमेला।।
तबहुं शिवा शिव ताहि उबारत। खाली वचन सुने सच आरत।।
करि सुर पूजन जग प्रीताई। पर निर्मल मन नाहि सगाई।।
जेहि उर पर हित शील न भावा। सो दानव सम अधम स्वभावा।।
मानव जाति देह सन्माना। जौ आचरण भगति सद ज्ञाना।।
जेहि जीवन शिव ध्यान न सोहा। तासु परम अरि लौकिक मोहा।।
पूजि लिंग शिव दोष निवारे। दूज न रचु विधि भव उपचारे।।
महिम शिवा शिव पद प्रभुताई। वेद पुराण लोक जन गाई।।
प्रतिमा शिवा थापि शिव लिंगा। तनय षडानन गणपति संगा।।
विधि विष्णु सुर शास्त्र पुराने। नियम निदेश भगति मय माने।।
पूजा अरथ चलन्ह कर्त्तव्या। लोक हितारथ पथ मनतव्या।।
शिव माया बनु पूरन इच्छा। सिद्धि सफल अभला बनु अच्छा।।
शिव पूजा विधि सरल पहारा। परमानन्द अखण्ड अपारा।।

प्रात प्रथम गौरीपते, कुल समेत करि ध्यान।
किहे सतत बढ्ढु ब्रह्मबल, देत जौन सन्मान।।8।।

करु नित्य क्रिया शौचाचारा। दैहिक पूजन शास्त्र नुसारा।।
आपु समर्पण श्रद्धा सनेहे। भांति शिवा शिव मति गृह नेहे।।
आरत बैन सुआरति धूपे। जीव सकल गनु ईश्वर रूपे।।
आन अनुसरण आन विधाना। आपनि भूमि नुसार न माना।।
आपु संस्कृति आपन धरनी। वरना जौन साध सो करनी।।
भगवन भूख भजन भगताई। भल सो नाहि जिमे अधमाई।।
प्रणव नाद शिवा शिव प्राना। ध्यान जाप अमरत्व प्रदाना।।
मंत्र मृत्युंजय पंक्षाक्षर नम। मांनु अइस शरणागत ता हम।।

शरणागत महिमा प्रभुताई। ईश करहिं तेहि आपन नांई।।
पातक पावन साधक सिद्धी। एक भगति परसइ जग निद्धी।।
बम बम बमकत गाल बजावै। शिव स्तुति समान फल पावै।।
गह जग आतम अनगिन ढांचे। पर परमातम आयसु नाचे।।
जीव विलोकि सकै निज गाता। गात न देखहिं प्राण विधाता।।
जब बिलगाव बनै संग दोऊ। मानि मरा जग त्यागइ सोऊ।।
मनुज सुधारि सकै जौ आपू। पाउ मुकुति लह देव प्रतापू।।
ईश्वर गात रूप सतसंगा। भगत भाव गनु हरिहर अंगा।।
सत संग दायक सत्य प्रवृत्ती। दूज न साधन कुमति विवृत्ती।।
बढ़इ न ज्ञान बिना सतसंगे। केत नौ पढ़इ पुराण प्रसंगे।।
बिनु सत संग तेज नहि ओजा। चाहै जौन दिशा जे खोजा।।
ईश दरस जहं पर सेवकाई। धरम जहां हर पीर पराई।।
होहीं हरि दर्शन तेहि ठारे। जहं निर्मल मन भाव सुचारे।।
देव जहां रह बास सुवासा। मनुज उहां जहं ज्ञान प्रकाशा।।
लोक सुकर्मन आपु भलाई। धर्म बढ़ावत पर प्रीताई।।
फले धर्म भव नैतिक उद्भव। फल सुकरम आरोग्य देत भव।।
साधे कर्म धर्म आचारा। मिले सर्व सुख भल परिवारा।।

लोभ आन तन लोक धन, देत पतन उर शूल।
जहं उद्यम श्रम हीनता, गनु तहं दारिद मूल।।9।।

सत जीवन सतकर्म सुहावन। पुरुषारथ भय भरम नशावन।।
धरम नीति रक्षक आचारा। राजा प्रजा कुल परिवारा।।
गो द्विज सेवा यज्ञ समाना। सत्य समान धरम नहि आना।।
क्षमा परम व्रत यज्ञ स्वरूपा। नीति समेत कहत जग भूपा।।
जो बोवइ काटइ जग सोई। भाखेउ शंकर साथे गोई।।
करम यज्ञ ते बड़ तप यज्ञा। ज्ञान यज्ञ ते अवसर विज्ञा।।
साधक साधन जप आराधन। मूल जगत हित मंगल कारन।।
कौनव रूप दीखु जग जोऊ। सब शिवरूप उगल फल कोऊ।।
रंग न चढ़ु ज्यों बसन पुराने। फलित न जप बिन मन शिव ध्याने।।
जाति पांति मत भेद विहीना। शिव पूजन वसुधा जन कीना।।
राम हरे लिखि ओम सुअक्षर। साजि त्रिपुण्ड रेख चन्दन कर।।
भूषन बसने सुमन पियारे। भाव श्रद्धा करि शिव सिंगारे।।
चन्दन अक्षत नीर चढ़ावत। सेवी बनिय त्रिपुण्ड लगावत।।
रेख तीन त्रिपुण्ड प्रभूता। नौ सुर दल बल संग सबूता।।
न्यास त्रिपुण्ड लोक स्थाने। पच अठ सोरा बत्तिस माने।।

भसम त्रिपुण्ड जहां सदज्ञाने। बसइ तहां शिव शक्ति खजाने।।
लह पूजन अस देव न आना। सुर नर मुनि सब आप बखाना।।
थापइ शिवलिंग अरु थपवावै। भव सुख भोगि परम पद पावै।।
लिंग पूजन उत्तम विधि प्राता। कह सुर तीन सो नाशक त्राता।।
नमः शिवाय मंत्र पुष्पांजलि। इहि सम विनय न कुछ भजनावलि।।

विधि कोऊ करु शिव भगति, सब भव भीति निवार।
भगतन वाणी त्राहि सुनि, लेत सदा अवतार।।10।।

कथा नई नहि काल पुराने। करत मारकण्डेय शिव ध्याने।।
मुनिन्ह स्वभाव करन्ह भगताई। दिवस न इक सब जनम गंवाई।।
तानुसार मरकण्ड मुनीश्वर। सेवत सतत लिंग जगदीश्वर।।
पुरवत रहेउ तितेउ अभिलासा। भगति बाढ़ि गै लागि अकाशा।।
शिव स्वरूप मन ध्याइ मुनीशा। लगे बितावन घरि चौबीसा।।
करत प्रतीक्षा काल निहारत। छूटै ध्यान आइ सो मारत।।
आइ बेर बहु सका न मारी। मरन दिवस मुनि दीन्ह गुजारी।।
काल रिसान पराजय जानी। काल दण्ड लै चल अभिमानी।।
हाहा करत भरेउ तूफाना। पहुंचा अविलम्ब मुनिय मकाना।।
दीखु बैठ मुनि शंकर ध्याने। चहिस काल हनु काल निशाने।।
काल देखि को नाहि डेराहीं। जीव चराचर जे जग मांही।।
चिघरि मुनीश लिंग लपटाने। ताते कथिय बचावहु प्राने।।
भाव राखि जैसे शिव काने। वचन सुनावत शंभु ओनाने।।
श्रद्धा बाढ़ि विश्वास अपारा। लिंग लिपटे नहि पाछ निहारा।।
कण कण व्यापति हर प्रभुताई। लिंग रूप ते परेउ सुनाई।।
वत्सल भगत लोक भय हारी। जेहि स्वभाव सुनु दीन गुहारी।।
महाकाल सुनि मुनिवर वचना। थापि देइ लिंग माझे वदना।।
काल पछारन रूप बनावा। प्रगटि शंभु त्रिशूल चलावा।।
देखत काल थराथर कांपा। निहुरा शीश नाइ शिव जापा।।
भागेउ काल मने खिसियाना। काल दण्ड धरि जोरेउ पाना।।
नियम निधान नाथ प्रभुताई। आयसु जो सो चलउं निभाई।।
देहु जो आयसु कृपानिधाना। पालब सोई छाड़हु प्राना।।
दीनबन्धु दीनन्ह हितकारी। विनय वचन सबकै स्वीकारी।।

काले कान सुनाइ कह, महाकाल इहि ढंग।
मोर भगति जाके हृदय, गनु सो मोरा अंग।।11।।
भूलु मोहि जो ताहि पर, बा अधिकार तुम्हार।
भगत बंधे जो काल बल, भगति करन बेकार।।12।।

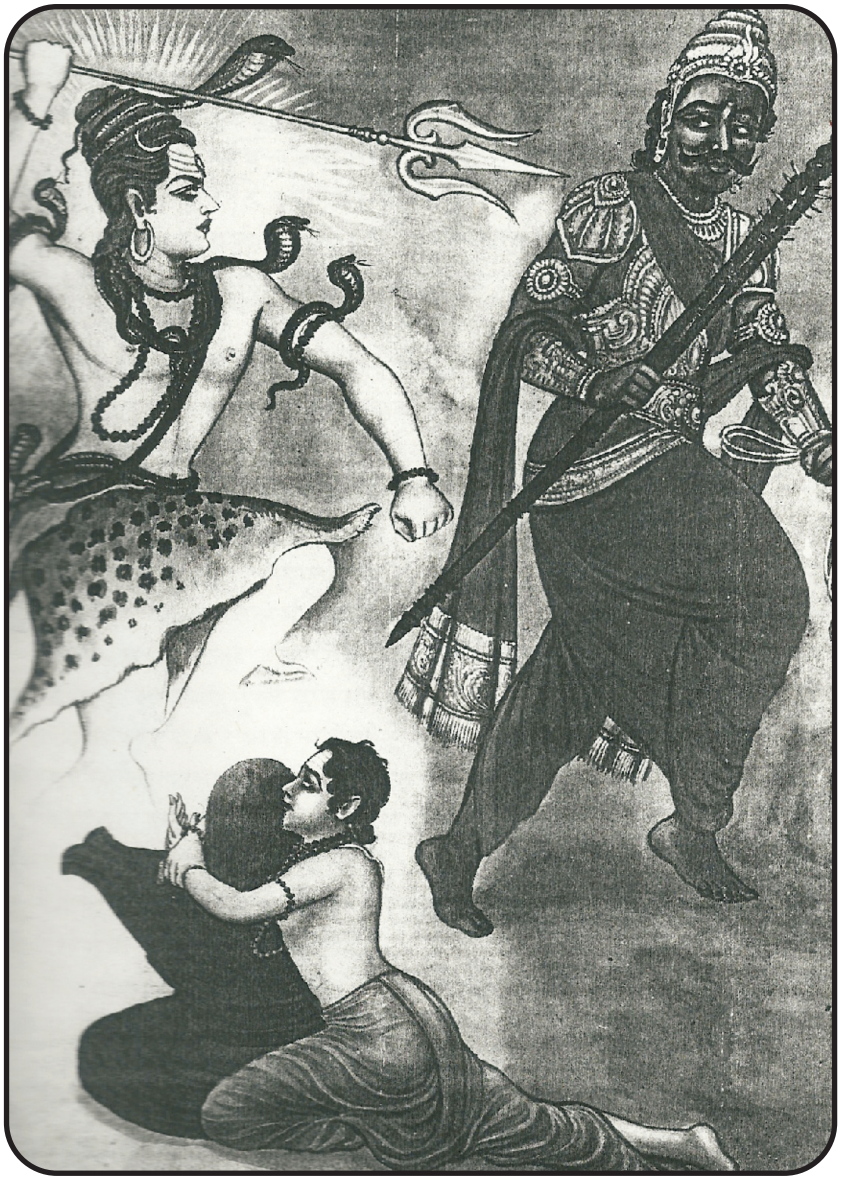

आप रूप शिव रुद्रबनि, लेत त्रिशूल संभारि।
जरा जन्म दुःख भव मरन, देत भगत भय टारि।।
इहि प्रकार सन्देश शिव, काल सुनाइ भगाइ।
तब मुनि ओरी कीन मुख, कृपा दृष्टि दरसाइ।।

पानि जोरि मरकण्ड मुनि, प्रेम आंसु छलकाइ।
चरन ध्याइ वन्दन करिय, आपन शीश झुकाइ।।

त्वमेवेदं विश्वं सृजसि सकलं वज्रवपुषा,
तथा लोकान् सर्वानवसि हरिरूपेण नियतम्।
लयं लीलाधाम त्रिपुरहररूपेण कुरुषे,
त्वदन्यो नो कश्चिज्जगति सकलेशो विजयते।।1।।
यथा रज्जौ भानं भवति भुजगस्यान्धकरिपो,
तथा मिथ्याज्ञानं सकलविषयाणामिह भवे।
त्वमेकश्चित्सर्गस्थितिलय वितानं वितनुषे,
भवेन्माया तत्र प्रकृतिपदवाच्या सहचरी।।2।।
प्रभो साऽनिर्वाच्या चितिविरहिता विभ्रमकरी,
तवच्छायापत्त्या सकलघटनामंचति सदा।
रथो यन्तुर्योगाद् व्रजति पदवीं निर्भयतया,
तथैवासोनित्यं त्वमसि शिव साक्षी त्रिजगताम्।।3।।
नमामि त्वामीशं सकलसुखदातारमजरं,
परेशं गौरीशं गणपतिसुतं वेदविदितम्।
वरेण्यं सर्वज्ञं भुजगवलयं विष्णुदयितं,
गणाध्यक्षं दक्षं प्रणतजनतापार्तिहरणम्।।4।।
गुणातीतं शम्भुं बुधगणमुखोद्गातियशसं,
विरूपाक्षं देवं धनपतिसखं वेदविनुतम्।
विभुं नत्वा याचे भवतु भवतः श्रीचरणयो र्विशुद्धा
सद्भक्तिः परमपुरुषस्यादिविदुषः।।5।।
नमामीशमीशान निर्वाणरूपं,
विभुं व्यापकं ब्रह्मवेद स्वरूपम्।
निजं निर्गुणं निर्विकल्पं निरीहं,
चिदाकाशमाकाशवासं भजेऽहम्।।6।।
निराकारमोंकारमूलं तुरीयं,
गिरा ज्ञान गोतीतमीशं गिरीशम्।
करालं महाकाल कालं कृपालं,
गुणागार संसारपारं नतोऽहम्।।7।।
तुषाराद्रि संकाश गौरं गभीरं,
मनोभूत कोटि प्रभा श्रीशरीरम्।
स्फुरन्मौलिकल्लोलिनीचारुगंगा,
लसद्भालबालेन्दु कंठे भुजंगाा।।8।।

चलत्कुण्डलं भ्रू सुनेत्रं विशालं,
प्रसन्नाननं नीलकण्ठं दयालम्।
मृगाधीशचर्माम्बरं मुंडमालं,
प्रिय शंकरं सर्वनाथं भजामि।।9।।
प्रचण्डं प्रकृष्टं प्रगल्भं परेशं,
अखण्डं अजं भानुकोटि प्रकाशम्।
त्रयः शूल निमूर्लनं शूलपाणिं,
भजेऽहं भवानीपतिं भवगम्यम्।।10।।
कलातीतकल्याणकल्पान्तकारी,
सदा सज्जनानन्ददाता पुरारिः।
चिदानन्द सन्दोह मोहापहारी,
प्रसीद प्रसीद प्रभो मन्मथारिः।।11।।
न यावद् उमानाथ पादारविन्दं,
भजन्तीह लोके परे वा नराणाम्।
न तावत्सुखं शान्ति संतापनाशं,
प्रसीद प्रभो सर्वभूताधिवासम्।।12।।
न जानामि योगं जपं नैव पूजां,
नतोऽहं सदा सर्वदा शम्भुतुभ्यम्।
जरा जन्म दुःखौघ तातप्यमानं,
प्रभो पाहि आपन्नमामीश शम्भो।।13।।

भगति भाव रुद्राष्टकम्, पाठ करै जन जोय।
रोग दोष लौकिक व्यथा, ता कुल नाही होय।।15।।
काल आक्रमण टारि मुनि, लीन्ह अभय वरदान।
पीर हरन जन दीन के, को जग शंभु समान।।16।।
महाकाल भव काल तन, सकल काल भय हार।
काल देह काशी वसिय, काल रखावन वार।।17।।
युग परिवर्तन देत करि, महाकाल कै चाल।
जो नहि मानत नीति तिन, पहिनत ता मुण्डमाल।।18।।

बसि काशी काशीपति नाथा। कीन्ही भगति मनुजता साथा।।
गिरिजा मांनु ताहि पुर आपन। राज काज भल करि स्थापन।।
पति पद सेवा मनुज नुहारन। जीवन वर्ण धर्म तन तारन।।
काशी साधि करम अनुसारे। मिलहीं फल जग दृष्टि उघारे।।
परिणय प्रीति सुनीति निधारा। गंगा वातावरण उभारा।।
धरम गृहस्थ धरा प्रभुताई। आपु साधि महिमा प्रगटाई।।

जो जन पालु वर्ण बल चारी। शिव शक्ती लह उमा उचारी।।
लहहीं मोक्ष बिना परयासे। जीवन जासु नीति शिव आसे।।
नहि लीला शिव करि कर करनी। गृह महिमा दिखराइअ धरनी।।
पति पत्नी परिवार सनेहा। रहहीं केस भल साधिय तेहा।।
आप रूप शिव भव कल्यानी। मातु शक्ति मय जगत भवानी।।
भव समान शंकर तन नाना। जे जेस ते लह तेस प्रमाना।।
अन्तर भाव नुसारे ईशा। धरे रूप करि लोक वरीशा।।
मन्दिर मस्जिद तीरथ मांही। भाव जथा तथ ईश समाहीं।।
पर आचरण जौन शिव साधा। साध सो तो लह न अपराधा।।
जौ जीवन अपराध घनेरा। जनम व्यरथ बनु सब दुःख घेरा।।
जौ चह जीवन जनम भलाई। करु सो जौन शिवा शिव गाई।।
शुक्र लोक शुक्रेश्वर थापी। महिमा शुक्र बनाइ अमापी।।
गहि शिव शरण भगति बल बूते। चलि शिव पथ देइ लोक सबूते।।
लोक विलोकु नयन परमाना। भा विराम खल तन निरमाना।।
लावत शिवम नीति जिन प्रीता। ता अन्तर बनु परम पुनीता।।
निवसहिं देव तासु उर मांही। धरनि धरा सुख स्वर्ग दिखाहीं।।
जहां शिवा शिव गाथा सोहे। विपति पाउ तहं घातन लोहे।।
सतयुग सोह उपजु कुल वैसे। सियाराम मर्यादित जैसे।।
मानव महिमा तन प्रभुताई। पसरइ बढ़इ लोक सुरताई।।

शिव स्वरूप संसार मंह, हेतु देन सुरताइ।
तासु रुद्र तन लोक मंह, बीनि हतइ असुराइ।।19।।
सो शिव तजि हिम काशि चल, जब से कीन निवास।
गृहणी गिरिजा संग लै, बनु भव ज्ञान प्रकास।।20।।
सुर नर दानव देश जन, करि सुरता प्रीताइ।
रीति नीति सर्वेश कै, सब मन मति सुधराइ।।21।।
इत शिव काशी जो बसे, भवा सून हिम धाम।
हर आवन ऋषि देवगण, निरखत दोनों शाम।।22।।
पर शिव आये न लौटि, बीते बरस हजार।
हिम प्रभुता लागी घटन, चिघरा ऋषि परिवार।।23।।

देखि दशा कैलास हिरासे। करि चिन्ता मन भयो उदासे।।
रह जित जीव ऋषी परिवारा। विनवत हेतु फिरन गिरि सारा।।
करत मनौती विनय सुनावत। दिन गे बहु पर न शिव आवत।।
सब उर आवन आश ओरानी। नाहि सुझात चलउ केहि खानी।।
मुनि वीणा धर तेहि दिन आये। एक न सब मुख इहि दुख पाये।।

सून हिमेश्वर बिनु गिरिजापति। सधत न भल तप पाउ सतत क्षति।।
जौं मुनीश तप जाइ ओराई। गो द्विज शकति पाउ अथिराई।।
सुनु नारद इहि दुःखे दुखारी। हम सब चाह फिरै त्रिपुरारी।।
फिरइ तीन पुर जे हित आने। परहीं शबद तासु जौ काने।।
हरखन त्रय सुर कृत परमारथ। नारद रखहिं ताहि ते स्वारथ।।
आप नुकूल काज पहिचानी। विहंसि मुनीश कहेउ मृदु बानी।।

चलहु सबै विधना भवन, नारद गै अगुवाइ।
पाछ हिमेश्वर देव ऋषि, सबही चले तकाइ।।24।।

गावत धावत ऋषि परिवारू। गयो पहुंचि विधना घर द्वारू।।
आदर आसन विनय प्रनामा। पूरन भयो विधाता धामा।।
आवन कारन नेह समेते। पूंछ विधाता आपु निकेते।।
ऋषि परिवार एक स्वर बोला। धन्य धन्य शंकर बम भोला।।
तजि हिम जबते बसि पुर काशी। नहि कैलास फिरे सुखराशी।।
बिगतु ढेर दिन सून हिमेशा। जन्म जात जहां रहत महेशा।।
फिरत न काह केसस रिसियाने। हम सब कारन एक न जाने।।
चाह हमारि फिरइ निज धामे। पावउं दरस चरन प्रनामे।।
पुरवहु देव मनोरथ एही। ऋषि परिवार आश करि तेही।।
मौने सथिरे मन मति ध्याने। ऋषिन्ह वचन विधि आप ओनाने।।
पल विचारि बोले हंसि बानी। शिव महिमा कुछ जाइ न जानी।।
फिरहिं केसस हिम मोर न जाना। कहे करइ का नाहि ठिकाना।।
आशा एक विनय पद लाई। जुगुति एक सब साथ सुनाई।।
दीनबन्धु दीनन्ह दुःख हारी। देहीं शायद विपति निवारी।।
विधि विचार बल बुधि जेस पाई। तानुकूल ऋषि भाव बनाई।।
स्वीकारा शिव धाम पधारन। ऋषि कुल विधना नीति विचारन।।
ऋषिन्ह वचन कर जोरि उचारे। पर चलु विधना साथ हमारे।।
नारदादि मुनि दीन्ह समर्थन। चलेहु जहां करहीं शिव निवसन।।

सुर ब्रह्मादिक वंश ऋषि, काशी नगर तकाउ।
जयति शिवा शिव बोलि सब, शिव द्वारे चलि आउ।।25।।
राज धाम अनुसार तहं, पाउ सुआसन साज।
उमा बाम शिव सोह संग, देखत राज समाज।।26।।
सो प्रभुताई को कहहिं, देहु छाड़ि जग नाथ।
सबके उर सकुचन उभर, लाज छाइ मन माथ।।27।।

जोड़ी राजसिंहासन धारी। भयो मुदित ऋषि देव निहारी।।
राज काज नाशक असुराई। भाव स्वभाव देन सुरताई।।

राज काज व्यवहार धिकारा। जथ तथ शिव निज बैन उचारा।।
पूंछु महेश लोक कुशलाई। पुनि कह कारन काह अवाई।।
नाहि अकेल साथ ऋषि देवा। चाहत कौन राज सुख सेवा।।
किन दुःख दोष सतायउं तोहूं। नाही जानि सकेउं हम वोहूं।।
सकुच दुराइ व्यथा कहु आपन। पुरउब अवसि देत मुख बातन।।
आउ जे द्वार हरहुं दुःख ताही। कमल समेत अस मति मनमांही।।
सुनि काशीपति बैन नुकूला। रहा न विधना मन कछु शूला।।
जोरि हाथ विधि बैन सुनाई। सुनहु प्रभु मोहि कोउ न सताई।।
ऋषि मुनि कारज कारन आयउं। दीखु सो छबि जो दीखि न पायउं।।
जौन कहत ऋषि मुनि सकुचाहीं। कथन करन सो मोहि लै आही।।
पर सो कहत लाज भय मारे। ना कहि पाउं सुनहु जग तारे।।
लगइ न प्रिय तो नाथ रिसाहीं। रहत न बनै जाब केहि ठांही।।
तुम जानत जग जानन वारे। प्रेरण देत करावन हारे।।
का केहि अन्तर का अभिलासा। तुम प्रकाश बिन नाहि विकासा।।
अस कहि विधि गह शंकर चरना। सुनहु नाथ प्रनता रति हरना।।

विधि उठाइ शिव आपु कर, बोले मीठे बैन।
कहउ सुने बिन मोहि सो, ना आवत उर चैन।।28।।

सुनि शिव वचन विधाता भाये। मन हरखा नयनन जल आये।।
ब्रह्म अनादि मनुज सम देखे। सोचत मम जे ब्रह्म विशेखे।।
सोचि तासु पाछिल प्रभुताई। विधि ऋषिगण परु विस्मय ताई।।
लीला जानि न कुछ कहि पावत। पुनि पुनि विधि शिवपद सिर नावत।।
सुमति सुशील मनुज आचारा। चलत साधि स्वामी संसारा।।
जेहि विधि पाउ मनुज सुखमूला। सो तुम करत समेते कूला।।
बना न लय जेहि प्रभुता नाशी। लागत लीला सो गृह बासी।।
नाथ रूप जो सो नर खानी। बन काशीपति सहित भवानी।।
जो जग अन्तर सो भव मन्तर। साधि फिरत भू राज नियंतर।।
देन विधाता बैन समर्थन। ठाढ़ भवा ऋषि दल विधि संगन।।
विपदा जौन आउ निपटावन। एक साथ सब लगेउ बतावन।।
तुम जग पिता उमा जग जननी। बसहु कतहुं सकु पीरा दहनी।।
सृष्टि बीज तुम रूप अनूपा। देव न कोउ मिलु सम तुम रूपा।।
वाहन वृषभ दिगम्बर धारी। उत्पत्ति रक्षक भव लय कारी।।
रवि शशि रूप दनुज सुरताई। होइ उदित तुम्हरो बल पाई।।
गौरि गणेश षडानन संगा। भूषन भुजंग पावनी गंगा।।
प्रभु समेत सोहत जहं एही। चलु अनुकूल चराचर तेही।।

तुम्हरी शरण गहै जो कोई। तरै सकल संकट सो सोई।।
ध्यान धरत छूटइ भव बाधा। निकट न आउ लोक अपराधा।।
विश्वरूप तुमहीं पितु माता। हरि हर सुर ऋषि रूप विधाता।।
तुम्हरी महिमा पार न पावै। नेति नेति कहि वेद बतावै।।
जितने देव मिलत जग मांही। तुम ते सरल आन केउ नाही।।
लिंग रूप पूजिय जग माना। सरल सरेख सृष्टि भगवाना।।
सुमिरत नाम ज्ञान विज्ञाना। आपु मिलत अस देह विधाना।।
जै जै जै त्रिपुर संहारी। महिमा अपरमपार तुम्हारी।।
शक्ति समेत करत जग वन्दन। जय गिरि गिरिजा गौरी नन्दन।।
भव क्लेश चित चिन्ता भारी। दूरि करहिं गिरिजा महतारी।।
मात रूप जग जननि भवानी। तुम सम और दयालु न दानी।।
आरत अर्थी चिन्तित भोगी। ऋषि मुनि यती तपस्वी योगी।।
जो जो शरण तुम्हारी आवै। सो सो मन वांछित फल पावै।।
बल बुधि विद्या शील स्वभाऊ। धन वैभव यश तेज उछाहू।।
सकल बढ़ै उपजै सुख नाना। लाइअ साथ शिवा शिव ध्याना।।

आउ नाथ गृह आश लै, शरणागत अनुहार।
नर नृप लीला रूप नर, सुनु ऋषि देव गुहार।।29।।
नाथ बसत काशी नगर, मातृभूमि बिसराइ।
तुमहि पुकारति सो धरा, ऋषि समाज कहं जाइ।।30।।

विनय समेत कहन्ह विधि लागे। लाइ शिवा शिव पद अनुरागे।।
नाथ बसत गिरिजापुर नगरी। शोभित राजकाज भल बखरी।।
वान गृही गृहिणी संग साधे। दीन्ह सिखावन जीवन आधे।।
पूरण बनेउ विवाह उद्देशा। जीवन मनुज हेतु सन्देशा।।
लोक लाज अनुसार बसेरा। नाहि तुम्हें कोउ टोका टेरा।।
रह थापन जग जो अनिवारा। दीन्ह थापि अब बदलु विचारा।।
पुर कैलास उदास निहारत। सांझ संकार दिया के बारत।।
आवन आश नीर प्रवाहे। धरनि क्षरण रोका ना जाहे।।
तुम समान जग देइ भुलाई। तौ इहि दोष जांहि अधिकाई।।
लांघेउ बान गृही जौ भगवन। शास्त्र नुदेश हिमे करु निवसन।।
बिनु हिम धरनी नाथ पयाने। कहउं जोरि कर सब अकुलाने।।
धरनि बसे बढ़ु गृह प्रभुताई। हिम ते जाइ न सो प्रगटाई।।
पर हिम धाम बसे भगवन्ता। संभव लोक सुधार नियन्ता।।
करि कृपा कीजै प्रभु इतना। पुर कैलास करहु पुनि गमना।।
होहिं देव ऋषि सन्त सुखारे। इहि मांगत हम सब परि द्वारे।।

लेहु न जौ कैलास बसेरा। बनु धूमिल सो धाम उजेरा।।
जौ गिरिजा प्रियता पुर काशी। तौ तुमहूं कैलास प्रबासी।।
तानुसार प्रभु होत बुलावन। आइ करत ऋषि देव मनावन।।
वर्ण आश्रम समय समेता। सबै चहत चलु नाथ निकेता।।

गृही छटा महिमा निरखि, भागत विशद विषाद।
अन्तर उपजत भाव भल, रहति मनुजता याद।।31।।

नाथ रूप मानव प्रभुताई। करत प्रशंसा नाहि अघाई।।
जेस जग आतप व्याकुल होई। तरु छाया सुख जानत वोई।।
तानुसार भटका गृह जो जन। साधे आप चले शिव मति मन।।
करिय कृपा मानव हित जोऊ। कीन न अस कोउ आगन होऊ।।
तुम सब जानत जगत सिखावत। जेहि सीखा तेहि आग चलावत।।
आगु चले मद ताहि सतावत। तब तुम ताकर मान घटावत।।
बरनत नाहि चुकइ प्रभुताई। आप कीन जग जौन सिखाई।।
सुनि विधि बैन शिवा मन भावा। ताते बड़ शिव मने सुहावा।।
सभा सलाहन शिव स्वीकारी। मांग जौन विधि ऋषिन्ह उचारी।।
कह गमनब हम पुर कैलासे। पुरउब देव ऋषिन्ह मन आसे।।
तनय थमाउब काशी भारा। वेगि करब कैलास विहारा।।
राज धाम पुर लोग लुगाई। भये दुखी सुनि शंभु विदाई।।
पर जे जात सकइ के रोकी। रुकत न नयन नीर अवलोकी।।
होति बिदाई राज देव जेस। अनुसारे शिव विदा भये तेस।।

जय स्वर ते गूंजा गगन, चलेउ शिवा शिव धाइ।
गयउ पहुंचि कैलास पुर, सो पुनि गवा सजाइ।।32।।
घर घर जीवन ज्योति जल, सो सुख नाहि अमात।
हिमे सहित हिम बासि जन, धाउ करन मुलकात।।33।।

होन लाग पुर मंगल चारा। सजिय आरती कनकन थारा।।
जाग हिमालय पुर कैलासा। पूरण बूझि आप अभिलासा।।
सो सुख देव सकहि नहि बरनी। बसेउ शिवा शिव पुनि जेहि धरनी।।
विधि समेत ऋषि कुल हरखाये। बूझि शिवा शिव बैन ओनाये।।
बसि कैलास शिवाशिव दोऊ। देखि सभा ऋषि बोले सोऊ।।
होहि भांति जेहि मनुज उद्धारन। करु सो रीति नीति संचारन।।
ताहि सुखे मोरे मन प्रीता। जेहि पथ चलत राम अरु सीता।।
मोर भगति सो भाव उपासन। करु जे करु ता हृदय निवासन।।
मिलै न जा तन भल आचारा। मोर न सो नहि लगइ पियारा।।
रीति नीति शिव आयसु मानी। चलब चलाउब कह ऋषि बानी।।

पुनः देव कैलास घर, भवा पुनीत सजीव।
संस्मरण सब उर उभर, देखत नवल अतीव।।34।।
परम मुदित सब मन लगत, शिव सुख वैभव पाइ।
शैल शिखर चेतन ध्वजा, आप उड़ति लहराइ।।35।।
सकल देव देवर्षि ऋषि, घेरि बैठि चहुं ओर।
शिव प्रसादे आश करि, करत जयति अन्दोर।।36।।
भीड़ भजन भगती परम, सब मन भाव नवीन।
दरस परस वाणी सुनन्ह, सबके चित लवलीन।।37।।
शिव शक्ती कृपा जहां, तपसी गात सुहात।
मनसा पुरवत ताहि शिव, जरा तिमिर कोउ गात।।38।।
तबहुं निकसु सबके मुखे, प्रभु प्रसाद कै चाह।
हाथ जोरि मांगन करिय, देहु सुजीवन राह।।39।।
भक्त नाथ भगवान शिव, अवसर मन पहिचानि।
सबकै झोली देब भरि, बोले अइस जबानि।।40।।

जन सानिध शरणागत पाई। खाली हाथ न तेहि लौटाई।।
चूकब इहि अवसर हम नाही। देब सो जो कुल खात अघाहीं।।
काशी सम्पत्ति करि अनुदाना। पर प्रसाद ते भरा खजाना।।
पाइ जाहि भागहि भव घाटा। सो प्रसाद जाये इहि बांटा।।
भय भगाइ इतना करु ढीठा। जीवन जनम जिते बनु मीठा।।
सभा समाज समय अनुसारे। बैठहु सब केउ शान्ति विचारे।।
जे इहि आइ लूटु मन मानी। आउ न जे ताहू अनुदानी।।
जीवन खेत बीज सतकरमा। बोइ बोवाइ दुरावहु भरमा।।
जो बोवत जो काटइ सोई। बोउ न जौ तौ शिर गहि रोई।।
शिव प्रसाद गहने ऋषि लागे। प्रीति प्रगट करि बड़ अनुरागे।।
पसरी बात लोक चहुं ओरी। बरसत सुधा शिवा शिव खोरी।।
जहं जे सुना तहं ते धावा। भू नभ पथ चहुं ओर ते आवा।।
लेन सबै शिव तत्व प्रसादा। जो करु पूरण जन्म उवादा।।
आगर सागर ज्ञान उजागर। जौन कहा शिव साजि सभागर।।
जीवन सुधा ताहि जग मानी। सुना जइस तेस सूत बखानी।।
मति अनुसार ताहि हम गावा। बन अनबन शिव चरन थमावा।।
शिव कल्याण शिवा कल्यानी। एक ब्रह्म दूजो ब्रह्मानी।।
एक पुरुष दुज शक्ति स्वरूपा। जग जीवन हेतू सुख रूपा।।
सोह सुआसन पुर कैलासे। बांटिय नवयुग नीति प्रकासे।।
बूझि परखि चित सब दिशि लायउ। जो नुकूल सो नीति बतायउ।।

पाप पतन दुःख हरन कलेशा। सकल निवारक बुधि उपदेशा।।
आपन आन हितारथ जोऊ। जेस कह शिव तेस कहा न कोऊ।।
अमर कथा सम भल शिव मानी। भगति सजीवनि प्रीति सयानी।।
शिव परिवार देव ऋषि रूपा। मति साधक जन अंग स्वरूपा।।
लोक सुधार शिवा शिव बानी। चल सोई पथ युग निर्मानी।।

सो शिव वाणी सूत कह, सुनिअ ऋषिन्ह समुदाय।
कछु दिन बीते लोक मंह, ऋषि पद्धति कहि जाय।।41।।

सभा देव ऋषि ओर निहारत। करत नमन वच आप उचारत।।
महिमा जासु जाइ नहि जानी। सकै न सारद शेष बखानी।।
तासु प्रसाद रूप मुख बानी। वन्दत चरन कहउं जो जानी।।
शिव उद्देश्य जग जीव उबारन। जीवन जगत कलूष निवारन।।
जाना सुना जौन पहिचाना। सबही सुनहु सप्रीते काना।।
ऊँ रूप शिव श्वांस प्रकारे। नाद ब्रह्म भाखइ संसारे।।
अक्षर सुधा जीव शिव रूपा। रूप शकति तन क्रिया स्वरूपा।।
अक्षर न क्षर गुंथ जेस जाई। तानुसार सुख प्रद दुःखदाई।।
अक्षर न शिव शिव भव मूला। सृष्टी सकल तासु घर कूला।।
बिन शिव व्यर्थ रूप साकारा। मांनु चेतना शिव आकारा।।
अहं शिवोहं सोहं वृत्ती। बूझिय उपजु मनेउ सदवृत्ती।।
जीवन दीप शिखा अनुहारे। तेहि छाया जीवन संसारे।।
पुरुष प्रकृति नियति जेहि माना। तासु चक्र भव धरनि समाना।।
पिता पितामह आतम माता। एत्रय जीवन जीव विधाता।।
नारि पुरुष मय सृष्टि स्वरूपा। नयनन दीखु सबै शिव रूपा।।
बसत कोष षट सब तन मांही। तीन मातु त्रय पिता कहाहीं।।
सत चित आनन्द ईश्वर रूपा। व्यापु जहां तहं सब सुख रूपा।।
व्यापत सकल चराचर मांही। सून पाइ करि काल चढ़ाहीं।।
जहां धर्म तीरथ सुख बेला। होहीं गंगा यमुन समेला।।
ब्रह्म लोक पथ परै सुझाई। लै बल यज्ञ लक्ष्य सफलाई।।
मंगल पाउ शिवाशिव चरने। अन्त काल भवसिन्धु उतरने।।
आतम अनुभव ज्ञान प्रकाशा। ताते होहिं भूल भ्रम नाशा।।
प्रबल अविद्या जेहि परिवारे। लोभ मोह तम कलह कगारे।।
तिमिर दुरावन जौ चह सोई। बिनु शिव भगति उबरु न कोई।।
जेतिक अन्तर दुर्गुण गांठी। आनहु देइ दोष दुःख माठी।
भगति शिवा शिव भल उपचारा। देह दोष हर सत आहारा।।
उपजइ बुद्धी परम सयानी। सो छोड़इ जो अनहित जानी।।

बुधि विज्ञान स्वरूपिनी, भाव भगति घृत पाइ।
जलै जासु उर दीप बनि, दूजो पथ दरसाइ।।42।।
कहत सुनत समझत सरल, साधन मा कठिनाइ।
जाके साधे जाइ सधि, होहीं ईश सहाइ।।43।।

तन इन्द्री सब देव समाना। देवत्व देन रहत अकताना।।
पर जेस खांइ करै तेस करनी। तानुसार लोके जन बरनी।।
करन्ह आहार आपु अधिकारे। जानि बूझि जे ताहि बिगारे।।
बिगरइ आपु बिगरु परिवारा। ताते जाइ बिगरि संसारा।।
बाढ़इ ढेर व्यापु कलिकाला। तासु रूप बड़ विषद विशाला।।
सुनिय नाम कलि सब थरराये। ऋषिगण जौन सभा तेहि आये।।
भव कलिकाल बिनाशन वारे। बूझि शिवा शिव भा जयकारे।।
आगे सूत बतावन लागे। बाढु शिवा शिव जेस अनुरागे।।
कुमति कुभाव कुपोषण करनी। नाशि उतारु उमा वैतरनी।।
तासु नाम जग गंगा गीता। आनन्दा सावित्री सीता।।
स्वाहा स्वधा शची ब्रह्मानी। वाणी विद्या जया कल्यानी।।
आदि शकति राधा रुद्रानी। सरस्वती कमला गुण सानी।।
शिव शक्ती कलि करम विदारी। बनि कुण्डलिनी देह पधारी।।
पथे सुषुमना दैहिक कोषे। सहस्त्रार बसि जीवन पोषे।।
विद्या वेद प्रकृति स्वरूपा। अन्तर बाहर ता अनुरूपा।।
जारहि अनघ कुमति भय टारे। पाये हार विहार नुसारे।।
इहि ते चलहु प्रकृति नुकूलेउ। भये विरोध मिलै भव शूलेउ।।
जेहि तन आप नियंत्रण नाही। दुर्लभ दैवी कृपा तांही।।
खल कामादि निकट नहि जाही। बसइ भगति जाके उर माहीं।।
गरल सुधा सम अरि हित होई। ता मति बिन सुख पाउ न कोई।।
व्यापहिं मानस रोग न भारी। भगति नियंत्रण जे तन धारी।।
अस शिव भगति सुगम सुखदाई। अघी मूढ मन नाहि सोहाई।।
ज्ञान प्रकाश मिलै दिन राती। अन्तर जांनु जलत घृत बाती।।
मोह दरिद्र निकट नहि आवत। लोभ लूट शिव जाप बेरावत।।

दया रूप मन पाख करि, बल पुरुषारथ देत।
दरिद भाव अज्ञान मति, सर्वस अवगुन लेत।।44।।

अन्तर तासु बसइ प्रभुताई। मन जाके शिव भगति समाई।।
काल कलूष डरै तेहि देखे। बल शिवत्व जहं सोह विशेखे।।
जौ देखा अनदेखा करई। वर्जित गहै न ताते डरई।।
उपजै शूल विविध भवरोगा। जीवन जाइ नाहि सुख भोगा।।

बोलेहु सूत सुनहु ऋषिराया। व्यापित लोक शिवा शिव माया।।
बढ़हि युगे कोउ कलिकाचारा। अधरम नीति असुर अधिकारा।।
सकै न जन तेहि आप निवारी। मचहीं त्राहि त्राहि चहुंवारी।।
नाहि सकइ सहि साधू सन्ता। सूझि परै इहि दुख न अन्ता।।
लोक विधान धरनि वरदाना। तब अवतरहिं अवसि भगवाना।।
तारहिं लोक निवारहिं दूखा। परसहिं तौन जौन जग भूखा।।
परखेउं आदि अन्त तक एही। सबै शिवा शिव चरन सनेही।।
जीवन जनम हेतु सफलाई। शिव शकती भगती अपनाई।।
तबहिंन थापि सके भव धर्मा। जनम उद्देश्य पुरायउ कर्मा।।
असुर संहारे दोष निवारे। भूल भटक हति मनुज सुधारे।।
फलइ न शिव बिन भवलय करनी। आगम निगम पुरानन्ह बरनी।।
महा प्रलय तक देइ प्रमाना। तिमें रचिय शिव सृष्टि विधाना।।
पूजि शिवा शिव कोऊ नामे। लोक लोग करहीं परनामे।।
चाहै कतहुं कबहुं अवलोका। बिन शिव शिवा सून सब लोका।।
मति अनुसार महेश्वर नीती। राखहिं लोक नारि नर प्रीती।।
जे वर्णाश्रम धर्म विचारा। मांनु सोई शंकर परिवारा।।
ते घर उपजु गणेश षडानन। जौन करहिं भव सुरता थापन।।
कलिमल सो घर फिरइ बेराई। बाढ़ै कुल बल बुद्धि सवाई।।

ज्ञान भगति शिव तत्व जहं, मानव चार सलोप।
कुल समेत कुल दोष दुःख, परसावत शिव कोप।।45।।

प्रीति आसुरी साधइ मनई। देव संस्कृति विकृति बनई।।
दोऊ तंत्र फिरत बगिलाई। भष्टाचार अडम्बर लाई।।
मानहिं मनुज आपु भगवाना। साधि विध्वंसक बल विज्ञाना।।
वर्जित प्रीति अभक्ष सनेहे। हत्या करइ आतमा देहे।।
सुमति बजाइ कुमति रुचि लाई। पर धन छीनत नाहिं अघाई।।
सोवत सपने जागत चयने। सतत रहइ मन धन संग्रहने।।
होइ न पूर कमी कै कूरा। विधना देहिं भले धन पूरा।।
ओढ़इ धन धन रहइ बिछावन। मन तबहूं पर धन हड़पावन।।
धन सर्वस तिय यौनाचारा। सकल अवस्था सबै पियारा।।
इहि दुइ दोष न कलिक कलंका। आपन मांनु नाहि करु शंका।।
जौ वर्णाश्रम धर्म विचारा। सधा न करु तामस आहारा।।
अपनेन पांव कुल्हाड़ी मारी। दै कलि दोष न रहु चुप मारी।।
सकहिं सुधारि न जन अवतारी। जौ महकाल देइ हुंकारी।।
लाये भाव भगति मन मांही। जाइ दोष सब आप नशाहीं।।

शिव स्वभाव भव दोष निवारन। नाही करन मनुज संहारन।।
निज अवगून जांनु जन जोई। अब नहि करब मांनु मन सोई।।
तापर करहिं कृपा रुद्रानी। बल वर पाउ सो औढर दानी।।
कुमति निवारि सुमति दरसाइअ। आपु दास शिव लेहि बनाइअ।।
सुधरि सो आप सुधारै आना। हिंसा हीन सरल अभियाना।।
इहि विधि दूरि होहिं पिछ दोषा। बीते आयु किहे शिव होशा।।

विधि मायाबल चारि बड़, काम कोध मद लोभ।
साधे सुरता व्यापु तन, अन साधे मिलु क्षोभ।।46।।

काम क्रोध मद लोभ भिमाना। करइ नियंत्रित शिव तप ध्याना।।
मदिरा मांस मनो मद उद्रा। अति मति मैथुन संगति शूद्रा।।
भ्रात द्वेष गृह कलह कपाटा। जाति भेद जग टन्टा हाटा।।
लोक परिस्थिति विविध कुहासा। इहि सब जीवन हेतु विनाशा।।
इहि ते मुकुति शिवा शिव देहीं। नाम जापि जग भल फल लेहीं।।
जोगी तपसि विष्णु विधि तारत। दीन गृही शिव आपु उबारत।।
दूज देव नहि शिव समताई। पतित संभारन होन सहाई।।
जीवन गृही वर्ण आचारे। साधि जाइ बनि शिव परिवारे।।
शिव गुण महिमा सुर नर गावत। ठांव ठांव हित हेतु मनावत।।
शिव निहारु नहि जप तप ध्याना। बस शरणागत पद पहिचाना।।
पालक पोषक नाशक दूखा। ताप निवारि परोसत सूखा।।
मात पिता सम रक्षण कारी। गौरीपति कैलास विहारी।।
जे न लीन्ह शिव शिवा दुलारन। पाउ न मानव योनि दुबारन।।
करु फेरा पुनि घर चौरासी। सकै न मिलि कृपा अविनाशी।।
भगती मुकती शक्ती दाई। सकल धरोहर काशि गोसांई।।
इन्द्रिन्ह द्वार झरोखा नाना। देह रूप पर देव समाना।।
बिनु शिव पाइ करैं असुराई। लहहिं न आपन बुधि चतुराई।।
शिव आराधन लाभ अनेकन। कहेउ सूत इक दीखु विशेषन।।
मनुज पात्रता निज अनुसारे। सकहीं पाइ नियम संसारे।।
दूज दोष उपजइ अभिमाना। देइ बोरि जो पाउ खजाना।।
जापर कृपा शिवा शिव करहीं। मन अभिमान न तासु उभरहीं।।
नापु न पात्र देहिं अनकूता। सकु न संभारि आपु बल बूता।।
जापर कृपा पाउ सोइ सोई। मांगे मिलइ न पावइ रोई।।
दीन हीन शरणागत जानी। अति परसइ तेहि औढरदानी।।
कलि कलूष भव विपदा हारी। दीनदयाल दया धन धारी।।
जानि न जाइ ईश प्रभुताई। रचइ रंक केहि भूपति नांई।।

सुमति प्रेम सतकार जहं, प्यार प्रकाश मिठास।
रुचि तन्मयता संग बल, अन्तर सोह हुलास।।47।।
बढ़इ आयु आरोग्य धन, जे वर्णाश्रम साध।
जोरि उपासन योग जप, पाउ ईशता आध।।48।।
गांजा भांग धतूर फल, मादक द्रव्य चढ़ाइ।
न सोचइ केउ आपु मन, मोसे शिव प्रीताइ।।49।।
खाये पाये जौन जग, चलइ कुपथ बौराइ।
सुनि देखे दुख जौन देइ, सो शिव नाहि सुहाइ।।50।।
भले वेद विज्ञान बड़, पाउ लोक सम्मान।
वर्णाश्रम आचार बिन, हरखंइ न भगवान।।51।।

कहेउ सूत सुनु ऋषि परिवारा। वर्णाश्रम भव मोक्षाधारा।।
बार बार शिव शिवा बखाना। चारि रूप ता भिन्न विधाना।।
उमा महेश सजीवन मानी। ता महिमा मृत्युंजय खानी।।
काशी बास लीन्ह तेहि कारन। पालन वर्णाश्रम आचारन।।
सो मति नीति पखावत लोके। विधि विष्णु तक सो अवलोके।।
परखे सब संग एक उद्देशा। जौन चलाइ भवानि महेशा।।
ताते उतरु धरा सुरताई। वैभव स्वर्ग मिले सब ठांई।।
चलु सोई पथ वंश ऋषेशे। आप सुझायउ जौन महेशे।।

संयमता ते शक्ति मिलु, नियमितता ते नीति।
सत्य विकासन पाइ श्रम, शुभ ते शिव मन प्रीति।।52।।

ऋषियन्ह चाह सभा अनुसारे। सूत महामुनि वचन उचारे।।
जेतिक जीव जगत तन धारी। सत्य शिवा शिव तिन निरमारी।।
पर मानव ते बड़ अनुरागा। दइ निज शकती करहिं सुभागा।।
पक्षपात अस भा केहि कारन। एक स्वर पूंछ ऋषी तेहि ठारन।।
कारन कथन लगे मुनिराई। जोरि पानि निज शीश झुकाई।।
मानव तन सम न परकाया। नाही दूसर ब्रह्म बनाया।।
इन्द्रिन्ह सहित लोक कर करमा। ज्ञान विज्ञान सहित भव धरमा।।
चलु एतिक जो मानव साधे। लेई थामि स्वर्ग सुख कांधे।।
विधि अनमान मनुजता हीना। जे ते बास नारकी लीना।।
बुद्धि विमल कर करम कृपाना। गहिय सहज बनु ईश समाना।।
कुल समेत मानव कुल करनी। पाइ मीत आपन शिव बरनी।।
लोक मिलै जे आपु समाना। कहं के ताहि न आपुन्ह माना।।
मिलु जो मनुज पंथ विपरीते। करन्ह वधन विरचउं कछु नीते।।
भल अनभल कर कर्म नुसारे। प्रीति बैर चलु संग संभारे।।

मानव जाति करम अधिकारी। होत करम भल भव हितकारी।।
जे भव मीत सबै मन भावत। सुर नर मुनि सब प्रीति दिखावत।।
धन धर्मे कर्मे फल नाना। लह जग जीवन ईश विधाना।।
नर तन पाइ विषय रस सानी। भजा न हर तेहि देखि गलानी।।
कपड़ा कीट कांच किच साथे। जो गति होइ लगइ सो हाथे।।
दारिद कुमति अभाव अज्ञाना। जग बड़ दुख सम मिलै न आना।
सतसंग संयम सन्त सुजाना। देहिं सुधा रस हर दुख नाना।।
पर उपकार वचन मन काया। सहित क्षमा रस जिमे समाया।।
स्वारथ भूलि करइ परमारथ। मनुज देह गनु तासु यथारथ।।
पर सम्पदा विनाशै जोई। पाउ न जल मरने पल सोई।।
पूतन्ह पिण्ड दान सुख मूला। सकइ दुराइ न ता तन शूला।।
दुष्ट उदय जग पीर बढ़ावन। सुजन उदय पर पीर नशावन।।
सत्य अहिंसा सेवा करनी। नाव स्वरूप तारू वैतरनी।।

एक व्याधि दुख देत बहु, आलस व्याधिन्ह मूल।
महामोह जौ साथ लगु, दुःखे बूड़ सो कूल।।53।।

दंभ कपट मद मति अभिमाना। द्वेष ईर्ष्या तृष्णा साना।।
विषय मनोरथ तीनउ दोषा। जहं इत न तहं जीवन होशा।।
शायद कुछ दिन जियइ शरीरा। तौ संग शूल विषाद अधीरा।।
रोग दोष भव भूत पिशाचा। सहित दोष ग्रह सो जन नाचा।।
बसइ जासु तन मन अपराधा। नाही भगति शिवा शिव साधा।।
भटकन बनै कुमति उरगारी। पंथ विहीन जथा तिमिरारी।।
दुरगति तानुसार सहि नेके। रोइ बितावइ दिवस प्रत्येके।।
हिम ते प्रगट अनल कर जोई। तासु भजे दुख आउ न कोई।।
नीर बजाइ फरइ नभ फूला। जीव न सुख लह शिव प्रतिकूला।।
सुमति सुधा भगती अनुपाने। वैद्य श्रद्धा विश्वास समाने।।
जीव सजीवन स्वर्ग नुहारे। सब सुख पाउ बसै कोउ ठारे।।
व्यापइ न दूषित युग दोषा। सुखी पूतपय धर्म सकोषा।।
जासु मने शिव पद प्रीताई। भाव सनेह सुपावन ताई।।
सोई सर्वज्ञ गुणी सोइ ज्ञाता। सोइ महि पंडित ज्ञान विधाता।।
धर्म परायण सो कुल त्राता। भावी पीढ़ी तक सुख दाता।।
नीति निपुण सोइ परम सयाना। वेद शास्त्र सो जांनु पुराना।।
सो कवि कोविद सो रन धीरा। सन्त सुजन सो देव सुबीरा।।
धन्य धाम सो धरनी देशा। मिलइ सकुल जहं भगति महेशा।।
धन्य भूप साधक नीतिज्ञा। करहिं न जे शिव नीति अवज्ञा।।

धन्य सो धन प्रथम गति वोऊ। पुण्य सहित लगु शिव पद जोऊ।।
धन्य घरी सो जो सतसंगा। श्रवन समाइ कथा रस गंगा।।
तन मन मुख सो धन्य समेता। होहीं नमः शिवाय निकेता।।

तासु चरन शिर नाइ नित, करहुं अवसि प्रनाम।
मुकुति मिले या न मिलइ, मिलु कैलासे धाम।।54।।
देत थाह शिव न करहिं, लेत निकोलहिं चाम।
कुल समेत महिमा अतुल, लोके प्रिय अविराम।।55।।
जब जब बाढ़त पाप भव, अधरम बल अधिकात।
प्रगटत हरि कोउ रूप धरि, नाशन भू उतपात।।56।।
नराकार हरि कृष्ण बनि, भये द्वापर उत्पन्न।
कीन बाल लीला विविध, देखि लोग प्रसन्न।।57।।
कंस मारि पितु मातु कै, कारागार छुड़ाइ।
सीखी विद्या लोक हित, गृह सन्दीपनि जाइ।।58।।
दुष्ट दलत पुनि बनि गयो, आपु द्वारिकाधीश।
संयोगन ते ताहि को, परी जरूरत ईश।।59।।

यदपि कृष्ण सक्षम सब खानी। सकल समस्या कै समधानी।।
गुरु दक्षिणा दीन्ह जो सोई। तानुसार दइ सकइ न कोई।।
गुरू तनय मृतक चिरकाला। लाइ ढूढ़ि दीन्हेव नन्दलाला।।
निधने मातपिता सुत जितने। जीवित लाइअ दीन्ह कृष्ण ने।।
नाना अचरज लोक दिखावा। देखि लोक जन ब्रह्म बतावा।।
सोइ कृष्ण कामना पूते। हेतू करिय जुगुति अनकूते।।
भै न पूर तनय मनसाई। प्रिया सलाहन तपन्ह तकाई।।
काज नुसार समय अनुकूले। लगु हिम थल भल जोहर शूले।।
चलि भै कृष्ण हिमालय ओरी। ठांव विलोकत ऋषियन्ह खोरी।।
एक से एक मनोहर ठांऊ। अवलोकत चलि पंथ अगाऊ।।
आगु दीखु इक पावन घेरा। करत जहां उपमन्यु बसेरा।।
ठाढ़ विलोकिय आश्रम द्वारे। लाग पियार रुकन्ह इहि ठारे।।
आयसु द्वार करिय प्रवेशा। मुनि पद नमत कथिय पुर देशा।।
परिचय गोत्र अत्रि मुख गावा। आत्रेय परिवार बतावा।।
कृष्ण नाम जग मोहि पुकारत। आउ मुनीश परे दुख आरत।।
पुत्र कामना चाह समेते। हेतु मुनीश आउ इहि खेते।।
सुनि वाणी मुनि गात निहारी। वचन विचार वेश बल तारी।।
दिव्य दृष्टि मुनिवर पहिचाने। कह तुम बसहु आश्रम थाने।।
पूरण करब मनोरथ मनसा। दूरि दुराइ सकल मन तमसा।।

उपमन्यु आयसु गहिय, लीन्ही कृष्ण बसेर।
रीति नीति अनुसार तहं, गयउ कृष्ण बनि चेर।।60।।
ब्रह्म विद्या पोथी समे, मानिय कृष्ण शरीर।
गुरू नुशासन आपु करि, सीख लीन्ह मन धीर।।61।।
शिव महिमा उपमन्यु कह, नीति निदेश विचार।
ईश द्वारिका ताहि बल, खल वृत्ति करिय संहार।।62।।
रघुपति थापिय लिंग शिव, करिय असुर कुल नाश।
ध्यान ज्ञान शिव भक्ति बल, पूरक वसुधा आश।।63।।

नमः शिवाय सोमाय सगणाय ससूनवे।
प्रधान पुरुषेशाय सर्गस्थित्यन्तहेतवे।।1।।
शक्तिरप्रतिमा यस्य ह्यैश्वर्यं चापि सर्वगम्।
स्वामित्वं च विभुत्वं च स्वभावं सम्प्रचक्षते।।2।।
तमजं विश्व कर्माणं शाश्वतं शिवमव्ययम्।
महादेवं महात्मानं व्रजामि शरणं शिवम्।।3।।
सर्वतः पाणिपादोऽयं सर्वतोऽक्षिशिरोमुखः।
सर्वतः श्रुतिमाँल्लोके सर्वमावृत्य तिष्ठति।।4।।
सर्वेन्द्रियगुणाभासः सर्वेन्द्रियविवर्जितः।
सर्वस्य प्रभुरीशानः सर्वस्य शरणं सुहृत्।।5।।
अचक्षुरपि यः पश्यत्यकर्णोऽपि श्रृणोति यः।
सर्वंवेत्ति न वेत्तास्य तमाहुः पुरुषं परम्।।6।।
अणोरणीयान्महतो महीयानयमव्ययः।
गुहायां निहितश्चापि जन्तोरस्य महेश्वरः।।7।।
नमः समस्तसंसार चक्र भ्रमण हेतवे।
गौरीकुचतट द्वन्द्व कुंकमांकिततवक्षसे।।8।।

उपमन्यु शिवपद नमत, नाना विनय समेत।
लगे बतावन कृष्ण को, महिमा कृपानिकेत।।64।।

मुनि उपमन्यु परम गुण शीला। बड़ शिव भगत धरम धन खीला।।
कृष्ण योग नहि पर प्रभुताई। मुनिवर कथन आपु मन लाई।।
मति अनुसार रहा जेस जाना। राखि श्रद्धा तेहि भांति बखाना।।
अन्तर प्रीति ओनाने केशव। सथिर शरीर सुशान्ति मनेभव।।
मुनिवर सीख ओनान जे सीखा। लोक सुधारस जीवन चीखा।।
कह उपमन्यु सुनहु असुरारी। पूत न मिलु तुम तबहिं पधारी।।
बनेउ नरेश नगर प्रतिपाला। पूत न मिलु मद मनुज रसाला।।
यदपि जात धन बल अधिकाई। प्रज्ञा परति प्रदूषण छांई।।

जावत द्विनि मानव प्रभुताई। जौ नरेश मन लोभ उथाई।।
इहि ते जेतिक नगर नरेशा। रह पद पूजत देव ऋषेशा।।
काज सुपावन चार विचारे। परहित भाव जासु व्यवहारे।।
गनु सो तन ब्रह्म विद्या पोथी। लोक महेश सिखावन सो थी।।
जेहि विधि जाइ लोक पशुताई। पशुपति सोइ बताउ बताई।।
कह केशव मुनिवर केहि कारन। पशुपति गये कहा जग तारन।।
जे करहीं भव पशुता छारा। पशुपति कहि तेहि लोक पुकारा।।
काया कल्प होइ जेहि ढंगे। कथिय मुनीश्वर सोइ प्रसंगे।।
मिलइ ज्ञान जेस भल परिवारा। धन सुत लाभ अनेक प्रकारा।।
रूप शिवा शिव शास्त्र बखाना। व्यापक सर्व रूप जग नाना।।
पालक प्रणव प्राण स्वरूपा। धर्म कर्म जो शिव अनुरूपा।।
ज्ञान उपासन ध्यानाराधन। भाखा सकल विवेचन साथन।।
चिन्तन पूजन भजन महत्ता। मानत काह शिवा शिव सत्ता।।
अक्षर पांच शकति प्रभुताई। पुनि वर्णाश्रम प्रभुता गाई।।
नारी धर्म देह कर करनी। समताई गाई जेस धरनी।।
ऋषि अक्षर मंतर अंगन्यासा। बीज शकति विद्या प्रकाशा।।
छन्द देवता शास्त्र निदेशा। ब्रह्म विद्या कै मूल महेशा।।
मात पिता गुरु मति अनुरागा। भल साधे बनु जनम सुभागा।।
शिक्षा दीक्षा ऋषि व्यवहारा। हेतु प्रज्ञा सात्विक आहारा।।
समयाचार समय उपयोगा। भल साधे बनु जीवन योगा।।
जीवन संस्कार सदचारा। गनु योगासन देव प्रकारा।।
दैहिक शोधन व्रत उपवासा। जप तप करत तेज उदभासा।।
यज्ञादिक नित क्रिया पूजन। ब्रह्म बल देत न इहि सम दूजन।।

शिव भगती प्रवेश पथ, पाइ कृष्ण हरखाइ।
मुनि अशीश बल सीख लै, आपु योग तप ध्याइ।।65।।
पूत कामना साधना, हेतु तपेउ सग्लग्न।
गुरु कृपा ऐसन भवा, आउ न कोउ विध्न।।66।।
दिन थोरे केशव तपे, कुल समेत शिव आइ।
कह बड़ तप वर मांगु बड़, अस मृदु बैन सुनाइ।।67।।

केशव कृष्ण द्वारिकाधीशा। मुखे विलोकि छटा गौरीशा।।
गौरि गणेश महेश षडानन। बाल रूप सोहत दोउ साथन।।
दरस अइस जग न केउ पावा। भले करत तप उमर गंवावा।।
केशव कृष्ण विलोकत जैसे। दीखु न ऋषि मुनि कहुं कोउ ऐसे।।
भाव उमापति अस प्रगटाऊ। जेस कोउ आपन लग कोउ आऊ।।

सजले नैन रुकेउ न रोके। निरनिमेष जब कृष्ण विलोके।।
नाइ शीश कर जोरि नमामत। दास दीन सम केशव लागत।।
जयति शिवा शिव साम्ब सदाशिव। जयति सदाशिव साम्ब सदाशिव।।
विनय सुनावत नाना भांती। कह प्रभु देखि जुड़ानी छाती।।
केशव भाव सुने मृदु बानी। हरखे कुल संग औढरदानी।।
कर परसत वर भाखु महेशा। होहीं पूरण चाह विशेषा।।
नामक साम्ब पूत वरदाना। तेजवान तन बड़ बलवाना।।
सकल मनोरथ पूरणकारी। असवर दीन्ह देव त्रिपुरारी।।
पाइ पूत वर कंस निकंदन। जोरि पानि पुनि पुनि करि वदंन।।
कहिअ कृष्ण प्रभु अन्तरयामी। रहत ठांव सब जानत खामी।।
पर बिनु ज्ञान ध्यान थल शकती। बनन्ह परत मोहिं ढेर मेनहती।।
दाता देन न तुम सम औरे। इहि कारण आयउं इहि ठौरे।।
आइ द्वार पायउं कुल दरसन। कहत अइस नमने कुल चरनन।।
धन्य देव केशव असुरारी। तप थोरे पायउ वर भारी।।
तंत्र मंत्र साधे ऋषि करनी। मिलहि विष्णु विधि भाखइ धरनी।।

भक्त वत्सला जग जननि, बोली आशिष बैन।
मोसम मांगहु और कछु, दिहे बिना न चैन।।68।।
प्रेम परस्पर अपनेउ सम, दूजे एक दिखान।
दरस परस वरदान वच, देखे लाग समान।।69।।

नावत शीश करत पद नमना। वचन सनेहन भाखिय किशना।।
जौ प्रसन्न मोपर सब खानी। जगत जननि जगदम्ब भवानी।।
जौ तप मोर तुमहि प्रिय लागाा। तौ करु इतिक दियन्ह अनुरागा।।
प्रथम सुमति बल ब्रह्म समाना। संग धन विभव लोक हित साना।।
गो द्विज सन्त प्रीति सेवकाई। ताते नाहि द्वेष मन लाई।।
जे जग मीत नात पितु माता। रहहिं सुखी हम से कुल भ्राता।।
अधम दुराइ करउं हित लोका। मोसम पाउ न कोउ दुख शोका।।
साधु सन्यासि अतिथि पद सेवा। भावइ करन्ह मानि कुल देवा।।
सुर इन्द्रादिक जित परिवारा। होहिं जगत जे मनुज उदारा।।
तुष्टि पुष्टि करि समरथ वाना। हम उन उनहुं मोहि भल माना।।
यज्ञादिक सुर व्रत नुष्ठाने। हम करि देश करइ हर थाने।।
पावन भोजन नीति पुनीता। इन ते न छूटइ मन प्रीता।।
सब से प्रेम सुखी सब हमसे। शिव सुत दीन्ह चाह इत तुमसे।।
सोहइ सकल सुमंगल भवने। विनवउं देहिं तुम्हारउ ललने।।
इहि विधि विनय वचन अनुरागे। शिव कुल ते केशव हरि मांगे।।

कृष्ण मांग सुनि शैल कुमारी। लगु विस्मय पर सब स्वीकारी।।
परसब मांग नुसारेउ तोहूं। आज आगु मांगेउ तुम जोहू।।
कराशीश वाणी कल्यानी। कुल समेत दीन्ही सुखदानी।।
वर अभीष्ट शिव कृष्ण सुनाये। कह राखेउ जीवन मोहि ध्याये।।
अस कहि भे सब अन्तरध्याना। बोलेउ जय केशव भगवाना।।
जयति शिवा शिव वचन उचारे। उपमन्यु ओरी कृष्ण पधारे।।
करत नमन कह आप हवाला। रहा मिला जो वर ततकाला।।
हरि वर सुनि मुद भयउ मुनीश्वर। कह शिव सम को दानी ईश्वर।।
जप तप ध्यान कथा व्रत साधे। आउ न ता जीवन कछु बाधे।।
सत्य यज्ञ तप त्रय प्रभुताई। ईश द्वारिका जग पसराई।।

सुनि शिव महिमा तप करिय, भयो मनोरथ पूर।
नमत कृष्ण उपमन्यु पद, सहजे करि दुख दूर।।70।।
धाम द्वारिका आइ पुनि, बिगताये कछु काल।
भवा तनय जमुवन्ति के, घर पुर भवा निहाल।।71।।
कीन स्मरण शंभु वर, साम्ब धरावा नाम।
आगु भवा बलवान बड़, करइ प्रशंसित काम।।72।।
सत्य बैन शकती सकल, सत्य धर्म बतलाइ।
दूज यज्ञ नहि सत्य सम, आपु कृष्ण सो गाइ।।73।।

सत्यमेव परं ब्रह्म सत्यमेव परं तपः।
सत्यमेव परो यज्ञः सत्यमेव परं श्रुतम्।।1।।
सत्यं सुप्तेषु जागर्ति सत्यं च परमं पदम्।
सत्येनैव धृता पृथ्वी सत्येसर्वं प्रतिष्ठितम्।।2।।
तपो यज्ञश्च पुण्यं च देवर्षिपितृपूजने।
आपो विद्या च ते सर्वे सर्वं सत्ये प्रतिष्ठितम्।।3।।
सत्यं यज्ञस्तपो दानं मंत्रा देवी सरस्वती।
ब्रह्मचर्यं तथा सत्यमोंकारः सत्यमेव च।।4।।
सत्येन वायुरभ्येति सत्येन तपते रविः।
सत्येनाग्निर्दहति स्वर्गः सत्येन तिष्ठति।।5।।
पालनं सर्व वेदानां सर्वतीर्थावगाहनम्।
सत्येन वहते लोके सर्वमाप्नोत्यसंशयम्।।6।।
अश्वमेधसहस्रं च सत्यं च तुलया धृतम्।
लक्षाणि क्रतवश्चैव सत्यमेव विशिष्यते।।7।।
सत्येन देवाः पितरो मानवोरगराक्षसाः।
प्रीयन्ते सत्यतः सर्वे लोकाश्च सचराचराः।।8।।

सत्य माहुः परं सत्यमाहुः परं पदम्।
सत्यमाहुः परं ब्रह्म तस्मात्सत्यं सदावदेत्।।9।।
सत्य प्रीति जेहि संग लग, सकल सिद्धि ता साथ।
स्वर्ग सुधारस ताहि भव, मिलु कह गोपी नाथ।।74।।
कृष्ण भले भगवान रह, पर मानव अनुहार।
शिव तप करि लीन्हेव सुवर, उपजा भल परिवार।।75।।
ज्ञान रूप शिव नयन भव, ज्योति रूप जग गात।
लिंग रूप सो लोक ब्रह्म, प्रनवहुं सन्ध्या प्रात।।76।।

जाहि जरूरत परु जग जैसे। जाइ लागि शिव चरनेउ कैसे।।
पुरवहिं शंभु तासु अभिलासा। भरा प्रमाण वेद इतिहासा।।
शिव तप ढेर थोर कोउ खानी। दइ सकु भल कोउ लोटा पानी।।
विफल न होत पुरावत आशा। दीन दयाल जो काशी बासा।।
अन्तर नेह सुपावन करनी। पाइअ आवत धाइ सो धरनी।।
शिव पूजा विधि विविध प्रकारा। लह फल अदभुत गांव गंवारा।।
जाइ सो बनि सहजे फलदाई। दीखु नयन सो चहत बताई।।
वरनौं एक दिखा इतिहासा। परिचय जौन देइ शिवदासा।।
जनपद सुल्ताने पुर मांही। अतरसुमां इक गांव सुहाहीं।।
बसहिं तहां सोमन शिवनाथा। रह शिव भगति प्रखर मन माथा।।
करन न जानत पूजन ध्याना। हीन जाप तप काज किसाना।।
पर मन सोमन भगति भरोसे। नमः शिवाय भजत तन पोषे।।
भाव भगति रह दूज न संगा। एक श्रद्धा विश्वास अभंगा।।
गृही आश्रम तानेउ बानेउ। इहि विधि सोमन दिन अधियानेउ।।
बिनु सन्तान भवन रह सूना। सोच करत कछु नाहि अगूना।।
सन्तति तबहुं न दीन्ह विधाता। इहि दुःख शोक जात दिनराता।।
कर बड़ जुगुति उबार न पावा। दिन दिन सो दुख बाढ़त आवा।।
जब जाना दुःख होइ न अन्ता। भयउ आश्रित तब ऋषि सन्ता।।
एक नाहि बहुतन ते बूझा। सका न मिलि कतहूं भल सूझा।।
भा विश्वास न बनु सन्तानी। आपु मानि लेइ पातक खानी।।
पर सन्तति पीरा मन सानी। लगे बितावन निज जिन्दगानी।।
मन शिव भगति और अधिकाई। तनय आश गै पर निज तांई।।
भगत पीर शिव कबहुं न देखा। देहिं मुकुति कोऊ फन्दा रेखा।।
पशुपति पाश छुड़ावत सगरे। नाहि निहारत अगरे पछरे।।

शिव भगती प्रेरन बनिय, शिव लिंग थापन्ह ताहि।
मनहुं तर्क बहु विधि बनेउ, अन्तिम निर्णय याहि।।77।।

अवसि करब शिवलिंग सथापन। तनय बजाय गनब शिव आपन।।
कुल उपरोहित लाउ बुलाई। शिव मन्दिर साइत पुछवाई।।
शुभ तिथि वार नखत भल मासे। शिव घर विरंचिय सोमन दासे।।
थापन्ह शिव लिंग समय सुहाने। परम मुदित भै दोऊ प्राने।।
काशी जाइ लिंग सो छाना। सकैं थापि जो गृही किसाना।।
लीन्ह लाइ सो शिव तन मानी। पूजिय पाख दिवस विधि सानी।।
पाइ समय शुभ सो लिंग थापा। नमः शिवाय करत नित जापा।।
लिंग थापन दिन मानेउ वैसे। पाये पूत मगन जग जैसे।।
प्रकरण पर्व धरम अरु दाना। करि सोमन जो रूप महाना।।
छोटका नाम भार्या संगे। सेइअ शिवलिंग दै जल गंगे।।
गो द्विज भ्रात बन्धु परिवारा। सबै कराइ देव आहारा।।
पूजन पर्व समापन पाछे। करहीं शिव पूजन विधि आछे।।
लिंग सोमेश्वर आपु जो थापा। ताते सोमन भगति अमापा।।
आपु भगत जेस पत्नी दूना। शिव श्रद्धा पर सुत सुख सूना।।
भगत पीर लखि भयउ दुखारी। सहित उमाशंकर त्रिपुरारी।।
दीन्ह तनय वर विश्व विलोकेउ। आपु दुराइ गयउ दुःख शोकेउ।।
जनता जगत मुखे कहि आवा। अस शिव कृपा नाहि कोउ पावा।।
जेस सोमन सोमेश्वर पूजे। तेस फल पाउ नाहि कोउ दूजे।।
प्रभुता बूझि भगति अधिकाई। भगत भवन नित भजन सुनाई।।
राम जनम जेस क्रतु फल कारण। दास जनम कृपा जगतारन।।
शिव महिमा प्रभुता पहिचानी। होहीं तनय सबै मन मानी।।
निज कुल इष्ट देव करि ध्याना। लोग विचारहिं भांतिय नाना।।
शिव कृपा बरसइ जंह चल के। होहिं मनोरथ पूरण सबके।।
सोमन टोला भवन मझारे। जांही नमः शिवाय उचारे।।

समय मास नव पूर भै, भयउ तनय उत्पन्न।
सोमेश्वर महिमा निरखि, सोमन पुर प्रसन्न।।78।।

जातक कर्म गृही संस्कारा। भा सब पूरन मति अनुसारा।।
नाम करण अवसर दिन आये। गयो पुरोहित भवन बुलाये।।
कारन कृपा लगन अनुसारे। कहेउ पुरोहित आपु विचारे।।
शिशु शिव सेवी बनइ अगाड़ी। शिव कृपा बा लागि पिछाड़ी।।
इहि ते नाम राखु शिवदासा। जेहि ते बनु शिव भगति प्रकाशा।।
भवा समर्थन सब स्वीकारा। नाम गवा शिवदास पुकारा।।
शब्द नाद स्वर भव प्रभुताई। ब्रह्म रूप कहि जग गोहराई।।
शब्द नाद अपनेउ परकारे। बनिय प्रभावि विदित संसारे।।

नाद प्रभाव गात शिवदासे। भगति शिवा शिव पाउ विकासे।।
बचपन जीवन नाम नुसारा। सहित आचरण भा व्यवहारा।।
भाव विचार नीति कलिघाती। चलि शिवदास साधि दिनराती।।
उत पितु मातु मनावहिं देवा। रक्षण तनय हेतु महादेवा।।
जेहि विधि होइ ललन कल्याना। सो साधहिं राखहिं मन ध्याना।।
मनहिं बूझि सोमेश्वर माया। बाल निहारि रहे मुद काया।।
दोष दुरानेउ निःसन्ताना। करहिं सतत शिव महिमा गाना।।
होन लगे शिवदास सयाने। शिव पद प्रेम मनो मन साने।।

अल्पकाल विद्या पढ़िय, ज्ञानवती मिलु नारि।
तीनि तीनि तनया तनय, विधना दीन्ह विचारि।।79।।
दूध पूत धन धर्म ते, भा शोभित परिवार।
सुभल सकुल शिव भक्तिबल, सबके मने पियार।।80।।
श्रीराम ऋषि चरन गहि, भये दीक्षित शिवदास।
सबल विमल निर्मल भगति, उपजा उर प्रकास।।81।।
श्रद्धा विनय सतभाव रखि, कथा अंश लिखि थोरि।
उमानाथ रक्षण करहु, मांगहु नित करजोरि।।82।।
जहं काशीपति करि कृपा, तहां न भय दुख आउ।
जौ भय संशय जाइ नहि, तौ इहि विनय सुनाउ।।83।।

सौराष्ट्रे सोमनाथं च श्री शैले मल्लिकार्जुनम्।
उज्जयिन्यां महाकालमोंकारममलेश्वरम्।।1।।
परल्यां वैद्यनाथं च छाकिन्यां भीमशंकरम्।
सेतुबन्धे तु रामेशं नागेशं दारुकावने।।2।।
वाराणस्यां तु विश्वेशं त्र्यम्बकं गौतमीतटे।
हिमालये तु केदारं घुश्मेशं च शिवालये।।3।।

हे चन्द्रचूड मदनांतक शूलपाणे,
स्थाणो गिरीश गिरिजेश महेश शम्भो।
भूतेश भीतभयसूदन मामनाथं,
संसारदुःखगहनाज्जगदीश रक्ष।।1।।
हे पार्वती ह्रदयबल्लभ चन्द्रमौले,
भूताधिप प्रमथनाथ गिरीशजाप।
हे वामदेव भवरुद्र पिनाकपाणे,
संसार दुःख गहनाज्जगदीश रक्ष।।2।।
सत्येन देवाः पितरो मानवोरगराक्षसाः।
प्रीयन्ते सत्यतः सर्वे लोकाश्च सचराचराः।।8।।

हे नीलकण्ठ वृषभध्वज पंचवक्त्र,
लोकेश शेषवलय प्रमथेश शर्व।
हे धूर्जटे पशुपते गिरिजापते मां,
संसार दुःखगहनाज्जगदीश रक्ष।।3।।
हे विश्वनाथ शिवशंकर देवदेव,
गंगाधर प्रमथनायक नन्दिकेश।
वाणेश्वरान्धकरिपो हर लोकनाथ,
संसार दुःख गहनाज्जगदीश रक्ष।।4।।
वाराणसीपुरपते मणिकर्णिकेश,
वीरेश दक्षमखकाल विभो गणेश।
सर्वज्ञ सर्वह्रदयैक निवास नाथ,
संसार दुःखगहनाज्जगदीश रक्ष।।5।।
श्रीमन् महेश्वर कृपामय हे दयालो,
हे व्योमकेश शितिकण्ठ गणाधिनाथ।
भस्मांगरागनृकपालकमालकेतो,
संसार दुःखगहनाज्जगदीश रक्ष।।6।।
कैलासशैलविनिवास वृषाकपे हे,
मृत्युंजय त्रिनयन त्रिजगन्निवास।
नारायणप्रिय मदापह शक्तिनाथ,
संसार दुःख गहनाज्जगदीश रक्ष।।7।।
विश्वेश विश्वभवनाशक विश्वरूप,
विश्वात्मक त्रिभुवनैकगुणाभिवेश।
हे विश्वबन्धु करुणामय दीनबन्धो,
संसार दुःखगहनाज्जगदीश रक्ष।।8।।
गौरीविलास भवनाय महेश्वराय,
पंचाननाय शरणागतरक्षकाय।
शर्वाय सर्वजगतामधिपाय तस्मै,
संसार दुःखगहनाज्जगदीश रक्ष।।9।।

विनय देवता लोक शिव, शक्ति साधना हेत।
तानुसार जग जांनु जे, कथ फल पाउ निकेत।।84।।

लोक जनम जीवन शिवदासा। सब तजि एक महेश्वर आसा।।
अन्तर चाह करन्ह गुरु काजा। रचन्ह चहत तेस लोक समाजा।।
ईश गुरू माता पितु नीती। आयसु जौन ताहि ते प्रीती।।
इहि विधि चाराचार बनावत। लिखि पढ़ि देव कथा गुण गावत।।
पाइ कृपा शिव महिमा गावा। मति अनुरूप जौन बनि पावा।।
उतरै आप सहित परिवारा। जे शिव शरने जनम गुजारा।।

शिव मति रीति नीति पकरावत। सूत महामुनि सभा लगावत।।
जीवन विद्या प्रज्ञा ज्ञाना। ऋषिन्ह सुनाइ लोक अनुदाना।।
कथन करिय शिव औढरदानी। तासु दान सब ढंग बखानी।।
दुष्ट संहारत विपति निवारत। शरने पाइ बैन सुनि आरत।।
सकल सुखद भव पाप निवारी। रोग दोष सर्वस भय हारी।।
सकहीं पाइ मनुज सुरताई। भजे शिवा शिव मुक्ती आई।।

शिव स्तुति रक्षामयी, नाशक सकल कलेश।
लोक मनोरथ पूर करु, दीन्ह सूत उपदेश।।85।।
देव रूप शिव छन्द नाद ते, ऋषियन्ह विनय सुनाइ।
करै पाठ जग ताहि जे, ता शिव होइ सहाइ।।86।।

चरितं देवदेवस्य महादेवस्य पावनम्।
अपारं परमोदारं चतुर्वर्गस्य साधनम्।।1।।
गौरीविनायकोपेतं पंचवक्त्रं त्रिनेत्रकम्।
शिवं ध्यात्वा दशभुजं शिवरक्षां पठेन्नरः।।2।।
गंगाधरः शिरः पातु भालमर्धेन्दुशेखरः।
नयने मदन ध्वंसी कर्णो सर्वविभूषणः।।3।।
घ्राणं पातु पुरारातिर्मुखं पातु जगत्पतिः।
जिह्वां वागीश्वरः पातु कन्धरां शितिकन्धरः।।4।।
श्रीकण्ठः पातु मे कण्ठं स्कन्धौ विश्वधुरन्धरः।
भुजौ भूभारसंहर्ता करौ पातु पिनाकधृक्।।5।।
हृदयं शंकरः पातु जठरं गिरिजापतिः।
नाभिं मृत्युंजयः पातु कटी व्याघ्रजिनाम्बरः।।6।।
सक्थिनी पातु दीनार्तशरणागतवत्सलः।
ऊरू महेश्वरः पातु जानुनी जगदीश्वरः।।7।।
जंघे पातु जगत्कर्त्ता गुल्फौ पातु गणाधिपः।
चरणौ करुणासिन्धुः सर्वांगानि सदाशिवः।।8।।
एतां शिवबलोपेतां रक्षां यः सुकृती पठेत्।
स भुक्त्वा सकलान् कामान् शिवसायुज्यमाप्नुयात्।।9।।
ग्रहभूतपिशाचाद्यास्त्रैलोक्ये विचरन्ति ये।
दूरादाशु पलायन्ते शिवनामाभिरक्षणात्।।10।।
अभयंकरनामेदं कवचं पार्वतीपतेः।
भक्त्या विभर्त्ति यः कण्ठे तस्य वश्यं जगत्त्रयम्।।11।।
जराभयकरो यज्वा सर्वदेवनिषेवितः।
मृत्युंजयो महादेवः प्राच्यां मां पातु सर्वदा।।12।।

दधानः शक्तिमभयां त्रिमुखः षड्भुजः प्रभुः।
सदाशिवोऽग्निरूपी मायानेय्यां पातु सर्वदा।।13।।
अष्टादशभुजापेतो दण्डाभयकरो विभुः।
यमरूपी महादेवो दक्षिणस्यां सदाऽवतु।।14।।
खड्गाभयकरो धीरो रक्षोगणनिषेवितः।
रक्षोरूपी महेशो मां नैऋत्यां सर्वदाऽवतु।।15।।
पाशाभयभुजः सर्वरत्नाकरनिषेवितः।
वरुणात्मा महादेवः पश्चिमे मां सदाऽवतु।।16।।
गदाभयकरः प्राणनायकः सर्वदागतिः।
वायव्यां मारुतात्मा मां शंकरः पातु सर्वदा।।17।।
शंखाभयकरस्थो मां नायकः परमेश्वरः।
सर्वात्मान्तरदिग्भागे पातु मां शंकर प्रभुः।।18।।
शूलाभयंकरः सर्वविद्यानामधिनायकः।
ईशानात्मा तथैशान्यां पातु मां परमेश्वरः।।19।।
ऊर्ध्वभागे ब्रह्मरूपी विश्वात्माऽध्रः सदाऽवतु।
शिरो मे शंकरः पातु ललाटं चन्द्रशेखरः।।20।।
भ्रूमध्यं सर्वलोकेशस्त्रिनेत्रोऽस्तु लोचने।
भ्रूयुग्मं गिरिशः पातु कर्णौ पातु महेश्वर।।21।।
नासिकां मे महादेव ओष्ठौ पातु वृषध्वजः।
जिह्वां मे दक्षिणामूर्तिदन्तान् मे गिरिशोऽवतु।।22।।
मृत्युजयो मुखं पातु कण्ठं मे नागभूषणः।
पिनाकी मत्करौ पातु त्रिशूली हृदयं मम।।23।।
पंचवक्त्रः स्तनौ पातु उदरं जगदीश्वरः।
नाभिं पातु विरुपाक्षः पार्श्वं मे पार्वतीपतिः।।24।।
कटिद्वयं गिरीशो मे पृष्ठं मे प्रमथाधिपः।
गुह्यं महेश्वरः पातु ममोरू पातु भैरवः।।25।।
जानुनी मे जगद्धर्ता जंघे मे जगदम्बिका।
पादौ मे सततं पातु लोकवंद्यः सदाशिवः।।26।।
गिरीशः पातु मे भार्यां भवः पातु सुतान् मम।
मृत्युंजयो ममायुष्यं चित्तं मे गणनायकः।।27।।
सर्वांग मे सदा पातु कालकालः सदाशिवः।
एतत्ते कवचं पुण्यं देवतानां च दुर्लभम्।।28।।
मृतसंजीवनं नाम्ना महादेवेन कीर्तितम्।
सहस्रावर्तनं चास्य पुरश्चरणमीरितम्।।29।।
यः पठेच्छृणुयान्नित्यं श्रावयेत् सुसमाहितः।
सोऽकालमृत्युं निर्जित्य सदायुष्यं समश्नुते।।30।।

हस्तेन वा यदा स्पृष्ट्वा मृतं संजीवयत्यसौ।
आधयो व्याधयस्तस्य न भवन्ति कदाचन।।31।।
कालमृत्युमपि प्राप्तमसौ जयति सर्वदा।
अणिमादिगुणैश्वर्यं लभते मानवोत्तमः।।32।।
युद्धारम्भे पठित्वेदमष्टाविंशतिवारकम्।
युद्धमध्ये स्थितः शत्रुः सर्वैर्न दृश्यते।।33।।
न ब्रह्मादीनि चास्त्राणि क्षयं कुर्वन्ति तस्य वै।
विजयं लभते देवयुद्धमध्येऽपि सर्वदा।।34।।
प्रातरुत्थाय सततं यः पठेत् कवचं शुभम्।
अक्षय्यं लभते सौख्यमिह लोके परत्र च।।35।।
सर्वव्याधिविनिर्मुक्तः सर्वरोगविवर्जितः।
अजरामरणो भूत्वा सदा षोडशवार्षिकः।।36।।
विचरत्यखिलाँल्लोकान् प्राप्य भोगांश्च दुर्लभान्।
तस्मादिदं महागोप्यं कवचं समुदाहृतम्।
मृतसंजीवनं नाम्ना दैवतैरपि दुर्लभम्।।37।।
जय विश्वैकवन्द्येश जय नागेन्द्रभूषण।
जय गौरीपते शम्भो जय चन्द्रार्धशेखर।।38।।
जय कोट्यर्कसंकाश जयानन्तगुणश्रय।
जय भद्र विरूपाक्ष जयचिन्त्य निरंजन।।39।।
जय नाथ कृपासिन्धो जय भक्तार्तिभंजन।
जय दुस्तरसंसारसागरोत्तारण प्रभो।।40।।
प्रसीद मे महादेव संसारार्तस्य खिद्यतः।
सर्वपापक्षयं कृत्वा रक्ष मां परमेश्वर।।41।।
महादारिद्र्मग्नस्य महापापहतस्य च।
महाशोकनिविष्टस्य महारोगातुरस्य च।।42।।
ऋणभारपरीतस्य दह्यमानस्य कर्मभिः।
ग्रहैः प्रपीड्यमानस्य प्रसीद मम शंकर।।43।।
दरिद्रः प्रार्थयेद् देवं प्रदोषे गिरिजापतिम्।
अर्थाढ्यो वाऽथ राजा वा प्रार्थयेद् देवमीश्वरम्।।44।।
दीर्घमायुः सदारोग्यं कोशवृद्धिर्बलोन्नतिः।
ममास्तु नित्यमानन्दः प्रसादात्तव शंकर।।45।।
शत्रवः संक्षयं यान्तु प्रसीदन्तु मम प्रजाः।
नश्यन्तु दस्यवो राष्ट्रेजनाः सन्तु निरापदः।।46।।
दुर्भिक्षमारिसंतापाः शमं यान्तु महीतले।
सर्वसस्यसमृद्धिश्च भूयात् सुखमया दिशः।।47।।

एवमाराधयेद् देवं पूजान्ते गिरिजापतिम्।
ब्राह्मणान् भोजयेत् पश्चाद् दक्षिणाभिश्च पूजयेत्।।48।।
इमां नारायणः सवप्ने शिवरक्षां यथाऽऽदिशत्।
प्रातरुत्थाय योगीन्द्रो याज्ञवल्क्यस्तथाऽलिखत्।।49।।
सर्वपापक्षयकरी सर्वरोगनिवारिणी।
शिवपूजामयाख्याता सर्वाभीष्टफलप्रदा।।50।।

शिव रक्षा संजीवनी, स्तुति व्रत प्रदोष।
सहित श्रद्धा जे पाठ करु, रहहीं शंभु भरोस।।87।।
लहहिं लोक कल्याण सब, संग मुक्ती आनन्द।
तापर सपनेउ व्यापु नहि, कौनव दुख कलिफंद।।88।।

जय भूर्भुवः स्वः तरुस्तार। जय सपिता प्रपिता मह उदार।।
जय जयति सतपथाचार ज्ञान। जय प्राणद प्रणवहु प्रण प्रमान।।
जय यज्ञ यज्ञपति यज्जुरूप। यज्ञांग यज्ञ वाहन अनूप।।
जय जयति यज्ञभृत यज्ञकारि। जय यज्ञी यज्ञे लोक तारि।।
जय जयति यज्ञ साधन परेश। जय यज्ञ अन्त जय कृत महेश।।
जय प्राण निलय जय मान धर्त। जय जयति प्राण जीवन सुकर्त।।
जय तत्व तत्व वित तुम अजन्म। जय जरातिगातम मृत्यु मन्म।।
जय जयति सनातन महा योगि। जय स्वस्ति रूप सुख लोक भोगि।।
जय अदभुत लोकन अधिष्ठान। जय जयति पुरातन तम हतान।।
जय जयति पापनाशन क्षितीश। जय जयति गंग धारी महीश।।
जय विश्वरूप प्रज्ञा वतार। जय भूत भव्य जय वषट्कार।।
जय भूत कृतहु जय भूत भृत्त। जय भाव जयति भूतात्मनित्त।।
जय जयति भूत भावन परेश। जय भूत आत्म परमात्म वेश।।
जय मुक्तन के गति परमनाथ। जय अव्ययकृत भगतन सनाथ।।
जय पुरुष साक्षि क्षेत्रज्ञ वीर। जय अक्षर योग स्वरूप धीर।।
जय योग विदन के हो नियन्त। परधान पुरुष ईश्वर अनंत।।
जय सर्व सर्व जय शिव सुपान। भूतादिक अव्यय निधि सुजान।।
जय जय स्वयम्भु जय शंभु ईश। आदित्य रूप तुम भव सुदीश।।
जय धात उत्तमहु अप्रमेय। धाता विधात जय धात धेय।।
जय विश्व कर्म जय मनः त्वष्ट। जय जय थविष्ट जय थविर इष्ट।।

जय मंगल वर ईशान मित्र। जय करन पातकी तन पवित्र।।
जय प्राणद प्राणहु जेष्ठ श्रेष्ठ। जय जग प्रजापति हरत नेष्ठ।।
जय जयति प्रजाभव भव कृपाल। जय जय संवत्सर जयति व्याल।।
जय प्रत्यय सब दर्शन प्रसिद्ध। जय अज सर्वेश्वर जयति सिद्ध।।
जय जयति वृषाकृति अमेयात्म। जय सर्व योग निश्चित महात्म।।
जय जयति दोष हर रुद्र रूप। जय पुरुष पुरातन अति अनूप।।
जय जयति वेद विदकवी ख्यात। अवयंग जयति वेदांग ज्ञात।।
जय सर्वतज्ञ मदहरन दक्ष। जय जय वृषकर्मा प्रबल पक्ष।।
जय धर्माध्यक्षा विश्व आत्म। जय जयति भोक्ता विश्व धाम।।
जय धर बाघम्बर उमाकान्त। जय जय अमोघ शुचि रूप शान्त।।
जय महाबुद्धि जय महावीर्य। जय महाशक्ति जय महाधीर्य।।
जय महा अद्रिधृति युत विज्ञान। जय जय भोले ईश्वर महान।।
जय सुरानन्द करुणानिधान। जय जयति महेश्वर सन्धिमान।।
जय वेद्य सदा योगी अकाम। शंकर गौरीपति शैल धाम।।
जय जय सन्तनगति अंग नाग। स्वामी सेवक वसुधा विभाग।।
जय जय गुरुतम जय धाम सत्य। जय सत्य पराक्रम नित्यानित्य।।
जय बुधि उदार अग्रणी ज्ञान। जय जयति गृही तन श्रीमान।।
जय न्यास शमीरण जय नियन्त। जय सर्वेश्वर विश्वात्म सन्त।।
जय निवृत आत्म संवृत्त सुजान। जय भव भय हर जय देव प्रान।।
जय वह्नि अनिल धरणी धरेश। जय जय योगी भोगी महेश।।
जय सुप्रसाद जय प्रसन्नात्म। जय विश्व सृजक जय शुद्ध आत्म।।
जय जय नारायण निराकार। जय विश्वरूप अतिशय उदार।।
जय जयति सृष्टिकृत शुचि प्रतिष्ठ। जय जय त्रिदेव शिवरूप शिष्ट।।
जय सिद्ध साधन अवगुन विराम। सिद्धयर्थ सिद्ध संकल्प नाम।।
जय ओज तेज द्युति धृत अनन्त। जय प्रकाशात्म जय गौरि कन्त।।
जय जयति प्रतापन रिद्धि सोय। जय जय अक्षर क्षर सकल जोय।।
जय सुधा अंशु भव भानु भास। चन्दांशु मंत्र दिनकर प्रकाश।।
जय जगत सेतु जय सत्य ईश। शशि बिन्दु सुरेश्वर औषधीशु।।
जय सत्य धर्म विक्रम अमान। जय भूत भव्य भवपति महान।।
जय जयति कामकृत कांत काम। जय जयति कामप्रद हर ललाम।।
जय जय युगाधिपति महादेव। जय जय सकाम निष्काम सेव।।
जय जय अदृश्य अव्यक्तरूप। जय जय शिर गंगा छबि अनूप।।
जय जय अनन्त भव मोद धाम। जग इष्टदेव सर्वेष्ट नाम।।
जय विश्व वरद ईश्वर शिवोम्। जय ब्रह्मपतिर्तुम रूप ओम्।।

जय जयति अनामय आदिदेव। जय जय सुख धारन धर्म देव।।
जय जय योगी वैराग्य शुद्ध। जय जयति जनेश्वर शुद्ध बुद्ध।।
जय अकल अगोचर तीन अक्ष। जय सत्य सनातन भव समक्ष।।
जय महाभाग जय वेगमान। कर्त्ता धर्त्ता कृपानिधान।।
जय जय जग रक्षक दुखनिवार। जग सगुण निगुण मानवनुहार।।
जय जय करुणामय भवं त्रात। सत चित आनन्द भव पिता मात।।
जय धर्म धर्म धर कर सनाथ। जय वीर शक्ति युत श्रेष्ठ नाथ।।
जय जयति कालपति महाकाल। शुभ सौम्य रूप कितना विशाल।।
जय दक्ष जयति विश्राम वेश। जय उग्र जयति सम्वत्सरेश।।
जय महाकोष जय जय समर्थ। जय जयति अर्थ जय जय अनर्थ।।
जय गरल गला जय मुंडमाल। जय चिता भस्म तन मन कपाल।।
जय भवन निवासी जगत योग। जय जयति महाधन महाभोग।।
जय जयति पीत जट प्रलय रूप। जय शिव शंकर जय देव भूप।।
जय जयति महामख वथु अनूप। जय अष्टमूर्ति भव धर्म धूप।।
जय सर्व कलामय गुणा गार। सन्तन गति अघहर लोक भार।।
जय जय उपदेशक परम ज्ञान। जय सुमुखि जयति सूक्षम महान।।
जय जय अनेक कर्मन करन्त। जय वत्सर वत्सल नाथ सन्त।।
जय तीन मूर्ति तन सर्व रूप। प्रिय प्रेरक भर्ता सुख स्वरूप।।
जय धर्म रक्ष धर्महि करन्त। जय पालक धर्म धनेश सन्त।।
जय सहसत्रांशु जय जय विधान। जय विधि विष्णु जीवन प्रमान।।
जय जयति मोदिनीपति कृतज्ञ। जय त्रिपद त्रिदश अध्यक्ष प्रज्ञ।।
जय जय भगघ्न नंदी कपाल। जय गिरिमाली शशिधर विशाल।।
जय जय सहिष्णु गति सत्यमेश। आदित्य ज्योति आदित्य वेश।।
जय जयति दिवसप्रिय सर्वदर्श। जय वाचस्पति जय व्यास हर्ष।।
जय जयति अयोनिज जय त्रिसाम। जय जय सामग निर्वाण साम।।
जय भेषज भिषज सन्यासि कारि। जय सम जय सदगुरु निर्विकारि।।
जय निष्ठा श्रद्धा सुभग अंग। जय जयति परायण दोष भंग।।
जय शान्ति आत्मा कुशल क्षेम। जय जयति शिवापति जग सुनेम।।
जय शक्तिवास श्रीवास श्रीद। श्रीमन्त श्रेष्ठ श्रीपति प्रसीद।।
जय श्रीनिवास जय जयति श्रीश। जय श्रीविभावन श्रीनिधीश।।
जय श्रीकर श्रीधर जयति श्रेय। जय श्रेय श्रीमन विरंचिधेय।।
जय शिवानन्द नन्दी सुसंग। जय लोक त्रयाश्रय स्वच्छ गंग।।
जय विधेयात्म जय जय परात्म। जय जयति गणेश्वर विजित आत्म।।
जय शाश्वत थिर भूसेम हीश। सर्वत्र चक्षु जय जय अनीश।।

जय जय सतकीरति लिंग मूर्ति। जय जयति विशोधन सर्ब पूर्ति।।
जय ब्रह्म विवर्धन परम ब्रह्म। ब्रह्मण्य ब्रह्म कृत ब्रह्म ब्रह्म।।
जय जय ब्राह्मणपति धुर्य धर्म। जय जयति महाक्रम महाकर्म।।
जय जयति महोरग महातेज। जय जयति महाकृत छाल सेज।।
जय दीप्तमूर्ति जय जय अमूर्ति। जय विश्वमूर्ति जय महामूर्ति।।
जय सत्वमूर्ति सतवदन व्यक्त। जय मूर्ति अनेकहु जय अव्यक्त।।
जय लोक बन्धु जय लोकनाथ। जय काशीपति जय विश्वनाथ।।
जय नः जय मः अन्तरलधाम। जय जय शिवाय शुभ नाम काम।।
जय योगि जयति जय योगि ईश। जय सर्वकाम प्रद पति अनीश।।
जय दुरारिघ्न दुःख दीर्घनाश। जय दुर्गम दुष्वृत्ति करु हताश।।
जय जयति धराधर धराधार। भव भूल भरम भटकन निवार।।
जय जयति उचारत होउं पार। बनि जाइ जयति जय मुक्ति द्वार।।
जय सर्व ज्ञात विजयी अनन्त। जय जय त्रिशूल धर बल अनन्त।।
जय जय गिरिजापति शैल वास। पुरवहु मनसा शिवदास आश।।

जयति शिवा शिव जिन भजिअ, ता नहि कलिक सताउ।
आपुहि दुष्वृत्ति दूरि रह, सत्वृत्ति मने समाउ।।89।।
लिंग रूप प्रतीक बनि, वीर्य रूप बसि गात।
ब्रह्म रूप धरि उर बसत, सो शिव जानि न जात।।90।।
सत समान शिव मीत के, कलि सम को रिपु रूप।
अइस आपु जे साध नहि, सो बूड़हि भव कूप।।91।।

जथ त्रय देव लोक प्रभूता। सो मानव संग मिलत सबूता।।
मानव देह एक उद्देशा। सतपथ चलन भजन अखिलेशा।।
संग न जाहि देव भगताई। जियइ भले पर जनम गंवाई।।
करहिं तिते ममता सब कोई। संग जिते कछु स्वारथ होई।।
स्वारथ सांच मनुज तन एही। सकइ जे बनि शिव शकति सनेही।।
सोई पावन परम सुभागी। तन मन जे शिवत्व अनुरागी।।
पाइ जनम जग नाना कर्मे। भावहिं पर जौं संग शिव धर्मे।।
तारि आपु तारइ संसारा। गावइ मुखेउ देव परिवारा।।
सुनि शिव कथा सबै सुखमानी। सूत सुनाइ ऋषिन्ह कह बानी।।
जेतिक कलिमल दोष जगत के। करत दूरि रह भजन भगत के।।
पर इहि अवसर कलिक स्वरूपा। सहित सेन बनु रूप अनूपा।।
भूलेउ जन जन आप भलाई। कलिक काज ते करि प्रीताई।।
मादक सुधा सुधा विष मानी। कलिक भजन मन आउ गलानी।।
भांग धतूर कहैं शिव बूटी। असुर अहार औषधी कूटी।।

एक नाहि सब करहिं अहारा। भागइ काम क्रोध अधिकारा।।
मख मुख भजन साधना ठौरे। अन्तर मन विरचइ थल औरे।।
कर कुछ करइ सोच मन दूजहिं। देवी देव दिखावा पूजहिं।।
आपन दोष दुरावहिं नाहीं। आन दोष सुनि रोश दिखाहीं।।
पढ़ अनपढ़ ऊंचा अरु नीचा। मिलु अवलोके सब इहि बीचा।।

सकल प्रगति संग लोक जन, पढ़ा लिखा विद्वान।
तबहुं न भावइ शिव भजन, कहु मुनीश का मान।।92।।

दीखु प्रत्यक्ष प्रदूषण नाना। कुमति कुभाव कुचार खजाना।।
नंगी नाच दुःशासन नीती। आइ समय पसरी सो रीती।।
कुल समेत गृह सभा मझारे। जहं दीखउ तहं सबै निहारे।।
फिल्म दूरदर्शन दइ नामा। द्रुपदी दशा मिलइ हर धामा।।
ज्ञान पुरातन धर्म सनातन। ते नाही करहीं कोउ बातन।।
राजनीति बनु अर्थ खजाना। वर विवाह तक इहि ढंग माना।।
तर्क समाज मनो विज्ञाना। विफलइ जहं आतंक विमाना।।
बम विस्फोटन अणु विकिरारन। उपजइ सृष्टि विनाशन कारन।।
युद्ध उन्माद विविध अपराधा। बाढ़इ नित मानवता व्याधा।।
यान विमान दूर संचारन। देखे लगु विश्वकर्म पछारन।।
भव विज्ञान तार बिनु तारे। मुख निकसत पहुंचइ समचारे।।
एतिक देखि मनुज प्रभुताई। चलि तीनो पथ विजय बनाई।।
होइ न काह ताहि अभिमाना। जौ बल बाढ़इ असुर समाना।।
सुनइ नाहि सो कथा पुरातन। समय अभाव कथइ दिनरातन।।
स्वारथ भाव फिरइ हर ठांऊ। सेवा भाव उदार दुराऊं।।
जे जग शूर धनी विद्वाना। बल मद करहिं कथा अपमाना।।
साधहिं विप्र नीति शूदाई। तौ जन दीन न करु भगताई।।
लोक उद्धार होइ तब कैसे। जब युग मनुज जाइ बनि ऐसे।।
मति अपहरण सबै प्रिय लागे। मिलै न दीन लीन लै भागे।।
भागे कलि जापे महा मंतर। पर जौ दूषित राज निरन्तर।।
भाखु मुनीश सुधारन वाहू। केहि विधि बनै जौन अब चाहू।।
मति भौतिकता भव अधिकाई। मोह जाइ मुनि कथउ उपाई।।
वर्ण धर्म नहि आश्रम चारी। श्रुति विरोध रत सब नर नारी।।
द्विज श्रुति बेचक भूप प्रजासन। कोउ नहि मांनु नियम अनुशासन।।
मिथ्यारंभ दंभ रत जोई। फूहड़ वेश पाखण्ड संजोई।।
जो चलु कह जग तेहि आचारी। बड़ सो जो हर परधन नारी।।
जाके नख अरु जटा विशाला। विचरहिं ओढ़े पीत दुशाला।।

बेश अशुभ वर्जित पथ गामी। काम क्रोध वश तन सब खामी।।

ब्रह्म ज्ञान बिनु नारि नर, बनि शुभ कर्म विहीन।
पाइ सकइ जन लक्ष्य नहि, नारि प्रीति लवलीन।।93।।

जौ बनु विप्र मूढ मद कामी। निराचार शठता पथ स्वामी।।
शूद करहिं जप व्रत नाना। बैठि बरासन कहहिं पुराना।।
शंकर वरन समाज सुधारी। गहि गुरु शरण प्रज्ञा अवतारी।।
तामस धर्म प्रीति नर नारी। तजि पितु मात बसै ससुरारी।।
कुल परिवार सुभल आचारा। मिलु बगिलान सबै चहुंवारा।।
योग वियोग संजीवनि मूरी। जांच भये सब संग अधूरी।।
पीड़ित मानवता मानव की। चार विचार गहे दानव की।।
नाम प्रताप कलिक प्रधाना। भाव अभाव सो विफले साना।।
निंदक नीच लबार गंवारन। चार झबोर अनीति संवारन।।
ते बनि पंच रचहिं परपंचा। खांइ घूस केउ न्याय न संचा।।
द्वेष ईर्ष्या अन्तर जारी। जीवहिं गांव नगर नर नारी।।
पर अनभल ते बड़ प्रीताई। हम का आप न सुधि कछु लाई।।
सुमति दुराहिं कुमति उतिराहीं फूट कलह सब के मन मांही।।
भाईचार धरम नहि नेमा। वृत्ति आसुरी ते जग प्रेमा।।
धरनी धाम लोक अवगूना। सूत सुना जित समझा दूना।।

कर जोरे ऋषिगण कहेउ, सूत सभा मुख आगु।
रहइ न जौ सुर संस्कृति, कैसे सुरता जागु।।94।।
भले मनुज जन्मइ जगत, दुर्लभ बनै सुधार।
कैसे मुनिवर छार बनु, व्यापा अद्य दुरचार।।95।।
वन्दि शिवा शिव सूत कह, जब जग धरम दुरान।
प्रगटहिं हर कोउ रूप धरि, ऐसन नियम विधान।।96।।
जौ कलि कुमति अपार बनु, तौ प्रज्ञा अवतार।
गुरू रूप धरि सीख दइ, ऐसे देहिं उबार।।97।।
जे गुरु महिमा मांनु जग, सोई सकु पहिचानि।
आन दृष्टि न चीन्हि सकु, सो जानइ नर खानि।।98।।

देव देव हर महादेव शिव। सकल चराचर दैहिक सो जिव।।
जीव शकति गिरिजा महतारी। रूप गणेश भाव अनुहारी।।
अंग अंग षटमुख बल काया। शिव साथी गण जीवन माया।।
ऊँ नाद पर ब्रह्म प्रकारे। अक्षर रूप दीखु संसारे।।
कुल समेत शिव अन्तरयामी। पुरवत मनसा भांतिय स्वामी।।
चरित शिवा शिव मनुज नुकूला।। सब विधि सुन्दर मंगल मूला।।

चलु जे शंभु चरित अपनाई। सब युग ताहि सुलभ सुरताई।।
जौ चह आपन भल परिवारा। तौ चलु साधि शिवम आचारा।।
देव रूप शिव जौन यथारथ। कीन सोई गनि लोक हितारथ।।
कीन्ही ब्याह प्रथम तप भारी। मिलु जेहि ते संतति सुखकारी।।
करि जो चरित व्याह उपरान्ता। सो रह लोक हिते अत्यन्ता।।
बनि काशीपति जन आचारा। साध आप हेतू संसारा।।
करि ताते काशीपति प्रीता। जे जीवन साधइ शिव नीता।।
सब सुख सब हित आयु अरोगा। शिव वरदान मिलै सुखयोगा।।
होइ सुदृढ़ सुर नर सम्बन्धा। करहिं शिवा शिव सो प्रबंधा।।
आपु साधि शिव लोक दिखावा। गहन करन आयसु पसरावा।।
शिव समान के सुर हितकारी। लोक हिते संग शैलकुमारी।।
जीवन भर साधेउ पथ सोई। हितकर जौन अमंगल खोई।।
शिव जीवन पथ नीति विचारा। सब कह उर सुरता उद्गारा।।

सूत कहेउ सुनु देव ऋषि, नारद जौन बताइ।
काशि धरनि करि पल्लवित, सो हम तुमहि सुनाइ।।99।।
कथा नाहि शिव कर्म गति, साधे जीवन जोय।
मुक्ति शक्ति सब लोक सुख, मिलु दुख आउ न कोय।।100।।

जाहि मनुज मानवता प्रीती। नहि उर फलइ बिना शिव नीती।।
नयन ज्ञान शिव स्वर ज्योताई। शक्ति साधना अन्तर छाई।।
पति पत्नी परिवार स्वरूपा। जाति कोउ सब के अनुरूपा।।
शिव परिवार लोक घर आंगन। रूप बसै कोउ पुरवहु मांगन।।
जे अस मानि बसै घर मांही। न मिलु रोग शोक तेहि ठांही।।
शिव परिवार चार व्यवहारा। कथा चरित हेतू संसारा।।
जापइ नाम करै सेवकाई। धावहिं शिव तेहि करन भलाई।।
करहिं न भाषा शब्द विचारा। एक विलोकहिं भाव तुम्हारा।।
ऊंच नीच पर देहिं न ध्याना। पाइ शरण जेहि तेहि निज माना।।
देखत बन अनबन कछु नाही। पूजइ वन मन्दिर कोउ ठांही।।
बसइ जासु मन आपु भलाई। सो शिव भजइ कृपा बल पाई।।
भल पुरुषारथ उभरु विवेका। जिते सुफल बनु पंथ प्रत्येका।।

सुनि वचनामृत सूत के, ऋषिगण भयो विभोर।
ध्याइ गाइ चित लाइ शिव, बोले जय कर जोर।।101।।

बोले सूत जौन समवादा। विधि विष्णु नारद अनुवादा।।
भा स्मरण सुअवसर जोई। जानि लोक हित भाखेउं सोई।।
अन्तर आश उपजु मन एही। आप गहिय करु आन सनेही।।

इहि समान कलि दोष निवारन। नाही आन मांनु संसारन।।
सीख सुमति सुसंस्कृत वाना। विरचि परोसइ सदगुन नाना।।
शिवम कथा जीवन रस रूपा। इहि युग योग विमल भवकूपा।।
गृही धर्म रस साज सिंगारा। मय स्तुति सातों परिवारा।।
रह जित मनुज गात आदर्शा। जोरि संजोइ तिनहिं हम परसा।।
दुष्ट संहारन युग निरमारन। सो विधि कह जो शिव अनुसारन।।
जानि लोक हित ताहि बतावा। चरित शिवा शिव जौन दिखावा।।
इहि ते गाइ शिवा शिव चरिता। तन मन बोरिय ज्ञान अमिरता।।

चलु शिव शरणे दीन बनि, सकल हीनता जाइ।
राखि मने शिव विष्णु छबि, उमा रमा समताइ।।102।।
जयति शिवा शिव गूंज स्वर, नित्य निरन्तर ध्यान।
सभा समापन ऋषि करिय, बांटिय जीवन ज्ञान।।103।।

नमो नेदिष्ठाय प्रियदेव दविष्ठाय च नमो,
नमः क्षोदिष्ठाय स्मरहर महिष्ठाय च नमः।
नमो वर्षिष्ठाय त्रिनयन यविष्ठाय च नमो,
नमः सर्वस्मै ते तदिदमिति शर्वाय च नमः।।1।।
बहुलरजसे विश्वोत्पत्तौ भवाय नमो नमः,
प्रबलतमसे तत्संहारे हराय नमो नमः।
जन सुखकृते सत्त्वोद्रिक्तौ मृडाय नमो नमः,
प्रमहसि पदे निस्त्रैगुण्ये शिवाय नमो नमः।।2।।
कृशपरिणति चेतः क्लेशवश्यं क्व चेदं,
क्व च तव गुण सीमोल्लंघिनी शश्वदृद्धिः।
इति चकितममन्दीकृत्य मां भक्तिराधाद्,
वरद चरणयोस्ते वाक्यपुष्पोपहारम्।।3।।

इति श्री मद् शिव शक्ति कथायां
सकल कलिकलुषविध्वंसने सप्तमः अध्यायः
;शान्ति खण्डः समाप्तःद्ध

नमः शिवाय। नमः शिवाय। नमः शिवाय। नमः शिवाय।
नमः शिवाय। नमः शिवाय। नमः शिवाय। नमः शिवाय।
नमः शिवाय। नमः शिवाय। नमः शिवाय। नमः शिवाय।
नमः शिवाय। नमः शिवाय। नमः शिवाय। नमः शिवाय।
नमः शिवाय। नमः शिवाय। नमः शिवाय। नमः शिवाय।
नमः शिवाय। नमः शिवाय। नमः शिवाय। नमः शिवाय।
नमः शिवाय। नमः शिवाय। नमः शिवाय। नमः शिवाय।
नमः शिवाय। नमः शिवाय। नमः शिवाय। नमः शिवाय।
नमः शिवाय। नमः शिवाय। नमः शिवाय। नमः शिवाय।
नमः शिवाय। नमः शिवाय। नमः शिवाय। नमः शिवाय।
नमः शिवाय। नमः शिवाय। नमः शिवाय। नमः शिवाय।
नमः शिवाय। नमः शिवाय। नमः शिवाय। नमः शिवाय।
नमः शिवाय। नमः शिवाय। नमः शिवाय। नमः शिवाय।
नमः शिवाय। नमः शिवाय। नमः शिवाय। नमः शिवाय।
नमः शिवाय। नमः शिवाय। नमः शिवाय। नमः शिवाय।
नमः शिवाय। नमः शिवाय। नमः शिवाय। नमः शिवाय।
नमः शिवाय। नमः शिवाय। नमः शिवाय। नमः शिवाय।
नमः शिवाय। नमः शिवाय। नमः शिवाय। नमः शिवाय।
नमः शिवाय। नमः शिवाय। नमः शिवाय। नमः शिवाय।
नमः शिवाय। नमः शिवाय। नमः शिवाय। नमः शिवाय।
नमः शिवाय। नमः शिवाय। नमः शिवाय। नमः शिवाय।
नमः शिवाय। नमः शिवाय। नमः शिवाय। नमः शिवाय।
नमः शिवाय। नमः शिवाय। नमः शिवाय। नमः शिवाय।
नमः शिवाय। नमः शिवाय। नमः शिवाय। नमः शिवाय।
नमः शिवाय। नमः शिवाय। नमः शिवाय। नमः शिवाय।
नमः शिवाय। नमः शिवाय। नमः शिवाय। नमः शिवाय।
नमः शिवाय। नमः शिवाय। नमः शिवाय। नमः शिवाय।
नमः शिवाय। नमः शिवाय। नमः शिवाय। नमः शिवाय।
नमः शिवाय। नमः शिवाय। नमः शिवाय। नमः शिवाय।
नमः शिवाय। नमः शिवाय। त्रिपादवल्लभ दिगम्बराय।

आरती

जयति उमापति जय शिव शंकर। देव रूप जीवन मानव धर।।
आदि अनन्त अनामय अविचल सत्य सनातन स्वामी।
अमल अरूपन अकल सदाशिव जग मन अन्तर्यामी।। जयति0।।
आदि अनादि रूप अघहारी शुभ सत चित अविनाशी।
अविकारी खल दल संहारी जग जन आनन्दराशी।।जयति0।।
तुम्हीं हो ब्रह्मा विष्णु महेश्वर तीन रूप तन धारी।
छाया छाल कपाल गरल गल मुण्डमाल जटधारी।।जयति0।।
उमा रमा दुर्गा दश विद्या तूही कमला काली।
मूलाधार निवासिनि शक्ती भव वैभव प्रद वाली।।जयति0।।
योगी भोगी तन वैरागी विश्वविहारी सुखदानी।
कर्त्ता धर्त्ता रक्षक भक्षक प्रेरक प्रिय औढरदानी।।जयति0।।
मनसा स्वामिन महाविलासिन जग जननी भय हारी।
मूल प्रकृति तुम्हीं नव दुर्गा भव संताप विदारी।।जयति0।।
निर्गुण सगुण निरंजन जगमय जगती जीव विधाता।
प्रेम सुधानिधि शशि गंगा धर अखिल विश्व पितु माता।।जयति0।।
वाणी विमले सकल शक्तिधर वेदत्रयी जग माया।
अष्ट मातृका रूप तुम्हारा भव जीवन तेहि छाया।।जयति0।।
दीन हीन दुःख लीन पूत हम बिलखत द्वार तुम्हारे।
जानि शरण कीजे तन पावन रहा न आन सहारे।।जयति0।।
तुंही विधाता तुंही विधात्री तुम्हीं पिता महतारी।
युग्म आरती युग्म कृपामय होवे मंगल कारी।।जयति0।।

नमः शिवाय शिवा माता

अजर अमर अज अरूप, सत चित आनन्द रूप,
व्यापक ब्रह्म स्वरूप भव, भव भय हारी।। नमः।।
शोभित बिधुबाल भाल, सुरसरिमय जटाजाल,
तीन नयन अति विशाल, मदन दहन कारी।। नमः।।
करत कठिन शूल फूल, बनत हेतु भक्त कूल,
हिय की सब हरत हूल, अचल शान्ति कारी।। नमः।।
कार्तिकेय युत गणेश, हिम तनया सह महेश,
राजत कैलास देश, अकल कला धारी।। नमः।।
भूषण तन भूति व्याल, मुण्डमाल कर कपाल,
सिंह चर्म हस्ति खाल, डमरू कर धारी।। नमः।।
अशरण जन नित्य शरण, आशुतोष आर्तिहरण,
सब विधि कल्याण करण, गिरिजा त्रिपुरारी।। नमः।।

जगत जननि पार्वती का स्तवन

जय दुर्गे महेशानी जयात्मीय जनप्रिये।
त्रैलोक्यत्राणकारिष्यै शिवायै ते नमो नमः।।1।।
नमो मुक्ति प्रदायिन्यै पराम्बायै नमो नमः।
नमः समस्तसंसारोत्पत्तिस्थित्यन्त कारिके।।2।।
कालिका रूप सम्पन्ने नमस्ताराकृते नमः।
छिन्नमस्तास्वरूपायै श्रीविद्यायै नमोऽस्तु ते।।3।।
भुवनेशि नमस्तुभ्यं नमस्ते भैरवाकृते।
नमोऽस्तु बगलामुख्यैधूमावत्यै नमो नमः।।4।।
नमस्त्रिपुरसुन्दर्यै मातंगायै नमो नमः।
अजितायै नमस्तुभ्यं विजयायै नमो नमः।।5।।
जयायै मंगलायै ते विलासिन्यै नमो नमः।
दोग्ध्रीरूपे नमस्तुभ्यं नमो घोराकृतेऽस्तु ते।।6।।
नमोऽपराजिताकारे नित्याकारे नमो नमः।
शरणागतपालिन्यै रुद्राण्यै ते नमो नमः।।7।।
नमो वेदान्तवेद्यायै नमस्ते परमात्मने।
अनन्तकोटिब्रह्माण्डनायिकायै नमो नमः।।8।।

विनय करते हुए देवतागण कहते हैं कि हे देवि महेश्वरि दुर्गे! आप की जय हो। अपने भक्त जनों का प्रिय करने वाली देवि! आप की जय हो। आप तीनों लोकों की रक्षा करने वाली शिवा हैं। आप को बारंबार नमस्कार है। आप ही मोक्ष सुख प्रदान करने वाली परा अम्बा हैं। आपको बारंबार नमस्कार है। आप समस्त संसार की उत्पत्ति स्थिति और संहार करने वाली है। आपको नमस्कार है। छिन्नमस्ता आपका ही स्वरूप है। आप ही श्रीविद्या है। आपको नमस्कार है। भुवनेश्वरि! आपको नमस्कार है। भैरवरूपिणि! आपको नमस्कार है। आप ही बगलामुखी और धूमावती हैं। आपको बारंबार नमस्कार है। आप ही त्रिपुर सुन्दरी और मातंगी है। आपको बारंबार नमस्कार है। अजिता, विजया जया, मंगला और विलासिनी ये सभी आपके ही विभिन्न रूपों की संज्ञाएं हैं। इन सभी रूपों में आपको नमस्कार है। दोग्ध्री (माता या कामधेनु) रूप में आपको नमस्कार है। घोर आकार धारण करने वाली आपको नमस्कार है। अपराजिता रूप में आपको प्रणाम है। नित्या महाविद्या के रूप में आप को बारंबार प्रणाम है। आप ही शरणागतों का पालन करने वाली रुद्राणी है आप को बारंबार नमस्कार है। आप परमात्मा है आपको मेरा प्रणाम है। अनन्त कोटि ब्रह्माण्डों का संचालन करने वाली आप जगदम्बा को बारंबार नमस्कार है।

देवों की विनय को सुनकर दयामयी देवी ने देवों को अभय होने के लिए स्वयं अपने मुख से ऐसे कहा—

परं ब्रह्म परं ज्योतिः प्रणवद्वन्द्वरूपिणी।
अहमेवास्मि सकलं मदन्यो नास्ति कश्चन्।।1।।
निराकारापि साकारा सर्वतत्वस्वरूपिणी।
अप्रतर्क्यगुणा नित्या कार्यकारणरूपिणी।।2।।
कदाचिद्दयिताकारा कदाचित्पुरुषाकृतिः।
कदाचिदुभयाकारा सर्वाकाराहमीश्वरी।।3।।
विरंचिः सृष्टिकर्ताहं जगन्माताहमच्युतः।
रुद्रः संहारकर्ताहं सर्वविश्वविमोहिनी।।4।।
कालिकाकमलावाणीमुखाः सर्वा हि शक्तयः।
मदंशादेव संजातास्तथेमाः सकलाः कलाः।।5।।
मत्प्रभावाज्जिताः सर्वे युष्माभिर्दितिनन्दनाः।
तामविज्ञाय मां यूयं वृथा सर्वेशमानिनः।।6।।
यथा दारुमयीं योषां नर्तयत्यैन्द्रजालिकः।
तथैव सर्वभूतानि नर्तयाम्यहमीश्वरी।।7।।
मद्भयाद् वाति पवनः सर्वं दहति हव्यभुक्।
लोकपालाः प्रकुर्वन्ति स्वस्वकर्माण्यनारतम्।।8।।
कदाचिद्देववर्गाणां कदाचिद्दितिजन्मनाम्।
करोमि विजयं सम्यक् स्वतंत्रा निजलीलया।।9।।
अविनाशिपरं धाम मायातीतं परात्परम्।
श्रुतयो वर्णयन्ते यत्तद्रूपं तु ममैव हि।।10।।
सगुणं निर्गुणं चेति मद्रूपं द्विविधं मतम्।
मायाशवलितं चैकं द्वितीयं तदनाश्रितम्।।11।।
एवं विज्ञाय मां देवाः स्वं गर्वं विहाय च।
भजत प्रणयोपेताः प्रकृतिं मां सनातनीम्।।12।।

देवी बोली— मैं ही पर ब्रह्म, परम ज्योति, प्रणवरूपिणी तथा युगल रूप धारिणी हूं। मैं ही सब कुछ हूं। मुझ से भिन्न कोई पदार्थ नही है।

मैं निराकार होकर भी साकार हूं, सर्व तत्वस्वरूपिणी हूं। मेरे गुण अतर्क्य हैं। मैं नित्य स्वरूपा तथा कार्यकारणरूपिणी हूं। मैं ही कभी प्राणवल्लभा का आकार धारण करती हूं। और कभी प्राणवल्लभा पुरुष का। कभी स्त्री और पुरुष दोनों रूपों में एक साथ प्रकट होती हूं। यही मेरा अर्धनारीश्वर रूप है। मैं सर्वरूपिणी ईश्वरी हूं। मैं ही सृष्टिकर्त्ता ब्रह्मा हूं। मैं ही जगत्पालक विष्णु हूं तथा मैं ही

संहारकर्त्ता रुद्र हूं। सम्पूर्ण विश्व को मोह में डालने वाली महामाया मैं ही हूं। काली लक्ष्मी और सरस्वती आदि सम्पूर्ण शक्तियां तथा ये सकल कलाएं मेरे अंश से ही प्रगट हुई है। मेरे ही प्रभाव से तुम लोगों ने सम्पूर्ण दैत्यों पर विजय पाई है। मुझ सर्व विजयिनी को न जान कर तुम लोग व्यर्थ ही अपने को सर्वेश्वर मान रहे हो। जैसे इन्द्रजाल करने वाला सूत्रधार कठपुतली को नचाता है उसी प्रकार मैं ईश्वरी ही समस्त प्रणियों को नचाती हूं। मेरे भय से हवा चलती है। मेरे भय से ही अग्नि देव सब को जलाते हैं। मेरा भय मानकर ही लोक पालगण निरन्तर अपने अपने कर्मो में लगे रहते हैं। मैं सर्वथा स्वतंत्र हूं और अपनी लीला से ही कभी देव समुदाय को विजयी बनाती हूं तथा कभी दैत्यों को। माया से परे जिस अविनाशी परात्पर धाम का श्रुतियां वर्णन करती हैं वह मेरा ही रूप है। सगुण और निर्गुण ये मेरे दो प्रकार के रूप माने गये हैं। इनमें से प्रथम तो माया युक्त है और दूसरा माया रहित। देवताओं! ऐसा जानकर गर्व छोड़ों और मुझ सनातनी प्रकृति की श्रद्धा सहित आराधना करो।

शिवपुत्र स्कन्द का दर्शन करके मुनीश्वर वामदेव ने शिव स्वरूप समझकर उनकी स्तुति इस प्रकार की है–

नमः प्रणवार्थाय प्रणवार्थ विधायिने।
प्रणवाक्षर बीजाय प्रणवाय नमो नमः।।1।।
वेदान्तार्थस्वरूपाय वेदान्तार्थविधायिने।
वेदान्तार्थ नित्यं विदिताय नमो नमः।।2।।
नमो गुहाय भूतानां गुहासु निहिताय च।
गुह्याय गुह्यरूपाय गुह्यागमविदे नमः।।3।।
अणोरणीयसे तुभ्यं महतोऽपि महीयसे।
नमः परावरज्ञाय परमात्मस्वरूपिणे।।4।।
स्कन्दाय स्कन्दरूपाय मिहिरारुणतेजसे।
नमो मन्दार मालोद्यन्मुकुटादिभुते सदा।।5।।
शिवशिष्याय पुत्राय शिवस्य शिवदायिने।
शिवप्रियाय शिवयोरानन्दनिधये नमः।।6।।
गांगेयाय नमस्तुभ्यं कार्तिकेयाय धीमते।
उमापुत्राय महते शरकाननशायिने।।7।।
षडक्षरशरीराय षड् विधार्थविधायिने।
षडध्वातीतरूपाय षण्मुखाय नमो नमः।।8।।
द्वादशायतनेत्राय द्वादशोद्यतबाहबे।
द्वादशायुधधाराय द्वादशात्मन् नमोऽस्तुते।।9।।
चतुर्भुजाय शान्ताय शक्तिकुक्कुटधारिणे।
वरदाभयहस्ताय नमोऽसुरविदारिणे।।10।।
गजावल्लीकुचालिप्तकुंकुमांकितवक्षसे।
नमो गजाननानन्दमहिमानन्दितात्मने।।11।।
ब्रह्मादिदेवमुनिकिंनरगीयमानगाथाविशेषशुचिचिन्तितकीर्तिधाम्ने।
वृन्दारकामलकिरीटविभूषणस्रक्पूज्याभिरामपदपंकज ते नमोऽस्तु।।12।।
इति स्कन्दस्तवं दिव्यं वामदेवेन भाषितम्।
यः पठेच्छृणुयाद्वापि स याति परमां गतिम्।।13।।
महाप्रज्ञाकरं ह्येतच्छिव भक्तिविवर्धनम्।
आयुरारोग्य धनकृत्सर्वकामप्रदं सदा।।14।।

वाम देव बोले–जो प्रणव के वाच्यार्थ के प्रति पादक प्रणवाक्षररूप बीज से युक्त तथा प्रणवरूप है उन आप स्वामी कार्तिकेय को बारंबार नमस्कार है। वेदान्त के अर्थ भूत ब्रह्म ही जिनका स्वरूप है जो वेदान्त का अर्थ करते हैं, वेदान्त के

अर्थ को जानते हैं और नित्य विदित हैं उन स्कन्दस्वामी को बारंबार नमस्कार है। समस्त प्राणियों की हृदय गुफा में प्रतिष्ठित गुह को नमस्कार है। जो स्वयं गुह्य है जिनका रूप गुह्य है तथा जो गुह्य शास्त्रों के ज्ञाता है उन स्वामी कार्तिकेय को नमस्कार है। प्रभों! आप अणु से ही अणु और महान से भी परम महान है। कारण और कार्य अथवा भूत और भविष्य के भी ज्ञाता है। आप परमात्मस्वरूप को नमस्कार है। आप स्कन्द (माता के गर्भ से च्युत) है। स्कन्दन (गर्भ से स्खलन) ही आप का रूप है। आप सूर्य और अरुण के समान तेजस्वी है। पारिजात की माता से सुशोभित मुकुट आदि धारण करने वाले आप स्कन्धस्वामी को सदा नमस्कार है। आप शिव के शिष्य और पुत्र है, शिव (कल्याण) देने वाले हैं। शिव को प्रिय हैं। तथा शिवा और शिव के लिए आनन्द की निधि हैं। आप को नमस्कार है। आप गंगा जी के बालक, कृतिकाओं के कुमार, भगवती उमा के पुत्र तथा सरकंडों के वन में शयन करने वाले है। आप महाबुद्धिमान देवता को नमस्कार है। षडक्षर मंत्र आपका शरीर है। आप छः प्रकार के अर्थ का विधान करने वाली है। आपका रूप छः मार्गों से परे है आप षडानन को नमस्कार है। द्वादशात्मन्! आपके बारह विशाल नेत्र और बारह उठी हुई भुजायें हैं। उन भुजाओं में आप बारह आयुध धारण करते हैं। आपको नमस्कार है। आप चतुर्भुज रूप धारी शान्त तथा चारों भुजाओं में क्रमशः शक्ति, कुक्कुट, वर और अभय धारण करते है। आप असुर विदारण देव को नमस्कार हैं। आप का वक्षस्थल गजावल्ली के कुचों में लगे हुए कुंकुम से अंकित है। अपने छोटे भाई गणेश जी की आनन्दमयी महिमा सुनकर आपमन ही मन आनन्दित होते है। आप को नमस्कार है। ब्रह्मा आदि देवता मुनि और किन्नर गणों से गायी जानेवाली गाथा विशेष के द्वारा जिनके विचित्र कीर्तिधाम का चिन्तन किया जाता है। उन आप स्कन्ध को नमस्कार है। देवताओं के निर्मल किरीट को विभूषित वाली पुष्पमालाओं से आप के मनोहर चरणार विन्दों की पूजा की जाती है आप को नमस्कार है। जो वामदेव द्वारा वर्णित इस दिव्य स्कन्ध स्तोत्र का पाठ या श्रवण करता है वह परम गति को प्राप्त होता है। यह स्तोत्र बुद्धि को बढ़ाने वाला और सदा सम्पूर्ण अभीष्ट को देने वाला है।

भजन भगवान भोला नाथ

अभयदान दीजै दयाल प्रभु सकल सृष्टि के हितकारी।
भोलेनाथ भक्त दुःख गंजन भवभंजन शुभ सुखकारी।।
दीनदयालु कृपालु कालरिपु अलखनिरंजन शिव योगी।
मंगल रूप अनूप छबीले अखिल भुवन के तुम भोगी।।
वाम अंग अति रंग रस भीने उमा वदन की छबि न्यारी।
भोले नाथ भक्त दुःख गंजन भव भंजन शुभ सुखकरी।।
असुर निकन्दन सब दुःख गंजन वेद बखाने जग जाने।
रुण्डमाल गल व्याल भाल शशि नीलकण्ठ शोभा साने।।
गंगा धर त्रिशूल धर विषधर बाघम्बरधर गिरिचारी।
भोलेनाथ भक्त दुःख गंजन भवभंजन शुभ सुखकारी।।
यह भवसागर अति अगाध है पार उतर कैसे बूझै।
ग्राह मगर बहु कच्छप छाये मार्ग कहो कैसे सूझै।।
नाम तुम्हारा नौका निर्मल तुम केवट शिव अधिकारी।
भोलेनाथ भक्त दुःखगंजन भवभंजन शुभ सुखकारी।।
मैं जानूं तुम सदगुण सागर अवगुण मेरे सब हरियो।
किंकर की विनती सुन स्वामी सब अपराध क्षमा करियो।।
तुम तो सकल विश्व के स्वामी मैं हूं प्राणी संसारी।
भोलेनाथ भक्त दुःख गंजन भव भंजन शुभ सुखकारी।।
काम क्रोध लोभ अति दारुण इनसे मेरो वश नाही।
द्रोह मोद मद संग न छोड़ै सब जीवन इनके छांही।।
क्षुधा तृषा नित लगी रहति है बढ़ी विषय तृष्णा भारी।
भोलेनाथ भक्त दुःख गंजन भव भंजन शुभ सुखकारी।।
तुमही शिव कर्त्ता हर्त्ता तुमही जग के रखवारे।
तुमही गगन मगन पुनि पृथ्वी पर्वत पुत्री के प्यारे।।
तुमही पवन हुताशन शिवजी तुमही रवि शशि तम हारी।
भोलेनाथ भक्त दुःख गंजन भव भंजन शुभ सुखकारी।।
पशुपति अजर अमर अमरेश्वर योगेश्वर शिव गोस्वामी।
वृषभारुढ़ गूढ़ गुरु गिरिपति गिरिजावल्लभ निष्कामी।।
सुषमा सागर रूप उजागर गावत है सब नर नारी।
भोलेनाथ भक्त दुःख गंजन भव भंजन शुभ सुखकारी।।
महादेव देवों के अधिपति फणिपति भूषण अति साजै।
दीप्त ललाट लाल दोउ लोचन उर आनत ही दुख भाजै।।

परम प्रसिद्ध पुनीत पुरातन महिमा त्रिभुवन विस्तारी।
भोलेनाथ भक्त दुःख गंजन भव भंजन शुभ सुखकारी।।
ब्रह्मा विष्णु महेश शेष मुनि नारद आदि करत सेवा।
सबकी इच्छा पूरन करते नाथ सनातन हर देवा।।
भक्ति मुक्ति के दाता शंकर दोष दुगुण कलिमल हारी।
भोलेनाथ भक्त दुःख गंजन भव भंजन शुभ सुखकारी।।
महिमा इष्ट महेश्वर की जो सीखे सुने नित्य गावै।
अष्टसिद्धि नवनिधि सुख सम्पत्ति ईश भक्ति मुक्ती पावै।।
श्री अहि हरण प्रभु मुद बनकर कृपा कीजिए त्रिपुरारी।
भोलेनाथ भक्त दुःख गंजन भव भंजन शुभ सुखकारी।।

नमः शिवाय

शिवं शान्तं सुन्दरम्

हर–हरि रूप–शिव

शिवस्य परमो विष्णुर्विष्णोश्च परमः शिवः।
एक एव द्विधाभूतो लोके चरति नित्यशः।।
नमश्चर्मनिवासाय नमस्ते पीतवाससे।
नमोऽस्तु लक्ष्मीपतये उमायाः पतये नमः।।

साम्ब सदाशिव साम्ब सदाशिव, साम्ब सदाशिव जयशंकर।
हर हर शंकर दुखहर सुखकर अघ तम हर हर हर शंकर।।

जयति शिवा शिव जानकिराम। गौरी शंकर सीताराम।।
जय पावक रवि रवि चन्द्र जयति जय। सत्चित आनंद भूमा जय जय।।
जय जय विश्वरूप हरि जय जय। जय हर अखिल आत्मा जय जय।।
जय जय विराट जय जगत्पते। गौरीपति जय जय रमापते।।

देव देव महादेव शरणागतवत्सल।
व्रतेनानेन देवेश कृपां कुरु ममोपरि।।
मया भक्त्यनुसारेण व्रतमेतत् कृतं शिव।
न्यूनं सम्पूर्णतां यातु प्रसादात्तव शंकर।।
अज्ञानाद्यदि वा ज्ञानाज्जपपूजादिकं मया।
कृतं तदस्तु कृपया सफलं तव शंकर।।

हे देवदेव! महादेव! शरणागतवत्सल! देवेश्वर! इस व्रत से संतुष्ट हो आप मेरे ऊपर कृपा कीजिए। शिवशंकर! मैने भक्ति भाव से इस व्रतानुष्ठान का पालन किया है इसमें जो कमी रह गई हो वह आप के प्रसाद से पूरी हो जाय। शंकर! मैने अनजान में या जान बूझकर जो जप पूजन पाठ किया है, वह आपकी कृपा से सफल हो और मनोरथ पूरक बनकर साथ देता रहे।

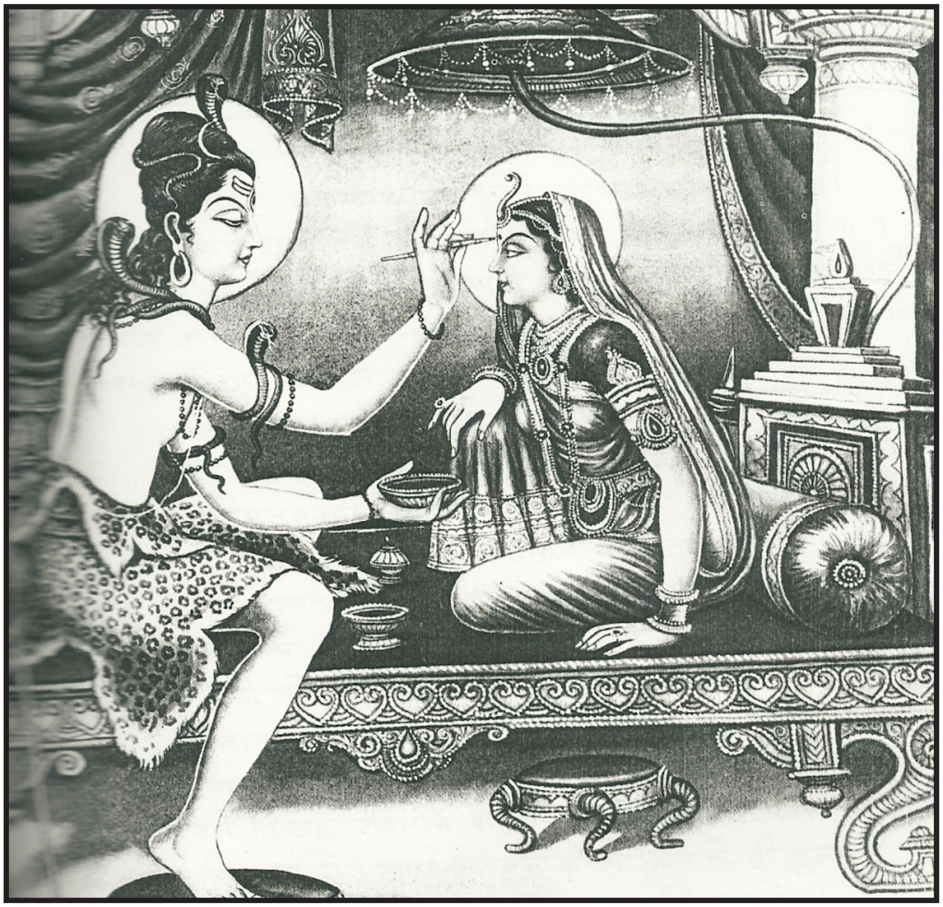

शिव – गौरी

अर्द्धनारीश्वर भगवान शिव वामांगिनी गौरी का सत्कार करते हुए जिन के साथ सहयोग से गृहस्थ आश्रम का सदाचार लोक में प्रस्तुत कर सभी के लिए अनुकरणय किया कि नारी रमणी नहीं, शक्ति स्वरूपा है। ऐसे देव के इस अद्भुत छबि को शत शत नमन।

काली से गौरी हुई तजकर काली चाम।
त्वक् से प्रकटी कौशिकी शक्ति शौर्य बल धाम।।
आ पहुंची देवी तुरत गौरी शिव के पास।
छायी परम प्रसन्नता शिव मन परमोल्लास।।
गौरी का शिव ने किया निज कर शुचि श्रृंगार।
लगा रहे अब भाल पर वेंदी भव भर्त्तार।।

शिव के पांच अवतरणों में स्थित सभी देवताओं की स्तुति तथा उनसे अभीष्ट पूर्ति एवं मंगल की कामना, जिसे श्रीकृष्ण भगवान उपमन्यु के मुख से श्रवण किया।

उपमन्युरुवाच

स्तोत्रं वक्ष्यामि ते कृष्ण पंचावरणमार्गतः।
योगेश्वरमिदं पुण्यं कर्म येन समाप्यते।।1।।

उपमन्यु कहते हैं कि हे श्रीकृष्ण! अब मैं तुम्हारे समक्ष पंचावरण मार्ग से किये जाने वाले स्तोत्र का वर्णन करूंगा, जिससे यह योगेश्वर नामक पुण्य कर्म पूर्णरूप से सम्पन्न होता है।

जय जय जगदेकनाथ शम्भो,
प्रकृति मनोहर नित्यचित्स्वभाव।
अतिगतकलुषाप्रपंचवाचामपि,
मनसां पदवीमतीततत्वम्।।2।।

जगत के एक मात्र रक्षक! नित्य चिन्मयस्वभाव! प्रकृति मनोहर शम्भो! आपका तत्व कलुषराशि से रहित, निर्मल, वाणी तथा मन की पहुंच से भी परे है। आप की जय हो। जय हो।

स्वभाव निर्मलाभोग जय सुन्दरचेष्टित।
स्वात्मतुल्यमहाशक्ते जय शुद्धगुणार्णव।।3।।

आपका श्री विग्रह स्वभाव से ही निर्मल है, आपकी चेष्टा परम सुन्दर है आपकी जय हो। आपकी महाशक्ति आपके ही तुल्य है। आप विशुद्ध कल्याणमय गुणों के महासागर हैं आपकी जय हो।

अनन्तकान्तिसम्पन्न जयासदृशविग्रह।
अतर्क्यमहिमाधार जयानाकुलमंगल।।4।।

आप अनन्त कान्ति से सम्पन्न हैं। आप के श्री विग्रह की कहीं तुलना नहीं है, आपकी जय हो। आप अतर्क्य महिमा के आधार हैं तथा शान्तिमय मंगल के निकेतन है आपकी जय हो।

निरंजन निराधार जय निष्कारणोदय।
निरन्तरपरानन्द जय निर्वृत्तिकारण।।

निरन्जन (निर्मल), आधार रहित तथा बिना कारण के प्रगट होने वाले शिव! आपकी जय हो। निरन्तर परमानन्दमय! शान्ति और सुख के कारण! आपकी जय हो।

जयातिपरमैश्वर्य जयातिकरुणास्पद।
जय स्वतन्त्रसर्वस्व जयासदृशवैभव।।6।।

अतिशय उत्कृष्ट ऐश्वर्य से सुशोभित तथा अत्यन्त करुणा के आधार आपकी जय हो। प्रभों! आपका सब कुछ स्वतंत्र है तथा आप के वैभव की कही समता नहीं है आपकी जय, जय हो।

जयावृतमहाशिव जयानावृत केनचित्।
जयोत्तर समस्तस्य जयात्यन्तनिरुत्तर।।7।।

आपने विराट विश्व को व्याप्त कर रखा है किन्तु आप किसी से भी वयाप्त नही है। आपकी जय हो। जय हो। आप सबसे उत्कृष्ट हैं किन्तु आप से श्रेष्ठ कोई नहीं है आपकी जय हो जय हो।

जयाद्भुत जयाक्षुद्र जयाक्षत जयाव्यय।
जयामेय जयामाय जयाभव जयामल।।8।।

आप अद्भुत है आपकी जय हो। आप अक्षुद्र (महान) है आपकी जय हो। आप अक्षत (निर्विकार) है आपकी जय हो। आप अविनाशी है आपकी जय हो। अप्रमेय परमात्मन् आपकी जय हो। माया रहित महेश्वर! आपकी जय हो। अजन्मा शिव! आपकी जय हो। निर्मल शंकर! आपकी जय हो।

महाभुज महासार महागुण महाकथ।
महाबल महामाय महारस महारथ।।9।।

महाबाहों! महासार! महागुण! महती कीर्ति कथा से युक्त! महाबली! महामायावी! महारसिक तथा महारथ आपकी जय हो।

नमः परमदेवाय नमः परमहेतवे।
नमः शिवाय शान्ताय नमः शिवतराय ते।।10।।

आप परम आराध्य को नमस्कार है। आप परम कारण को नमस्कार है। शान्त शिव को नमस्कार है और आप परम कल्याणमय प्रभु नमस्कार है।

त्वदधीनमिदं कृत्स्नं जगद्धि ससुरासुरम्।
अतस्त्वद्विहितामाज्ञां क्षमते कोऽतिवर्तितुम्।।11।।

देवताओं और असुरों सहित यह सम्पूर्ण जगत आपके अधीन है। अतः आपकी आज्ञा का उल्ल्लंघन करने में कौन समर्थ हो सकता है।

अयं पुनर्जनो नित्यं भवदेकसमाश्रयः।
भवानतोऽनुगृह्यास्मै प्रार्थितं सम्प्रयच्छतु।।12।।

हे सनातन देव! यह सेवक एक मात्र आपके ही आश्रित है अतः आप इस पर अनुग्रह कीके इसकी प्रार्थित वस्तु प्रदान करें।

जयाम्बिके जगन्मातर्जय सर्वजगन्मयि।
जयानवधिकैश्वर्य जयानूपसुविग्रहे।।13।।

अम्बिके! जगन्मातः! आपकी जय हो। सर्व जगन्मयी आपकी जय हो।

असीम ऐश्वर्य शालिनी! आपकी जय हो। आपके श्री विग्रह की कहीं उपमा नहीं है, आपकी जय हो।

जय वाङ्मनसातीते जयाचिद्ध्वान्तभंजिके।
जय जन्म जराहीने जय कालोत्तरोत्तरे।।14।।

मन वाणी से अतीत शिवे! आपकी जय हो। अज्ञानान्धकार का भंजन करने वाली देवि! आपकी जय हो। जन्म और जरा से रहित उमे! आपकी जय हो। काल से भी अतिशय उत्कृष्ट शक्ति वाली दुर्गे! आपकी जय हो।

जयानेक विधानस्थे जय विश्वेश्वरप्रिये।
जय विश्वसुराराध्ये जय विश्वविजृम्भिणि।।15।।

अनेक प्रकार के विधानों में स्थित परमेश्वरि! आपकी जय हो। विश्वनाथ प्रिय! आपकी जय हो। समस्त देवताओं की आराधनीया देवि! आपकी जय हो। सम्पूर्ण विश्व का विस्तार करने वाली जगदम्बिके! आपकी जय हो।

जय मंगलदिव्यांगि जय मंगलदीपिके।
जय मंगलचारित्रे जय मंगलदायिनि।।16।।

मंगलमय दिव्य अंगो वाली देवि! आपकी जय हो। मंगल को प्रकाशित काने वाली! आपकी जय हो। मंगलदायिनी! आपकी जय हो।

नमः परमकल्याणगुणसंचयमूर्तये।
त्वत्तः खलु समुत्पन्नं जगत्त्वय्येवलीयते।।17।।

परम कल्याणमय गुणों की आप मूर्ति है आपको नमस्कार है। सम्पूर्ण जगत् आप से ही उत्पन्न हुआ है अतः आपमें ही लीन होगा।

त्वद्विनातः फलं दातुमीश्वरोऽपि न शन्कुयात्।
जन्मप्रभृति देवेशि जनोऽयं त्वदुपाश्रितः।।18।।

देवेश्वरि! अतः आपके बिना ईश्वर भी फल देने में समर्थ नहीं हो सकते। यह जन जन्मकाल से ही आपकी शरण में आया हुआ है। अतः देवि! आप अपने इस भक्त का मनोरथ सिद्ध कीजिए।

पंचवक्त्रो दशभुजः शुद्धस्फटिकसंनिभः।।19।।
वर्णब्रह्मकलादेहो देवः सकलनिष्कलः।
शिवमूर्ति समारुढः शान्त्यतीतः सदाशिव।
भक्त्या मयार्चितो मह्यं प्रार्थितं शं प्रयच्छतु।।20।।

प्रभों आपके पांच मुख और दस भुजाएं हैं। आपकी अंग कान्ति शुद्ध स्फटिकमणि के समान निर्मल है। वर्ण ब्रह्म और कला आपके विग्रह रूप है।

आप सकल और निष्कल देवता है। शिवमूर्ति में सदा व्याप्त रहने वाले हैं। शान्त्यतीत पद में विराजमान सदाशिव आप ही है। मैंने भक्ति भाव से आपकी अर्चना की है आप मुझे प्रार्थित कल्याण प्रदान करें।

सदाशिवांकमारूढा शक्तिरिच्छा शिवाह्वया।
जननी सर्वलोकानां प्रयच्छतु मनोरथम्।।21।।

सदाशिव के अंक में आरूढ़, इच्छा शक्ति स्वरूपा, सर्वलोक जननी शिवा मुझे मनोवांछित वस्तु प्रदान करें।

शिवयोर्दयितौ पुत्रौ देवौ हेरम्बषण्मुखौ।
शिवानुभावौ सर्वज्ञौ शिवज्ञानामृताशिनौ।।22।।
तृप्तौ परस्परं स्निग्धौ शिवाभ्यां नित्यसत्कृतौ।
सत्कृतौ च सदादेवौ ब्रह्माद्यैस्त्रिदशैरपि।।23।।
सर्वलोकपरित्राणं कर्तुमभ्युदितौ सदा।
स्वेच्छावतारं कुर्वन्तौ स्वांशभेदैरनेकशः।।24।।
ताविमौ शिवयोः पार्श्वे नित्यमित्थं मयार्चितौ।
तयोराज्ञां पुरस्कृत्य प्राथितं मे प्रयच्छताम्।।25।।

शिव और पार्वती के प्रिय पुत्र, शिव के समान प्रभावशाली सर्वज्ञ तथा शिव ज्ञानामृत का पान करके तृप्त रहने वाले देवता गणेश सत्कृत हैं तथा ब्रह्मा आदि देवता भी इन दोनों देवों का सर्वथा सत्कार करते हैं। ये दोनों भाई निरन्तर सम्पूर्ण लोकों की रक्षा करने के लिए अवतार धारण करते हैं। वे ही ये दोनों बन्धु शिव और शिवा के पार्श्वभाग में मेरे द्वारा इस प्रकार पूजित हों उन दोनों की आज्ञा ले प्रतिदिन मुझे प्रार्थित वस्तु प्रदान करें।

शुद्धस्फटिकसंकाशमीशानाख्यं सदाशिवम्।
मूर्द्धाभिमानिनी मूर्तिः शिवस्य परमात्मनः।।26।।
शिवार्चनरतं शान्तं शान्त्यतीतं खमास्थितम्।
पंचाक्षरान्तिमं बीजं कलाभिः पंचभिर्युतम्।।27।।
प्रथमावरणे पूर्वं शक्त्या सह समर्चितम्।
पवित्रं परमं ब्रह्म प्रार्थितं मे प्रयच्छतु।।28।।

जो शुद्ध स्फटिक मणि के समान निर्मल, ईशान नाम से प्रसिद्ध और सदाकल्याण स्वरूप है। परमात्मा शिव की मूर्धाभिमानी मूर्ति हे। शिवार्चन में रत, शान्त, शान्त्यतीत कला में प्रतिष्ठित, आकाशमण्डल में स्थित शिव

पंचाक्षर का अन्तिम बीज स्वरूप, पांच कलाओं से युक्त और प्रथम आवरण में सबसे पहले शक्ति के साथ पूजित है, वह पवित्र पर ब्रह्म मुझे मेरी अभीष्ट वस्तु प्रदान करें।

बालसूर्यप्रतीकाशं पुरुषाख्यं पुरातनम्।
पूर्ववक्त्राभिमानं च शिवस्य परमेष्ठिनः।।29।।
शान्त्यात्मकं मरुत्संस्थं शम्भोः पादार्चनेरतम्।
प्रथम शिव बीजेषु कलासु च चतुष्कलम्।।30।।
पूर्व भागे मया भक्त्या शक्त्या सह समर्चितम्।
पवित्रं परमं ब्रह्म प्रार्थितं मे प्रयच्छतु।।31।।

जो प्रातःकाल के सूर्य की भांति अरुण प्रभा से युक्त, पुरातन, तत्पुरुष नाम से विख्यात, परमेष्ठी शिव के पूर्ववर्ती मुख का अभिमानी, शान्ति कला स्वरूप या शान्ति कला में प्रतिष्ठित, वायुमण्डल में स्थित, शिव चरणार्चन परायण, शिव के बीजों में प्रथम और कलाओं में चार कलाओं से युक्त है, मैंने पूर्व दिशा में भक्तिभाव शक्ति सहित जिसका पूजन किया है वह पवित्र परब्रह्म मेरी प्रार्थना सफल करें।

अंजनादिप्रतीकाशमघोरं घोरविग्रहम्।
देवस्य दक्षिणं वक्त्रं देवदेवपदार्चकम्।।32।।
विद्यापदं समारूढं वह्निमण्डलमध्यगम्।
द्वितीयं शिव बीजेषु कलास्वष्टकलान्वितम्।।33।।
शम्भोर्दक्षिणदिग्भागे शक्त्या सह समर्चितम्।
पवित्रं परमं ब्रह्म प्रार्थितं मे प्रयच्छतु।।34।।

जो अंजन आदि के समान श्याम, घोर शरीर वाला एवं अघोर नाम से प्रसिद्ध है, महादेवजी के दक्षिण मुख का अभिमानी तथा देवाधिदेव शिव के चरणों का पूजक है, विद्या कला पर आरूढ़ और अग्निमण्डल के मध्य विराजमान है, शिव बीजों में द्वितीय तथा कलाओं में अष्ट कला युक्त एवं भगवान शिव के दक्षिण भाग में शक्ति के साथ पूजित है, वह पवित्र पर ब्रह्म मुझे मेरी अभीष्ट वस्तु प्रदान करें।

कुंकुमक्षोदसंकाशं वामाख्यं वरवेषधृक्।
वक्त्रमुत्तरमीशस्य प्रतिष्ठायां प्रतिष्ठितम्।।35।।
वारिमण्डलमध्यस्थं महादेवार्चने रतम्।
तुरीयं शिवबीजेषु त्रयोदशकलान्वितम्।।36।।
देवस्योत्तरदिग्भागे शक्त्या सह समर्चितम्।
पवित्रं परमं ब्रह्म प्रार्थितं मे प्रयच्दतु।।37।।

जो कुंकुम चूर्ण अथवा केसर युक्त चन्दन के समान रक्तपीत वर्ण वाला

सुन्दर वेषधारी और वामदेव नाम से प्रसिद्ध है। भगवान शिव के उत्तरवर्ती मुख का अभिमानी है, प्रतिष्ठाकाल में प्रतिष्ठित है। जल के मण्डल में विराजमान तथा महादेव जी की अर्चना में तत्पर है। शिव बीजों में चतुर्थ तथा तेरह कलाओं से युक्त है और महादेव जी के उत्तरभाग में शक्ति के साथ पूजित हुआ है वह पवित्र पर ब्रह्म मेरी प्रार्थना पूर्ण करे और अभीष्ट वस्तु प्रदान करें।

शंखकुन्देन्दुधवलं सद्याख्यं सौम्यलक्षणम्।
शिवस्य पश्चिमं वक्त्रं शिवपादार्चने रतम्।।38।।
निवृत्ति पदनिष्ठं च पृथिव्यां समवस्थितम्।
तृतीयं शिवबीजेषु कलाभिश्चाष्टभिर्युतम्।।39।।
देवस्य पश्चिमे भागे शक्त्या सह समर्चितम्।
पवित्रं परमं ब्रह्म प्रार्थितं मे प्रयच्छतु।।40।।

जो शंख कुन्द और चन्द्रमा के समान धवल सौम्य तथा सद्योजात नाम से विख्यात है। भगवान शिव के पश्चिम मुख का अभिमानी एवं शिव चरणों की अर्चना में रत है, निवृत्तिकाल में प्रतिष्ठित तथा पृथ्वी मण्डल में स्थित है, शिव बीजों में तृतीय आठ कलाओं से युक्त और महादेव जी के पश्चिम भाग में शक्ति के साथ पूजित हुआ है वह पवित्र पर ब्रह्म मुझे मेरी प्रार्थित वस्तु प्रदान करने की कृपा करें।

शिवस्य तु शिवायाश्च हृन्मूर्ती शिवभाविते।
तयोराज्ञां पुरस्कृत्य ते मे कामं प्रयच्छताम्।।41।।

शिव और शिवा हृदय रूपी मूर्तियां शिव भावित हो उन्हीं दोनों की आज्ञा शिरोधार्य करके मेरा मनोरथ पूर्ण करें।

शिवस्य च शिवायाश्च शिखामूर्ती शिवाश्रिते।
सत्कृत्य शिवयोराज्ञां ते मे कामं प्रयच्छताम्।।42।।

शिव और शिवा की शिखा रूपी मूर्तियां शिव के ही आश्रित रहकर उन दोनों की आज्ञा आदर करके मुझे मेरी अभीष्ट वस्तु प्रदान करें।

शिवस्य च शिवायाश्च वर्मणा शिवभाविते।
सत्कृत्य शिवयोराज्ञां ते मे कामं प्रयच्छताम्।।43।।

शिव और शिवा की कवच रूपा मूर्तियां शिव भाव से भावित हो शिव पार्वती की आज्ञा का सत्कार करके मेरी कामना सफल करें।

शिवस्य च शिवायाश्च नेत्रमूर्ती शिवाश्रिते।
सत्कृत्य शिवयोराज्ञां ते मे कामं प्रयच्छताम्।।44।।

शिव और शिवा की नेत्र रूपा मूर्तियां शिव के आश्रित रह उन्हीं दोनों की आज्ञा शिरोधार्य करके मुझे मेरा मनोरथ प्रदान करें।

अस्त्रमूर्ती च शिवयोर्नित्यमर्चनतत्परे।
सत्कृत्य शिवयोराज्ञां ते मे कामं प्रयच्छताम्।।45।।

शिव और शिवा की अस्त्र रूपी मूर्तियां नित्य उन्हीं दोनों के अर्चन में तत्पर रह उनकी आज्ञा का सत्कार करती हुई मुझे मेरी अभीष्ट वस्तु प्रदान करें।

वामो ज्येष्ठस्तथा रुद्रः कालो विकरणस्तथा।
बलो विकरणश्चैव बलप्रमथनः परः।।46।।

वाम, जेष्ठ, रुद्र, काल, विकरण, बल विकरण, बल प्रमथन तथा सर्वभूत उमन ये आठ शिव मूर्तियां तथा इनकी वैसी ही आठ शक्तियां वामा, जेष्ठा, रुद्राणी, काली, विकरणी, बल विकरणी, बल प्रमथनी तथा सर्वभूतदमनी ये सब शिव और शिवा के ही शासन से मुझे प्रार्थित वस्तु प्रदान करें।

अथानन्तश्च सूक्ष्मश्च शिवश्चाप्येकनेत्रकः।
एकरुद्रस्त्रिमूर्तिश्च श्रीकण्ठश्च शिखण्डिकः।।48।।
तथाष्टौ शक्तयस्तेषां द्वितीयावरणेऽर्चिताः।
ते मे कामं प्रयच्छतु शिवयोरेव शासनात्।।49।।

अनन्त, सूक्ष्म, शिव (अथवा शिवोत्तम) एक नेत्र, एक रुद्र, त्रिमूर्ति, श्रीकण्ठ और शिखण्डी ये आठ विद्येश्वर तथा इनकी वैसी ही आठ शक्तियां अनन्ता, सूक्ष्मा, शिवा (अथवा शिवोत्तमा) एक नेत्रा, एक रुद्रा, त्रिमूर्ति श्रीकण्ठ और शिखण्डिनी जिनकी द्वितीय आवरण में पूजा हुई है। शिवा और शिव के ही शासन से मेरी कामना पूर्ण करें।

भवाद्या मूर्तयश्चाष्टौ तासामपि च शक्तयः।
महादेवादयश्चान्ये तथैकादशमूर्तयः।।50।।
शक्तिभिः सहिताः सर्वे तृतीयावरणे स्थिताः।
सत्कृत्य शिवयोराज्ञां दिशन्तु फलमीप्सितम्।।51।।

भव आदि आठ मूर्तियां और उनकी शक्तियां तथा शयों सहित महादेव आदि ग्यारह मूर्तियां जिनकी स्थिति तीसरे आवरण में है शिव और पार्वती की आज्ञा शिरोधार्य करके मुझे अभीष्ट फल प्रदान करें।

वृषराजो महातेजा महामेघसमस्वनः।
मेरुमन्दरकैलाशहिमाद्रिशिखरोपमः।।52।।
सिताभ्र शिखराकारककुदा परिशोभितः।
महाभोगीन्द्रकल्पेन वालेन च विराजितः।।53।।
रक्तास्यशृंगचरणो रक्तप्रायविलोचनः।
पीवरोन्नतसर्वांगः सुचारुगमनोज्ज्वलः।।54।।

प्रशस्तलक्षणः श्रीमान् प्रज्वलन्मणिभूषणः।
शिवप्रियः शिवासक्तः शिवयोर्ध्वजवाहनः।।55।।
तथा तच्चरणन्यासपावितापरविग्रहः।
गो राजपुरुषः श्रीमान् श्रीमच्छूलवरायुधः।
तयोराज्ञां पुरस्कृत्य स मे कामं प्रयच्छतु।।56।।

जो वृषभों के राजा, महा तेजस्वी, महान, मेघ के समान शब्द करने वाले मेरु, मन्दराचल, कैलास ओर हिमालय के शिखर की भांति ऊंचे एवं उज्जवल वर्ण वाले हैं, श्वेत बादलों के शिखर की भांति ऊंचे ककुद से शोभित है, महानागराज (शेष) के शरीर की भांति पूंछ जिनकी शोभा बढ़ाती है जिनके मुख सींग और पैर भी लाल हैं नेत्र भी प्रायः लाल ही है, जिनके सारे अंग मोटे और उन्नत हैं जो अपनी मनोहर चाल से बड़ी शोभा पाते हैं जिनमें उत्तम लक्षण विद्यमान हैं जो चमचमाते हुए मणिमय आभूषणों से विभूषित हो अत्यन्त दीप्तिमान् दिखाई देते हैं जो भगवान् शिव को प्रिय है और शिव में ही अनुरक्त रहते है। शिव और शिवा दोनों के ही जो ध्वज और वाहन है तथा उनके चरणों के स्पर्श से जिनका पृष्ठभाग परम पवित्र हो गया है जो गौओं के राजपुरुष हैं वे श्रेष्ठ और चमकीला त्रिशूल धारण करने वाले नन्दिकेश्वर वृषभ शिव और शिवा की आज्ञा शिरोधार्य करके मुझे अभीष्ट वस्तु प्रदान करें।

नन्दीश्वरो महातेजा नगेन्द्रतनयात्मजः।
सनारायणकैर्देर्नित्यमभ्यर्च्य वन्दितः।।57।।
शर्वस्यान्तः पुरद्वारि सार्द्धं परिजनैः स्थितः।
सर्वेश्वरसमप्रख्यः सर्वासुरविमर्दनः।।58।।
सर्वेषां शिवधर्माणामध्यक्षत्वेऽभिषेवितः।
शिवप्रियः शिवासक्तः श्रीमच्छूलवरायुधः।।59।।
शिवाश्रितेषु संसक्तस्त्वनुरक्तश्च तैरपि।
सत्कृत्य शिवयोराज्ञां स मे कामं प्रयच्छतु।।60।।

जो गिरिराजनन्दिनी पार्वती के लिए पुत्र के तुल्य प्रिय हैं श्रीविष्णु आदि देवताओं द्वारा नित्य पूजित एवं वन्दित हैं, भगवान शंकर के अन्तःपुर के द्वार पर परिजनों के साथ खड़े रहते है सर्वेश्वर शिव के समान ही तेजस्वी है तथा समस्त असुरों को कुचल देने की शक्ति रखते हैं शिव धर्म का पालन करने वाले सम्पूर्ण शिव भक्तों के अध्यक्ष पद पर जिनका अभिषेक हुआ है जो भगवान शिव के प्रिय, शिव में ही अनुरक्त तथा तेजस्वी त्रिशूल नाम श्रेष्ठ आयुध धारण करने वाले हैं भगवान शिव के शरणागत भक्तों पर जिनका स्नेह है तथा शिव भक्तों

का भी जिनमें अनुराग है वे महान तेजस्वी देव रूप नन्दीश्वर शिव और पार्वती की आज्ञा को शिराधार्य करके मुझे मनोवांछित वस्तु प्रदान करें।

महाकाले महाबाहुर्महादेव इवापरः।
महादेवाश्रितानां तु नित्यमेवाभिरक्षतु।।61।।

दूसरे महादेव के समान महा तेजस्वी महाबाहु महाकाल महादेव जी के शरणागत भक्तों की नित्य रक्षा करें।

शिवप्रियः शिवासक्तः शिवयोरर्चकः सदा।
सत्कृत्य शिवयोराज्ञां स मे दिशतु कांक्षितम्।।62।।

वे भगवान शिव के प्रिय हैं भगवान शिव में उनकी आसक्ति है तथा वे सदा ही शिव और पार्वती के पूजक है इसलिए शिव और शिव की आज्ञा का आदर करके मुझे मनोवांछित वस्तु प्रदान करें।

सर्वशास्त्रार्थतत्वज्ञः शास्ता विष्णोः परा तनुः।
महामोहात्मतनयो मधुमांसासवप्रियः।
तयोराज्ञां पुरस्कृत्य स मे कामं प्रयच्छतु।।63।।

जो सम्पूर्ण शास्त्रों के तात्विक, अर्थ के ज्ञाता, भगवान विष्णु के द्वितीय स्वरूप, सब के शासक तथा महामोहात्मा कद्रू के पुत्र है, मधु फल का गूदा और आसव जिन्हें प्रिय हैं वे नागराज भगवान शेष शिव और पार्वती की आज्ञा को सामने रखते हुए मेरी इच्छा को पूर्ण करें।

ब्रह्माणी चैव माहेशी कौमारी वैष्णवी तथा।
वाराही चैव माहेन्द्री चामुण्डा चण्डविक्रमा।।64।।
एता वै मातरः सप्त सर्वलोकस्य मातरः।।65।।

ब्रह्माणी, माहेश्वरी, कौमारी, वैष्णवी, वाराही, माहेन्द्री तथा प्रचण्ड पराक्रम शालिनी चामुण्डा उेवी ये सर्वलोक जननी सात मातायें शिव के आदेश से मुझे मेरी प्रार्थित वस्तु प्रदान करें।

मत्तामातंगवदनो गंगोमाशंकरात्मजः।
आकाशदेहे दिग्बाहुः सोमसूर्याग्निलोचनः।।66।।
ऐरावतादिभिर्दिव्यैर्दिग्गजैर्नित्यमर्चितः।
शिवज्ञानमदोद्भिन्नस्त्रिदशानामविघ्नकृत्।।67।।
विघ्नकृच्चासुरादीनां विघ्नेशः शिवभावितः।
सत्कृत्य शिवयोराज्ञां स मे दिशतु कांक्षितम्।।68।।

जिनका मतवाले हाथी सा मुख है, जो गंगा उमा ओर शिव के पुत्र हैं।

आकाश जिनका शरीर है, दिशाएं भुजायें है तथा चन्द्रमा सूर्य और अग्नि जिनके तीन नेत्र हैं ऐरावत आदि दिव्य दिग्गज जिनकी नित्य पूजा करते हैं जिनके मस्तक से शिव ज्ञानमय मद की धारा बहती रहती है जो देवताओं के विघ्न का निवारण करते है और असुर आदि के कार्यो में विघ्न डालते रहते हैं। वे विघ्नराज गणेश शिव से भावित हो शिवा और शिव की आज्ञा शिरोधार्य करके मेरा मनोरथ प्रदान करें।

षण्मुखः शिवसम्भूतः शक्तिवज्रधरः प्रभुः।
अग्नेश्च तनयो देवो ह्यपर्णातनयः पुनः।।69।।
गंगायाश्च गणात्वायाः कृत्तिकानां तथैव च।
विशाखेन च शाखेन नैगमेयेन चावृतः।।70।।
इन्द्रजिच्चेन्द्रसेनानीस्तारकासुरजित्तथा।
शैलानां मेरुमुख्यानां वेधकश्च स्वतेजसा।।71।।
तप्तचामीकरप्रख्यः शतपत्रदलेक्षणः।
कुमारः सुकुमाराणां रूपोदाहरणं महत्।।72।।
शिवप्रियः शिवासक्तः शिवपादार्चकः सदा।
सत्कृत्य शिवयोराज्ञां स मे दिशतु कांक्षितम्।।73।।

जिनके छः मुख है भगवान शिव से जिनकी उत्पत्ति हुई है जो शक्ति और वज्र धारण करने वाले प्रभु है अग्नि के पुत्र तथा अपर्णा (शिवा) के बालक हैं। गंगा गणाम्बा तथा कृतिकाओं के भी पुत्र हैं। विशाख शाख और नैगमेय इन तीनों भाइयों से जो सदा घिरे रहते हैं जो इन्द्र विजयी इन्द्र के सेनापति तथा तारकासुर को परास्त करने वाले हैं जिन्होंने अपनी शक्ति से मेरु आदि पर्वतों को छेद डाला है जिनकी अंग कान्ति तपाये हुए सुवर्ण के समान है नेत्र प्रफुल्ल के कमल सुन्दर है कुमार नाम से जिनकी प्रसिद्धि है जो सुकुमारों के रूप के सबसे बड़े उदाहरण है शिव के प्रिय, शिव में अनुरक्त तथा शिव चरणों की नित्य अर्चना करने वाले है स्कन्द शिव और शिव की आज्ञा को शिराधार्य करके मुझे मनोवांछित वस्तु प्रदान करें।

ज्येष्ठा वरिष्ठा वरदा शिवयोर्यजने रता।
तयो राज्ञां पुरस्कृत्य सामे दिशतु कांक्षितम्।।74।।

सर्व श्रेष्ठ और वरदायिनी जेष्ठादेवी जो सदा भगवान शिव और पार्वती के पूजन में लगी रहती है उन दोनों की आज्ञा मानकर इच्छित वस्तु प्रदान करें।

त्रैलोक्यवन्दिता साक्षादुल्काकारा गणाम्बिका।
जगत्सृष्टिविवृद्ध्यर्थं ब्रह्मणाभ्यर्थिता शिवात्।।75।।

शिवायाः प्रविभक्ताया भ्रुवोरन्तरनिस्सृता।
दाक्षायणी सती मेना तथा हैमवती ह्युमा।।76।।
कौशिक्याश्चैव जननी भद्रकाल्यास्तथैव च।
अपर्णायाश्च जननी पाटलायास्तथैव च।।77।।
शिवार्चनरता नित्यं रुद्राणी रुद्रवल्लभा।
सत्कृत्य शिवयोराज्ञां सा मे दिशतु कांक्षितम्।।78।।

त्रैलोक्य वन्दिता, साक्षात् उल्का (लुकाठी) जैसी आकृति वाली गणाम्बिका जो जगत की सृष्टि बढ़ाने के लिए ब्रह्मा जी के प्रार्थना करने पर शिव के शरीर से पृथक हुई शिवा के दोनों भौहों के बीच से निकली थी जो दाक्षायणी, सती, मेना तथा हिमवान कुमारी उमा आदि के रूप में प्रसिद्ध है कौशिकी, भद्रकाली, अपर्णा और पाटला की जननी हैं नित्य शिवार्चन में तत्पर रहती है एवं रुद्रवल्लभा रुद्राणी कहलाती है वे शिव और शिवा की आज्ञा शिराधार्य करके मुझे मनोवांछित वस्तु प्रदान करें।

चण्डः सर्वगणेशानः शम्भोर्वदनसंभवः।
सत्कृत्य शिवयोराज्ञां सा मे दिशतु कांक्षितम्।।79।।

समस्त शिवगणों के स्वामी चण्ड जो भगवान शंकर के मुख से प्रकट हुए हैं शिवा और शिव की आज्ञा का आदर करके अभीष्ट वस्तु प्रदान करें।

पिंगलो गणपः श्रीमान् शिवसक्तः शिवप्रियः।
आज्ञया शिवयोरेव स मे कामं प्रयच्छतु।।80।।

भगवान शिव में और शिव के प्रिय गणपाल श्रीमान पिंगल शिव और शिवा की आज्ञा से ही मेरी मनःकामना पूर्ण करें।

भृंगीशो नाम गणपः शिवाराधनतत्परः।
प्रयच्छतु स मे कामं पत्युराज्ञापुरस्सरम्।।81।।

शिव की आराधना में त्तपर रहने वाले भृंगीश्वर नामक गणपाल अपने स्वामी की आज्ञा ले मुझे मनोवांछित वस्तु प्रदान करें।

वीरभद्रो महातेजा हिमकुन्देन्दुसंनिभः।
भद्रकाली प्रियो नित्यं मातृणां चाभिरक्षिता।।82।।
यज्ञस्य च शिरोहर्त्ता दक्षस्य च दुरात्मनः।
उपेन्द्रेन्द्रयमादीनां देवानामंगतक्षकः।।83।।
शिवस्यानुचरः श्रीमान् शिवशासनपालकः।
शिवयोः शासनादेव स मे दिशतु कांक्षितम्।।84।।

हिम कुन्द और चन्द्रमा के समान उज्ज्वल भद्रकाली के प्रिय, सदा ही मातृगणों की रक्षा करने वाले दुरात्मा दक्ष और उसके यज्ञ का सिर काटने वाले

उपेन्द्र, इन्द्र और यम आदि देवताओं के अंगो में घाव कर देने वाले, शिव के अनुचर तथा शिव की आज्ञा के पालक महातेजस्वी श्रीमान वीरभद्र शिव और शिवा के आदेश से ही मुझे मेरी मनचाही वस्तु प्रदान करें।

सरस्वती महेशस्य वाक्सरोजसमुद्भवा।
शिवयोः पूजने सक्ता सा मे दिशतु कांक्षितम्।।85।।

महेश्वर के मुख कमल से प्रकट हुई तथा शिव पार्वती के पूजन में आसक्त रहने वाली वे सरस्वती देवी मुझे मनोवांछित वस्तु प्रदान करें।

विष्णोर्वक्षःस्थिता लक्ष्मीः शिवयोः पूजने रता।
शिवयोः शासनादेव सा मे दिशतु कांक्षितम्।।86।।

भगवान विष्णु के वक्षस्थल में विराजमान लक्ष्मी देवी जो सदाशिव और शिवा के पूजन में लगी रहती हैं उन शिव दम्पति के आदेश से ही मेरी अभिलाषा पूर्ण करें।

महामोटी महादेव्याः पादपूजापरायणा।
तस्या एव नियोगेन सा मे दिशतु कांक्षितम्।।87।।

महादेवी पार्वती के पादपद्मों की पूजा में परायण महामोटी उन्हीं की आज्ञा से मेरी मनचाही वस्तु मुझे दें।

कौशिकी सिंहमारूढा पार्वत्याः परमा सुता।
विष्णोर्निद्रा महामाया महामहिषमर्दिनी।।88।।
निशुम्भशुम्भसंहर्त्री मधुमांसासवप्रिया।
सत्कृत्य शासनं मातुः सा मे दिशतु कांक्षितम्।।89।।

पाव्रती की सबसे श्रेष्ठ पुत्री सिंहवाहिनी, कौशिकी, भगवान विष्णु की योगनिद्रा, महामाया, महामहिषमर्दिनी, महालक्ष्मी तथा मधु और फलों के गूदे तथा रस को प्रेमपूर्वक भोग लगाने वाली निशुंभ शुंभ संहारिणी महासरस्वती माता पार्वती की आज्ञा से मुझे मनोवांछित वस्तु प्रदान करें।

रुद्रा रुद्रसमप्रख्याः प्रमथाः प्रथितौजसः।
भूताख्याश्च महावीर्या महादेवसमप्रभा।।90।।
नित्यमुक्ता निरुपमा निर्द्वन्द्वा निरुपप्लवाः।
सशक्तयः सानुचराः सर्वलोकनमस्कृताः।।91।।
सर्वेषामेव लोकानां सृष्टिसंहरणक्षमाः।
परस्परानुरक्ताश्च परस्परमनुव्रताः।।92।।
परस्परमतिस्निग्धाः परस्परनमस्कृताः।
शिवप्रियतमा नित्यं शिवलक्षणलक्षिताः।।93।।

सौम्या घोरास्तथा मिश्राश्चन्तरालद्वयात्मिका।
विरूपाश्च सुरूपाश्च नानारूपधरास्तथा।।94।।
सत्कृत्य शिवयोराज्ञां ते मे कामं दिशन्तु वै।

रुद्रदेव के समान तेजस्वी रुद्रगण, प्रख्यात पराक्रमी प्रमथगण तथा महादेव जी के समान तेजस्वी महाबलीभूतगण, जो नित्यमुक्त, उपमारहित, निर्द्वन्द्व, उपद्रवशून्य, शक्तियों और अनुचरों के साथ रहने वाले, सर्व लोक वन्दित, समस्त लोको की सृष्टि और संहार में समर्थ, परस्पर एक दूसरे के अनुरक्त और भक्त, आपस में अत्यन्त स्नेह रखने वाले, एक दूसरे को नमस्कार करने वाले, शिव के नित्य प्रियतम, शिव के ही चिन्हों से लक्षित, सौम्य, घोर, उभयभावयुक्त, दोनों के बीच में रहने वाले द्विरूप, कुरूप, सुरूप, और नाना रूप धारी हैं। वे शिव और शिवा की आज्ञा का सत्कार करते हुए मेरा मनोरथ सिद्ध करें।

देव्याः प्रियसखीवर्गो देवीलक्षणलक्षितः।।95।।
सहितो रुद्रकन्याभिः शक्तिभिश्चाप्यनेकशः।
तृतीया वरणे शम्भोर्भक्त्या नित्यं समर्चितः।।96।।
सत्कृत्य शिवयोराज्ञां स मे दिशतु मंगलम्।

देवी की प्रिय सखियों का समुदाय, जो देवी के ही लक्षणों से लक्षित है और भगवान शिव के तीसरे आवरण में रुद्रकन्यायों तथा अनेक शक्तियों सहित नित्य भक्ति भाव से पूजित हुआ है वह शिव पार्वती की आज्ञा का सत्कार कर के मुझे मंगल प्रदान करें।

दिवाकरो महेशस्य मूर्तिर्दीप्तिसुमण्डलः।।97।।
निर्गुणो गुणसंकीर्णस्तथैव गुणकेवलः।
अविकारात्मकश्चाद्यः एकः सामान्यविक्रियः।।98।।
असाधारणकर्मा च सृष्टिस्थितिलयक्रमात्।
एवं त्रिधा चतुर्द्धा च विभक्तः पंचधा पुनः।।99।।
चतुर्थावरणे शम्भोः पूजितश्चानुगैः सह।
शिव प्रियः शिवासक्तः शिवपादार्चने रतः।।100।।
सत्कृत्य शिवयोराज्ञां स मे दिशतु मंगलम्।

भगवान सूर्य महेश्वर की मूर्ति है उनका सुन्दर मण्डल दीप्तिमान है। वे निर्गुण होते हुए भी कल्याणमय गुणों से युक्त है केवल सदगुण रूप है, निर्विकार सगके आदि कारण और एक मात्र (अद्वितीय) हैं यह सामान्य जगत उन्हीं की सृष्टि है, सृष्टि पालन और संहार के क्रम से उन के कर्म असाधारण हैं इस तरह वे तीन चरणों और पांच रूपों में विभक्त हैं भगवान शिव के चौथे आवारण में अनुचरों सहित उनकी पूजा हुई है वे शिव के प्रिय, शिव में ही

आसक्त तथा शिव के चरणारविन्दों की अर्चना में तत्पर हैं ऐसे सूर्य देव शिवा और शिव की आज्ञा का सत्कार करके मुझे मंगल प्रदान करें।

दिवाकर षडंगानि दीप्ताद्याश्चष्टशक्तयः।।101।।
आदित्यो भास्करो भानू रविश्चेत्यनुपूर्वशः।
अर्को ब्रह्मा तथा रुद्रो विष्णुश्चादित्यमूर्तयः।।102।।
विस्तरा सुतरा बोधिन्याप्यायिन्यपराः पुनः।
उषा प्रभा तथा प्रज्ञा सन्ध्या चेत्यपि शक्तयः।।103।।
सोमादिकेतुपर्यप्ता ग्रहाश्च शिवभाविताः।
शिवयोराज्ञया नुन्ना मंगलं प्रदिशन्तु मे।।104।।
अथ वा द्वादशादित्यास्तथा द्वादश शक्तयः।
ऋषयो देवगन्धर्वाः पन्नगाप्सरसां गणाः।।105।।
ग्रामण्यश्च तथा यक्षाराक्षसाश्च सुरास्तथा।
सप्त सप्तगणाश्चैते सप्तच्छन्दोमया हयाः।।106।।
बालखिल्यादयश्चैव सर्वे शिवपदार्चकाः।
सत्कृत्य शिवयोराज्ञां मंगलं प्रदिशन्तु मे।।107।।

सूर्य देव से सम्बन्ध रखने वाले छहों अंग, उनकी दीप्ता आदि आठ शक्तियां, आदित्या, भास्कर, भानु, रवि, अर्क, ब्रह्मा, रुद्र तथा विष्णु ये आठ आदित्य मूर्तियां और विस्तरा, सुतरा, बोधिनी, आप्यायिनी तथा उनके अतिरिक्त उषा, प्रभा, प्राज्ञा और सन्ध्या ये शक्तियां, चन्द्रमा से लेकर केतु पर्यन्त शिव भावित ग्रह, बारह आदित्य उनकी बारह शक्तियां तथा.षि देवता गन्धर्व, नाग, अप्सराओं के समूह, ग्रामणी (अगुवा) यक्ष राक्षस ये सात सात संख्या वाले गण, सात छन्दोमय, अश्व, वालखिल्य आदि मुनि ये सब भगवान शिव के चरणारविन्दों की अर्चना करने वाले है। ये लोग शिव और पार्वती की आज्ञा कर आदर करते हुए मंगल प्रदान करें।

ब्रह्माथ देवदेवस्य मूर्तिर्भूमण्डलाधिपः।
चतुःषष्टिगुणैश्वर्यो बुद्धितत्वे प्रतिष्ठितः।।108।।
निगुणो गुणसंकीर्णस्तथैव गुणकेवलः।
अविकारात्मको देवस्ततः साधारणः पुरः।।109।।
असाधारण कर्मा च सृष्टिस्थितिलयक्रमात्।
एवं त्रिधा चतुर्द्धा च विभक्तः पंचधा पुनः।।110।।
चतुर्थावरणे शम्भोः पूजितश्च सहानुगैः।
शिवप्रियः शिवासक्तः शिवपादार्चने रतः।।111।।
सत्कृत्य शिवयोराज्ञां स मे दिशतु मंगलम्।

ब्रह्मा जी देवाधिदेव महादेव जी की मूर्ति है भूमण्डल के अधिपति हैं। चौंसठ गुणों के ऐश्वर्य से युक्त है और बुद्धितत्व में प्रतिष्ठित है। वे निर्गुण होते हुए भी अनेक कल्याणमय गुणों से सम्पन्न है, सदगुण समूह रूप है निर्विकार देवता है उनके सामने दूसरे सब लोग साधारण हैं सृष्टि पालन और संहार के क्रम से उनके सब कर्म असाधरण हैं। इस तरह वे तीन चार एव आवरणों या स्वरूपों में विभक्त हैं। भगवान शिव के चौथे आवरण में अनुचरों सहित उनकी पूजा हुई हैं वे शिव के प्रिय शिव में ही आसक्त तथा शिव के चरणारविन्दों की अर्चना में तत्पर हैं ऐसे ब्रह्मदेव शिवा और शिव की आज्ञा का सत्कार करके मुझे मंगल प्रदान करें।

हिरण्यगर्भो लोकेशो विराट् कालश्च पूरुषः।।112।।
सनत्कुमारः सनकः सनन्दश्च सनातनः।
प्रजानां पतयश्चैव दक्षाद्या ब्रह्मसूनयः।।113।।
एकादश सपत्नीका धर्मः संकल्प एव च।
शिवार्चनरताश्चैते शिवभक्तिपरायणाः।।114।।
शिवाज्ञावशगाः सर्वे दिशन्तु मम मंगलम्।

हिरण्यगर्भ, लोकेश, विराट, कालपुरुष, सनत्कुमार, सनक, सनन्दन, सनातन, दक्ष आदि ब्रह्म पुत्र, ग्यारह प्रजापति और उनकी पत्नियां, धर्म तथा संकल्प ये सबके सब शिव की अर्चना में तत्पर रहने वाले और शिव भक्ति परायण है अतः शिव की आज्ञा के अधीन मुझे मंगल प्रदान करें।

चत्वारश्च तथा वेदाः सेतिहासपुराणकाः।
धर्म शास्त्राणि विद्याभिर्वैदिकीभिः समन्विता।
परस्पराविरुद्धार्थाः शिवप्रकृतिपादकाः।।116।।
सत्कृत्य शिवयोराज्ञां मंगलं प्रदिशन्तु मे।

चार वेद, इतिहास, पुराण, धर्मशास्त्र और वैदिक विद्याएं से सबके सब एक मात्र शिव के स्वरूप का प्रतिपादन करने वाले हैं अतः इनका तात्पर्य एक दूसरे के विरूद्ध नहीं है ये सब शिव और शिवा की आज्ञा शिराधार्य करके मेरा मंगल करें।

अथ रुद्रो महादेवः शम्भोर्मूर्तिर्गरीयसी।।117।।
वाह्नेयमण्डलाधीशः पौरुषैश्वर्यवान् प्रभुः।
शिवाभिमानसम्पन्नौ निर्गुणस्त्रिगुणात्मकः।।118।।
केवलं सात्त्विकश्चापि राजसश्चैव तामसः।
अविकाररतः पूर्वं ततस्तु समविक्रियः।।119।।

असाधारणकर्मा च सृष्ट्यादिकरणात्पृथक्।
ब्रह्मणोऽपि शिरश्छेत्ता जनकस्तस्य तत्सुतः।।120।।
जनकस्तनयश्चापि विष्णोरपि नियामकः।
बोधकश्च तयोर्नित्यमनुग्रहकरः प्रभुः।।121।।
अण्डस्यान्तर्बहिर्वर्ती रुद्रो लोकद्वयाधिपः।
शिवप्रियः शिवासक्तः शिवपादार्चने रतः।।122।।
शिवस्याज्ञां पुरस्कृत्य स मे दिशतु मंगलम्।

महादेव रुद्र शंभु की सबसे गरिष्ठ मूर्ति है। ये अग्निमण्डल के अधीश्वर हैं। समस्त पुरुषार्थों और ऐश्वर्यो से सम्पन्न है सर्व समर्थ हैं। इनमें शिव तत्व का अभिमान जागृत है वे निर्गुण होते हुए भी त्रिगुण रूप हैं। केवल सात्विक, राजस और तामस भी हैं। ये पहले निर्विकार हैं। सब कुछ इन्हीं की सृष्टि है। सृष्टि पालन और संहार करने के कारण इनका कर्म असाधारण माना जाता है। ये ब्रह्माजी के भी मस्तक का छेदन करने वाले हैं। ब्रह्माजी जनक और पुत्र हैं तथा उन्हें नियंत्रण में रखने वाले हैं। ये उन दोनों ब्रह्मा और विष्णु को ज्ञान देने वाले तथा नित्य उन पर अनुग्रह रखने वाले हैं। ये प्रभु ब्रह्माण्ड के भीतर और बाहर भी व्याप्त हैं तथा इह लोक और परलोक दोनों लोकों के अधिपति रुद्र हैं। ये शिव के प्रिय, शिव में ही आसक्त तथा शिव के चरणारविन्दों की अर्चना में तत्पर हैं अतः शिव की आज्ञा को सामने रखते हुए मेरा मंगल प्रदान करें।

तस्य ब्रह्म षडंगानि विद्येशानां तथाष्टकम्।।123।।
चत्वारो मूर्तिभेदाश्च शिवपूर्वाः शिवार्चकाः।
शिवो भवो हरश्चैव मृडश्चैव तथापरः।
शिवस्याज्ञां पुरस्कृत्य मंगलं प्रदिशन्तु मे।।124।।

भगवान शंकर के स्वरूप भूत ईशानादि, ब्रह्म, हृदयादि छः अंग, आठ विद्येश्वर, शिव आदि चार मूर्ति भेद, शिव, भव, हर और मृड ये सबके सब शिव के पूजक हैं। ये लोग शिव की आज्ञा को शिरोधार्य करके मुझे मंगल प्रदान करें।

अथ विष्णुर्महेशस्य शिवस्यैव परा तनुः।
वारितत्त्वाधिपः साक्षादव्यक्तपद संस्थितः।।125।।
निर्गुणः सत्त्वबहुलस्तथैव गुण केवलः।
अविकाराभिमानी च त्रिसाधारणविक्रियः।।126।।
असाधारण कर्मा च सृष्ट्यादिकरणात्पृथक्।
दक्षिणांगभवेनापि स्पर्धमानः स्वयम्भुवा।।127।।

आद्येन ब्रह्मणा साक्षात्सृष्टः स्रष्टा च तस्य तु।
अण्डस्यान्तर्बहिर्वर्ती विष्णुर्लोकद्वशधिपः।।128।।
असुरान्तकरश्चक्री शक्रस्यापि तथानुजः।
प्रादूर्भूतश्च दशधा भृगुशापच्छलादिह।।129।।
भूभारनिग्रहार्थाय स्वेच्छयावातरत् क्षितौ।
अप्रमेयबलो मायी मायया मोहयंजगत्।।130।।
मूर्ति कृत्वा महाविष्णु सदाविष्णुमथापि वा।
वैष्णवैः पूजितो नित्यं मूर्तित्रयमयासने।।131।।
शिवप्रियः शिवासक्तः शिवपादार्चने रतः।
शिवस्याज्ञां पुरस्कृत्य स मे दिशतु मंगलम्।।132।।

भगवान विष्णु महेश्वर शिव के ही उत्कृष्ट स्वरूप हैं। वे जल तत्व के अधिपति और साक्षात् अव्यक्त पद पर प्रतिष्ठित हैं। प्राकृत गुणों से रहित हैं। उनमें दिव्य सत्वगुण की प्रधानता है तथा वे विशुद्ध स्वरूप हैं। उनमें निर्विकार रूपता का अभिमान है। साधारण तीनों लोक उनकी कृति है। सृष्टि पालन आदि करने के कारण उनके कर्म असाधारण है। वे रुद्र के दक्षिणांग से प्रकट हुए स्वयम्भू के साथ एक समय स्पर्धा कर चुके हैं। साक्षात् आदि ब्रह्मा द्वारा उत्पादित होकर भी वे उनके भी उत्पादक हैं। ब्रह्माण्ड के भीतर और बाहर व्याप्त है इसलिए विष्णु कहलाते हैं। दोनों लोकों के अधिपति हैं। असुरों का अन्त करने वाले चक्रधारी तथा इन्द्र के भी छोटे भाई हैं। दस अवतार विग्रहों के रूप में यहां प्रकट हुए हैं। भृगु के शाप के बहाने पृथ्वी का भार उतारने के लिए उन्होंने स्वेच्छा से इस भूतल पर अवतार लिया है। उनका बल अप्रमेय है। वे मायावी है और अपनी माया द्वारा जगत को मोहित करते हैं। उन्होंने महा विष्णु अथवा सदा विष्णु का यप धारण करके त्रिमूर्तिमय आसन पर वैष्णवों द्वारा नित्य पूजा प्राप्त की है। वे शिव के प्रिय, शिव में ही आसक्त तथा शिव के चरणों की अर्चना में तत्पर हैं। वे शिव की आज्ञा शिराधार्य करके मुझे नित्य मंगल प्रदान करें।

वासुदेवोऽनिरुद्धश्च प्रद्युम्नश्च ततः परः।
संकर्षणः समाख्याताश्चतस्त्रो मूर्तयो हरेः।।133।।
मत्स्यः कूर्मो वराहश्च नारसिंहोऽथ वामनः।
रामत्रयं तथा कृष्णो विष्णुस्तुरगवक्त्रकः।।134।।
चक्रं नारायणस्यास्त्रं पांचजन्यं च शार्ंगकम्।
सत्कृत्य शिवयोराज्ञां मंगलं प्रदिशन्तु मे।।135।।

वासुदेव, अनिरुद्ध, प्रद्युम्न तथा संकर्षण ये हरि की चार विख्यात

मूर्तियां (व्यूह) हैं। मत्स्य, कूर्म, वराह, नृसिंह, वामन, परसुराम, राम, बलराम, श्रीकृष्ण, विष्णु, हयग्रीव, चक्र, नारायणास्त्र, पांचजन्य तथा शार्ंगधनुष ये सब सब शिवा और शिव की आज्ञा का सत्कार करते हुए मुझे मंगल प्रदान करें।

प्रभा सरस्वती गोरी लक्ष्मीश्च शिवभाविता।
शिवयोः शासनादेता मंगलं प्रदिशन्तु मे।।136।।

प्रभा, सरस्वती, गौरी तथा शिव के प्रति भक्ति भाव रखने वाली लक्ष्मी ये शिव और शिवा के आदेश से मेरा मंगल करें।

इन्द्रोऽग्निर्यमश्चैव निर्ऋतिर्वरुणस्तथा।
वायुः सोमः कुबेरश्च तथेशानस्त्रिशूलधृक्।।137।।
सर्वे शिवार्चनरताः शिवसद्भावभाविताः।
सत्कृत्य शिवयोराज्ञां मंगलं प्रदिशन्तु मे।।138।।

इन्द्र, अग्नि, यम, निर्ऋति, वरुण, वायु, सोम, कुबेर तथा त्रिशूलधारी ईशान–ये सबके सब शिव सदभाव से भावित होकर शिर्वाचन में तत्पर रहते हैं ये शिव और शिवा की आज्ञा का आदर मानकर मुझे मंगल प्रदान करें।

त्रिशूलमयं वज्रं च तथा परशुसायकौ।
खड्गपाशांकुशाश्चैव पिनाकश्चायुधोत्तमः।।139।।
दिव्यायुधानि देवस्य देव्याश्चैतानि नित्यशः।
सत्कृत्य शिवयोराज्ञां रक्षां कुर्वन्तु मे सदा।।140।।

त्रिशूल, वज्र, परशु, बाण, खड्ग, पाश, अंकुश और श्रेष्ठ आयुध पिनाक ये महादेव तथा महादेवी के दिव्य आयुध शिव और शिवा की आज्ञा का नित्य सत्कार करते हुए सदा मेरी रक्षा करें।

वृषरूपधरौ देवः सौरभेयो महाबलः।
वडवाख्यानलस्पर्द्धी पंचगोमातृभिर्वृतः।।141।।
वाहनत्वमनुप्राप्तस्तपसा परमेशयोः।
तयोराज्ञां पुरस्कृत्य य मे कामं प्रयच्छतु।।142।।

वृषभ रूपधारी देव जो सुरभि के महाबलली पुत्र हैं। बड़वानल से भी होड़ लगाते हैं पांच गोमाताओं से घिरे रहते हैं और अपनी तपस्या के प्रभाव से परमेश्वर शिव तथा परमेश्वरी शिवा के वाहन हुए हैं उन दानों की आज्ञा शिराधार्य करके मेरी इच्छा पूर्ण करें।

नन्दा सुनन्दा सुरभिः सुशीला समनास्तथा।
पंच गोमातरस्त्वेताः शिवलोके व्यवस्थिताः।।143।।
शिव भक्ति परा नित्यं शिवार्चन परायणाः।
शिवयोः शासनादेव दिशन्तु मम वांछितम्।।144।।

नन्दा, सुनन्दा, सुरभि, सुशीला और सुमना—ये पांच गोमाताएं सदा शिव लोक में निवास करती हैं। ये सब की सब नित्य शिर्वाचन में लगी रहती और शिव भक्ति परायणा है। अतः शिव और शिवा के आदेश सेही मेरी इच्छा पूर्ति करें।

क्षेत्रपालो महातेजा नीलजीमूतसंनिभः।
दंष्ट्राकरालवदनः स्फुरद्रक्ताधरोज्ज्वलः।।145।।
रक्तोर्ध्वमूर्द्धजः श्रीमान् भ्रुकुटीकुटिलेक्षणः।
रक्तवृत्तत्रिनयनः शशिपन्नगभूषणः।।146।।
नग्नस्त्रिशूलपाशासिकपालोद्यतपाणिकः।
भैरवो भैरवैः सिद्धैर्योगिनीभिश्च संवृतः।।147।।
क्षेत्रे क्षेत्रे समासीनः स्थितो यो रक्षकः सताम्।
शिवप्रणामपरमः शिवसद्भावभावितः।।148।।
शिवाश्रितान् विशेषेण रक्षन् पुत्रानिवौरसान्।
सत्कृत्य शिवयोराज्ञां स मे दिशन्तु मंगलम्।।149।।

क्षेत्रपाल महान तेजस्वी है उनकी अंग कान्ति नील मेघ के समान है और मुख दाढ़ों के कारण विकराल जान पड़ता है उनके लाल ओंठ फड़कते रहते हैं जिससे उनकी शोभा बढ़ जाती है उनके सिरके बाल भी लाल और ऊपर को उठे हुए हैं। वे तेजस्वी हैं, उनकी भौहे तथा आंखे भी टेढ़ी ही हैं। वे लाल और गोलाकार तीन नेत्र धारण करते हैं। चन्द्रमा और सर्प उनके आभूषण हैं। वे सदा नंगे ही रहते हैं तथा उनके हाथों में त्रिशूल, पाश खड्ग, और कपाल उठे रहते है। वे भैरवों सिद्धों तथा योगिनियों से घिरे रहते हैं प्रत्येक क्षेत्र में एनकी स्थिति है। वे वहां सत्पुरुषों के रक्षक होकर रहते हैं। उनका मस्तक सदा शिव के चरणों में झुका रहता है, वे सदा शिव के सदभाव से ीाावित हैं तथा शिव के शरणागत भक्तों की औरस पुत्रों की भांति विशेष रक्षा करते हैं। ऐसे प्रभावशाली क्षेत्रपाल शिव और आज्ञा का सत्कार करते हुए मुझे मंगल प्रदान करें।

तालजंघादयस्तस्य प्रथमावरणेऽर्चिताः।
सत्कृत्य शिवयोराज्ञां चत्वारः समवन्तु माम्।।150।।

तालजंघ आदि शिव के प्रथम आवरण में पूजित हुए हैं। वे चारों देवता शिव की आज्ञा का आदर करके मेरी रक्षा करें।

भैरवाद्याश्च ये चान्ये समन्तात्तस्य वेष्टिताः।
तेऽपि मामनुगृहणन्तु शिवशासनगौरवात्।।151।।

जो भैरव आदि तथा दूसरे लोग शिव को सब ओर घेरकर स्थित हैं,वे भी शिव के आदेश का गौरव मानकर मुझ पर अनुग्रह करें।

नारदाद्याश्च मुनयो दिव्या देवैश्च पूजिताः।
साध्या नागाश्च ये देवा जनलोकनिवासिनः।।152।।
विनिर्वृत्ताधिकाराश्च महर्लोकनिवासिनः।
सप्तर्षयस्तथान्ये वै वैमानिकगणैः सह।।153।।
सर्वे शिवार्चनरताः शिवांशावशवर्तिनः।
शिवयोराज्ञया मह्यं दिशन्तु समकांक्षितम्।।154।।

नारद आदि देव पूजित दिव्य मुनि, साध्य, नाग जन लोक निवासी, देवता, विशेषाधिकार से सम्पन्न महर्लोक निवासी, सप्तर्षि तथा अन्य वैमानिकगण सदा शिव की अर्चना में तत्पर रहते हैं। ये सब शिव की आज्ञा के अधीन है अतः शिवा और शिव की आज्ञा से मुझे मनोवांछित वस्तु प्रदान करें।

गन्धर्वाद्याः पिशाचान्ताश्चतस्रो देवयोनयः।
सिद्धा विद्याधराद्याश्च येऽपि चान्ये नमश्चराः।।155।।
असुराराक्षसाश्चैव पातालतलवासिनः।
अनन्ताद्याश्च नागेन्द्रा वैनतेयादयो द्विजाः।।156।।
कूष्माण्डाः प्रेतवेताला ग्रहा भूतगणाः परे।
डाकिन्यश्चापि योगिन्यः शाकिन्यश्चापि तादृशाः।।157।।
क्षेत्रारामगृहादीनि तीर्थान्यायतनानि च।
द्वीपाः समुद्रा नद्यश्च नदाश्चान्ये सरांसि च।।158।।
गिरयश्च सुमेर्वाद्याः काननानि समन्ततः।
पशवः पक्षिणो वृक्षाः कृमिकीटादयो मृगाः।।159।।
भुवनान्यपि सर्वाणि भुवनानामधीश्वराः।
अण्डान्यावरणैः सार्द्धं मासाश्च दश दिग्गजाः।।160।।
वर्णाः पदानि मन्त्राश्च तत्त्वान्यपि सहाधिपैः।
ब्रह्माण्डधारका रुद्रा रुद्राश्चान्ये सशक्तिकाः।।161।।
यच्च किंचिज्जगत्यस्मिन्दृष्टं चानुमितं श्रुतम्।
सर्वे कामं प्रयच्छन्तु शिवयोरेव शासनात्।।162।।

गन्धर्वों से लेकर पिशाच पर्यन्त जो चार देव योनियां हैं जो सिद्ध विद्याधर अन्य आकाशचारी, असुर, राक्षस, पाताल तलवासी, अनंत आदि नागराज गरुड़ आदि दिव्य पक्षी, कूष्माण्ड, प्रेत, बेताल, ग्रह, भूतगण, डाकिनियां, योगिनियां, शाकिनियां तथा वैसी ही और स्त्रियां, क्षेत्र आराम (बगीचे) गृह आदि तीर्थ, देव मन्दिर, द्वीप, समुद्र, नदियां, नद सरोवर, सुमेरु आदि पर्वत, सब ओर फैले हुए बन, पशु, पक्षी, वृक्ष, कृमि, कीट आदि मृग, समस्त भुवन, भुवनेश्वर, आवरणों सहित ब्रह्माण्ड, बारह मास, दस दिग्गज,

वर्ण, पद, मंत्र, तत्व, उनके अधिपति, ब्रह्माण्डधारक रुद्र, अन्य रुद्र औरउनकी शक्तियां तथा इस जगत में जो कुछ भी देखा, सुना और अनुमान किया हुआ है। ये सबके सब शिवा ओर शिव की आज्ञा से मेरा मनोरथ पूर्ण करें।

अथ विद्या परा शैवी पशुपाशविमोचिनी।
पंचार्थसंहिता दिव्या पशुविद्याबहिष्कृता।।163।।
शास्त्रं च शिव धर्माख्यं धर्माख्यं च तदुत्तरम्।
शैवाख्यं शिवधर्माख्यं पुराणं श्रुतिसम्मितम।।164।।
शैवागमाश्च ये चान्ये कामिकाद्याश्चतुर्विधाः।
शिवभ्यामविशेषेण उत्कृत्येह समर्चिताः।।165।।
ताभ्यामेव समाज्ञाता ममाभिप्रेतसिद्धये।
कर्मेदमनुमन्यन्तां सफलं साध्वनुष्ठितम्।।166।।

जो पंच पुरुषार्थ स्वरूपा होने से पंचार्थ कही गई है जिसका स्वरूप दिव्य है तथा जो पशु विद्या की कोटि से बाहर है वह पशुओं को पाश से मुक्त करने वाली शैवी पराविद्या, शिव धर्म शास्त्र, शैवधर्म, श्रुतिसम्मत, शिवसंज्ञकपुराण, शैवागम तथा धर्म कामादि चतुर्विध पुरुषार्थ जिन्हें शिव और शिवा के ामान ही मानकर उन्हीं के समान पूजा दी गई है, उन्हीं दोनों की आज्ञा लेकर मेरे अभीष्ट ाि‌द्धि के लिए इस कर्म का अनुमोदन करें इसे सफल और सुसम्पन्न घोषित करें।

श्वेताद्या नकुलीशान्ताः सशिष्याश्चापि देशिकाः।
तत्संततीया गुरवो विशेषाद् गुरवो मम।।167।।
शैवा माहेश्वराश्चैव ज्ञानकर्मपरायणाः।
कर्मेदमनुमन्यन्तां सफलं साध्वनुष्ठितम्।।168।।

श्वेत से लेकर नकुलीश पर्यन्त शिष्य सहित आचार्यगण उनकी संतान परम्परा में उत्पन्न गुरुजन, विशेषतः मेरे गुरु, शैव माहेश्वर, जो ज्ञान और कर्म में तत्पर रहने वाले हैं मेरे इस कर्म को सफल और सुसम्पन्न मापें जिससे मुझे अभीष्ट फल प्राप्त हो।

लौकिका ब्राह्मणाः सर्वे क्षत्रियाश्चविशःक्रमात्।
वेदवेदांगतत्त्वज्ञाः सर्वशास्त्रविशारदाः।।169।।
सांख्या वैशेषिकाश्चैव यौगा नैयायिका नराः।
सौरा ब्राह्मास्तथा रौद्रा वैष्णवाश्चापरे नराः।।170।।
शिष्टाः सर्वे विशिष्टाश्च शिवशासनयन्त्रिताः।
कर्मेदमनुमन्यन्तां ममाधिप्रेतसाधकम्।।171।।

लौकिक ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, वेद वेदांग के तत्त्वज्ञ विद्वान, सर्वशास्त्र

कुशल, सांख्यवेत्ता, वैशेषिक, योग शास्त्र के आचार्य, नैयायिक, सूर्योपासक, ब्रह्मोपासक, शैव, वैष्णव तथा अन्य सब शिष्ट और विशिष्ट पुरुष शिव की आज्ञा के अधीन हो मेरे इस कर्म को अभीष्ट साधक मानें।

शैवाः सिद्धान्तमार्गस्थाः शैवाः पाशुपतास्तथा।
शैवा महाव्रतधराः शैवाः कापालिकास्तथा।।172।।
शिवाज्ञापालकाः पूज्या ममापि शिवशासनात्।
सर्वे मामनुगृह्णन्तु शंसन्तु सफलक्रियाम्।।173।।

सिद्धान्तमार्गी शैव पाशुपत शैव, महाव्रतधारी शैव तथा अन्य कापालिक शैव—ये सबके सब शिव की आज्ञा के पालक तथा मेरे भी पूज्य हैं। अतः शिव की आज्ञा से इन सबका मुझपर अनुग्रह हो और मेरे वे इस कार्य को विनय को सफल घोषित करें।

दक्षिणज्ञाननिष्ठाश्च दक्षिणोत्तरमार्गगाः।
अविरोधेन वर्तन्तां मन्त्रं श्रेयोऽर्थिनो मम।।174।।

जो दक्षिणाचार के ज्ञान में परिनिष्ठ तथा दक्षिणाचार के उत्कृष्ट मार्ग पर चलने वाले हैं वे परस्पर विरोध न रखते हुए मंत्र का जप करे और मेरे कल्याणकामी हों।

नास्तिकाश्च शठाश्चैव कृतन्घाश्चैव तामसाः।
पाषण्डाश्चातिपापाश्च वर्तन्तां दूरतो मम।।175।।
बहुभिः किं स्तुतैरत्र येऽपि केऽपि चिदास्तिकाः।
सर्वे मामनुगृह्णन्तु सन्तः शंसन्तु मंगलम्।।176।।

नास्तिक, शठ, कृतघ्न, तामस, पाखण्डी और अति पापी मुझसे दूर ही रहें। यहा बहुतों की स्तुति से क्या लाभ! जो कोई भी आस्तिक संत है वे सब मुझ पर अनुग्रह करें और मेरे मंगल होने का आशीर्वाद दें।

नमः शिवाय साम्बाय ससुतायादिहेतवे।
पंचावरणरूपेण प्रपंचेनावृताय ते।।177।।

जो पंचावरण रूपी प्रपंच से घिरे हुए हैं और सबके आदि कारण हैं उन आप पुत्र सहित साम्ब सदाशिव को मेरा नमस्कार है।

इत्युक्त्वा दण्डवद् भूमौ प्रणिपत्य शिवं शिवाम्।
जपेत्पंचाक्षरीं विद्यामष्टोत्तरशतावराम्।।178।।
तथैव शक्तिं विद्यां च जपित्वा तत्समर्पणम्।
कृत्वा तं क्षमयित्वेशं पूजाशेषं समापयेत्।।179।।

ऐसा कहकर शिव आक्र शिवा के उद्देश्य से भूमि पर दण्ड की भांति गिरकर प्रणाम करें और कम से कम एक सौ आठ बार पंचाक्षरी विद्या का जप

करें। इसी प्रकार शक्ति विद्या (ओ३म नमः शिवायै) का जप करके उसका समर्पण करे और महादेव जी से क्षमा मांग कर शेष पूजा की समाप्ति करें।

एतत्पुण्यतमं स्तोत्रं शिवयोर्हृदयंगमम्।
सर्वाभीष्टप्रदं साक्षाद्भक्तिमुक्त्येकसाधनम्।।180।।

यह परम पुण्यमय स्तोत्र शिवा और शिव के दय को अत्यन्त प्रिय है। सम्पूर्ण मनोरथों को देने वाला है और भोग तथा मोक्ष का एकमात्र साक्षात् साधन है।

य इदं कीर्तयेन्नित्यं श्रृणुयाद्वा समाहितः।
स विधूयाशु पापानि शिवसायुज्यमाप्नुयात्।।181।।

जो एकाग्रचित्त हो प्रतिदिन इसका कीर्तन करता है अथवा श्रवण करता है। वह सारे पापों को शीघ्र ही धो बहाकर भगवान शिव का सायुज्य प्राप्त कर लेता है।

गोन्ध्नश्चैव कृतन्ध्नश्च वीरहा भ्रूणहापि वा।
शरणागतघाती च मित्रविश्रम्भघातकः।।182।।
दुष्टपापसमाचारो मातृहा पितृहापि वा।
स्तवेनानेन जप्तेन तत्तत्पापात् प्रमुच्यते।।183।।

जो गो हत्यारा, कृतघ्न, वीरघाती, गर्भस्थ शिशु की हत्या करने वाला, शरणागत का वध करनेवाला और मित्र के प्रति विश्वासघाती है। जो दुराचार अज्ञान पापाचार में लगा रहता है तथा माता और पिता का भी घातक दुःखद है वह भी इस स्तोत्र के जप से तत्काल पाप मुक्त हो जाता है।

दुःस्वप्नादिमहानर्थसूचकेषु भयेषु च।
यदि संकीर्तयेदेतन्न ततोऽनर्थभाग्भवेत्।।184।।

दुःस्वप्न आदि महान अनर्थ सूचक भयों के उपस्थित होने पर यदि मनुष्य इस स्तोत्र का पाठ करे तो वह कदापि अनर्थ का भागी नहीं हो सकता है।

आयुरारोग्यमैश्वर्यं यच्चान्यदपि वांछितम्।
स्तोत्रस्यास्य जपे तिष्ठंस्तत्सर्वं लीयते नरः।।185।।

आयु, आरोग्य, ऐश्वर्य तथा और जो भी मनोवांछित वस्तु है उन सब को इस स्तोत्र के जप में संलग्न रहने वाला पुरुष प्राप्त कर लेता है।

असम्पूज्य शिवं स्तोत्रजपात्फलमुदाहृतम्।
सम्पूज्य च जपे तस्य फलं वक्तुं न शक्यते।।186।।

शिव की पूर्वोक्त पूजा न करके केवल स्तोत्र का पाठ करने से जो फल मिलता है उसको यहां बताया गया, परन्तु शिव की पूजा करके इस स्तोत्र

का पाठ करने से जो फल मिलता है उसका वर्णन नहीं किया जा सकता है।

आस्तामियं फलावाप्तिरस्मिन् संकीर्तिते सति।
सार्द्धमाम्बिकया देवः श्रुत्वैव दिवि तिष्ठति।।187।।
तस्मान्नभसि सम्पूज्य देवदेवं सहोभया।
कृतांजलिपुटस्तिष्ठन् स्तोत्रमेतदुदीरयेत्।।188।।

यह फल की प्राप्ति अलग रहे। इस स्तोत्र का पाठ करने पर सुनते ही माता पार्वती सहित महादेवजी आकाश में आकर खड़े हो जाते हैं। अतः जोड़कर खड़ा हो जाय इस स्तोत्र का पाठ करें।

नमः शिवाय सोमाय सगणाय ससूनवे।
प्रधानपुरुषेशाय सर्गस्थित्यन्तहेतवे।।189।।
जय देव महादेव जयेश्वर महेश्वर।
जय सर्वगुणश्रेष्ठ जय सर्वसुराधिप।।190।।
जय प्रकृतिकल्याणि जय प्रकृतिनायिके।
जय प्रकृतिदूरे त्वं जय प्रकृति सुन्दरि।।191।।

प्रभो आप जगत की सृष्टि पालन और संहार हेतु तथा प्रकृति और पुरुष के ईश्वर है उन प्रमथगण पुत्रद्वय तथा उमा सहित भगवान शिव को नमस्कार है। हे शिव शिवा! आप के स्वरूप का सम्यक ज्ञान देवता आदि के लिए भी असंभव है। हे महादेव आपकी जय हो सर्वगुण श्रेष्ठ शिव आपकी जय हो। सम्पूर्ण देवताओं के स्वामी आपकी जय हो। प्रकृति रूपिणी कल्याणमयी उमे! आपकी जय हो। प्रकृति की नायिके! आप की जय हो। प्रकृति से दूर रहने वाली प्रकृति सुन्दरी आपकी जय हो। सफल मनोरथ वाले देव आपकी जय हो।

यह शिव शिवा स्तुति पाठ शिव पुराण का संक्षिप्त रूप और शिव शिवा कथा का मूल तत्व है। केवल इसी का पाठ करके शिवाशिव को प्रसन्न किया जा सकता है क्योंकि इस स्तवन में शिव परिवार सहित समस्त देवों की वन्दना सम्मिलित है। यह एक अद्भुत प्रभावशाली स्तवन है।

तत्सत् ! तत्सत् ! !
तत्सत् ! !